यूनियन सृजन

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष 10, अंक - 2, मुंबई, अप्रैल-जून, 2025

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि- 14.08.2025

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष 10, अंक - 2, मुंबई, अप्रैल-जून, 2025

संरक्षक

नितेश रंजन
कार्यपालक निदेशक

एस. रामसुब्रमणियन
कार्यपालक निदेशक

संजय रुद्र
कार्यपालक निदेशक

मुख्य संपादक

सुरेश चन्द्र तेली
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं)

संपादकीय सलाहकार

गिरीश चंद्र जोशी
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

जी. एन. दास
महाप्रबंधक

कार्यकारी संपादक

विवेकानंद
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)

संपादक

गायत्री रवि किरण
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)

संपादकीय सहयोग

मोहित सिंह ठाकुर
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

जागृति उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

अवलोकन

प्रिय यूनियनाइट्स,

यूनियन सृजन के इस अंक के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। हमारे प्रथम मुख्यालय भवन का उद्घाटन महात्मा गांधी जी के करकमलों से 21 जुलाई 1921 को हुआ था । इस ऐतिहासिक तिथि के उपलक्ष्य में हम प्रत्येक वर्ष मानव संसाधन सप्ताह मनाते हैं। यह तिथि हमारे गौरवशाली इतिहास की याद दिलाती है और हमें प्रेरित करती है कि हम अपनी कार्यसंस्कृति, मूल्यों और प्रतिबद्धताओं को नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाएँ।

हम सभी के लिए यह हर्ष का विषय है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान भाषाई क्षेत्र 'ख' में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यनिष्पादन हेतु वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हमारे बैंक को 'प्रथम' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

साथ ही, वित्तीय वर्ष 2025–26 की प्रथम तिमाही में हमारे बैंक ने उल्लेखनीय कार्यनिष्पादन करते हुए कुल व्यवसाय में 12% की वृद्धि दर्ज की है। यह उपलब्धि हमारे कारोबारी लक्ष्यों की पूर्ति का प्रमाण है। साथ ही, यह हमारी सामूहिक निष्ठा, टीम भावना और प्रतिबद्धता का भी परिणाम है। बैंक द्वारा ईज़ 7.0 के अंतर्गत लगातार दूसरे वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त करना हमारे लिए गर्व का विषय है। यह सम्मान हमें ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण, गुणवत्ता-युक्त सेवाओं और नवाचार को अपनाने की क्षमता के आधार पर प्राप्त हुआ है।

हमारे बैंक का यह दृढ़ विश्वास है कि "ग्राहक ही हमारे कार्य का केंद्र बिंदु हैं"। ग्राहकों की बदलती अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए, हमें अपनी सेवाओं, प्रक्रियाओं और कार्यसंस्कृति को उन्नत करते रहना होगा। "राष्ट्र के विकास में योगदान के साथ ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता" को प्राथमिकता देना ही हमारी पहचान है। यह दिशा हमें न केवल प्रतिस्पर्धा में आगे रखेगी, बल्कि हमारे ब्रांड की विश्वसनीयता और स्थायित्व को भी सुदृढ़ करेगी।

बदलते आर्थिक परिदृश्य और तकनीकी प्रगति के इस दौर में यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक यूनियनाइट स्वयं को लगातार नई क्षमताओं से सक्षम बनाते रहें। वर्तमान कौशलों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, हमें समय-समय पर नई सूचना और अद्यतन तकनीक की जानकारी प्राप्त करना भी ज़रूरी है। बैंक द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे लर्निंग प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग मॉड्यूल्स और बाह्य प्रमाणन पाठ्यक्रम हमारे स्टाफ सदस्यों को व्यापक ज्ञानार्जन बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। यह न केवल व्यक्तिगत दक्षता को बढ़ाता है बल्कि ग्राहकों की अपेक्षाओं को बेहतर ढंग से पूरा करने में भी सहायक होता है। आज जब डिजिटल बैंकिंग, साइबर सुरक्षा, डेटा विश्लेषण और ग्राहक-केंद्रित सेवाओं का महत्व लगातार बढ़ रहा है, तो यह अनिवार्य हो जाता है कि हम सभी इन क्षेत्रों में अपनी समझ और दक्षता को सुदृढ़ करें। साथ ही, सॉफ्ट स्किल्स जैसे कि संचार, नेतृत्व और समस्या-समाधान क्षमता भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि यही हमें टीम भावना और ग्राहक सेवा की उत्कृष्टता की ओर ले जाती हैं। स्वयं के विकास के प्रति यह सतत प्रयास न केवल कर्मचारियों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करेगा, और संगठन की समग्र सफलता को भी सुनिश्चित करेगा। यूनियनाइट्स के ज्ञानार्जन और आत्म-विकास की यह यात्रा ही हमारे बैंक की सबसे बड़ी पूँजी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यूनियनाइट्स अपनी प्रतिबद्धता, निष्ठा और सेवा-उत्कृष्टता के बल पर बैंक को आने वाले समय में नई ऊँचाइयों पर पहुँचाएँगे। हम सभी का सामूहिक प्रयास बैंक की सफलता सुनिश्चित करेगा और राष्ट्र के विकास में भी हमारे योगदान को सशक्त बनाएगा। एच.आर. सप्ताह के सफल आयोजन हेतु मैं आप सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि सभी यूनियनाइट्स पूरे उत्साह और उमंग के साथ बैंक के हितों को आगे बढ़ाने हेतु कार्य करेंगे।

शुभकामनाओं सहित

(नितेश रंजन)
कार्यपालक निदेशक

अवलोकन

प्रिय यूनियनाइट्स,

यूनियन सृजन के इस अंक के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक हमारे बैंक के प्रत्येक सदस्य के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी और भविष्य की दिशा तय करने वाला साबित होगा। यूनियन सृजन को विविध लेखों और विचारों से समृद्ध बनाने हेतु मैं लेखकों और संपादकीय टीम की सराहना करता हूँ।

बैंकिंग क्षेत्र निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। पिछले वर्षों में बैंक ने अनेक क्षेत्रों में संतुलित प्रगति दर्ज की है। विशेष रूप से एमएसएमई क्षेत्र जो भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। छोटे और मध्यम उद्योग रोजगार सृजन, नवाचार और स्थानीय विकास में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। बैंक के विभिन्न उत्पादों और ऋण योजनाओं ने अनेक उद्यमियों को आगे बढ़ने का अवसर दिया है। शाखा स्तर पर ग्राहकों से स्थापित संवाद और समयानुकूल समाधान ने इस क्षेत्र को नए आयाम प्रदान किए हैं, जिससे उद्यमियों के कारोबार में वृद्धि आई है और बैंक का खुदरा आधार भी मजबूत हुआ है। इस क्षेत्र की सतत वृद्धि बैंक के स्थाई राजस्व और व्यापक ग्राहक आधार के लिए आधारशिला है।

कॉरपोरेट कारोबार में बड़े उद्योग हों या मिड कॉरपोरेट संस्थाएँ, हमारे बैंक की कारोबार वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। बड़े कॉरपोरेट से हमें स्थिर आय प्राप्त होती है और मिड कॉरपोरेट से विकासशील ग्राहक वर्ग का भरोसा जुड़ता है। इससे हमारा पोर्टफोलियो संतुलित और विविधतापूर्ण बना है। विभिन्न व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप सेवाओं का विकास और जोखिम प्रबंधन की सतर्क दृष्टि ने इस क्षेत्र को मजबूती प्रदान की है। यह आवश्यक है कि हम आगे भी ऐसे ही गंभीर और पेशेवर दृष्टिकोण बनाए रखें।

एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग जो आज के युग की सबसे तेजी से बढ़ती आवश्यकता है। वैश्विक कारोबार, एनआरआई सेवाएँ, विदेशी निवेश और निर्यात-आयात वित्तपोषण जैसे क्षेत्र हमें अपार संभावनाएँ प्रदान करते हैं। बैंक के पास एक मजबूत अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क और विशेषज्ञता है जिसमें एनआरआई ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करना, विदेशी व्यापार से जुड़े उद्यमियों को त्वरित समाधान देना और वैश्विक स्तर पर पारदर्शी एवं सुरक्षित बैंकिंग सुनिश्चित करना हम सबकी जिम्मेदारी है। अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग में सफलता हमारे बैंक की वैश्विक पहचान और दीर्घकालिक वृद्धि दोनों को सुनिश्चित करती है।

बैंक सदैव कारोबारी विकास और स्टाफ की कौशलवृद्धि पर केंद्रित रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम, तकनीकी अद्यतन और नई कार्य प्रणालियाँ इसी दिशा में उठाए गए कदम हैं। इन अवसरों का लाभ उठाते हुए स्टाफ ने स्वयं को अद्यतन रखा है और ग्राहकों को समयानुकूल सेवाएँ प्रदान की हैं। यह निरंतरता भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में हमारी सहायता करेगी।

आने वाले वर्षों में प्रतिस्पर्धा और अवसर दोनों ही बढ़ेंगे। हमें विश्वास है कि आप सभी अपने अनुभव और समर्पण से बैंक को और अधिक सफल बनाएंगे। अब तक की उपलब्धियाँ इस बात का आश्वासन देती हैं कि हम भविष्य में भी अपनी भूमिका पूरी गंभीरता और तत्परता से निभाएँगे।

आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सर्वोत्तम क्षमता से कार्यनिष्पादन करेंगे, ग्राहकों का विश्वास जीतेंगे और यूनियन बैंक को अधिक सशक्त, प्रतिस्पर्धी और वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित संस्था बनाएँगे।

शुभकामनाओं सहित,

एस राम

(एस. रामसुब्रमणियन)
कार्यपालक निदेशक

अवलोकन

प्रिय यूनियनाइट्स,

बैंक की हिंदी गृह पत्रिका यूनियन सृजन के जून- 2025 अंक के माध्यम से आपको संबोधित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। गृह-पत्रिकाएँ किसी भी संस्था की गतिविधियों/रचनात्मकता आदि को दर्शाने का एक सशक्त माध्यम है, इनके माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपने विचार या भाव सभी के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं और हमारे बैंक की गृह पत्रिकाएँ भी ऐसा ही मंच प्रदान करती हैं।

अप्रैल-जून तिमाही बैंकिंग क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक तिमाही होती है। वर्ष के इस प्रथम तिमाही में यूनियन बैंक का कार्यक्षेत्र ऊर्जा, नवाचार और सामाजिक ज़िम्मेदारी की त्रिसूत्र में आगे बढ़ा है। तिमाही की शुरुआत में ही शाखाओं और कॉर्पोरेट कार्यालयों ने कारोबारी लक्ष्य हासिल करने के लिए सभी कर्मचारियों का स्थानांतरण एवं पुनर्नियोजन कार्य सम्पन्न किया तथा इस अवधि में बैंक ने तकनीकी उन्नयन, डिजिटल लेन-देन और विदेशी कारोबार पर खास बल दिया।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने देशभर की शाखाओं में सभी वर्गों के ग्राहकों के लिए अपने उत्पाद एवं सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार किया है। बैंक ने जमा, निवेश, आयात-निर्यात और विप्रेषण कारोबार के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। जोखिम प्रबंधन को मजबूत करने के संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा वर्ष 2025-26 के लिए निर्धारित विवेकपूर्ण जोखिम सीमाओं के नियम बैंक द्वारा लागू किए गए हैं तथा भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा मई 2024 में विनियामक अनुमोदन कार्यप्रवाह का पूर्ण डिजिटलीकरण करने के लिए और सेवा वितरण में दक्षता, पारदर्शिता और समयबद्धता का पालन करने के उद्देश्य से शुरू किए गए "प्रवाह पोर्टल" के प्रयोग को बैंक द्वारा अनिवार्य किया गया है। डिजिटल बैंकिंग और ग्राहक-केंद्रित सेवा की गुणवत्ता में वृद्धि करते हुए, यूनियन बैंक ने नवाचार के माध्यम से ग्राहकों की सुरक्षा और सुविधा को शीर्ष पर रखा है। इस तिमाही में विशेष आउटरीच कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य खुदरा, एमएसएमई, स्टार्टअप तथा ग्रामीण आदि उद्यमों को संबल देना, उनसे जुड़ाव स्थापित करना, वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना और बैंक के उत्पादों व सेवाओं की जानकारी ग्राहकों तथा उद्यमियों तक पहुंचाना है।

वित्त मंत्रालय के दिशा निर्देशानुसार यूनियन बैंक ऑफ इंडिया तथा इंडियन बैंक एसोसिएशन (आईबीए) द्वारा समर्थित पीएसबी हैकेथॉन सीरिज ने बैंकिंग नवाचार को नई दिशा दी है, जिससे साइबर सुरक्षा को मजबूती मिली है तथा फिनटेक, जेनरेटिव एआई और ऑटोमेशन जैसे आधुनिक क्षेत्रों को आपस में जोड़ा गया है। इस अवधि में बैंक ने ग्रामीण भागों की आधारभूत कृषि अवसंरचना को सशक्त बनाने के लिए कई नई ऋण योजनाएं और छोटे उद्योगों को सहयोगी उपाय उपलब्ध कराए। मॉनसून की तैयारियों में किसान को मजबूत करने हेतु 'मॉडर्न एग्री-इन्फ्रा' की नीति भी अपनाई गई।

बैंक में प्रत्येक क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि हम दैनिक काम में सहज और सरल हिंदी के प्रयोग हेतु प्रयास करें। वार्षिक कार्य योजना में विभिन्न मदों के लिए निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप कार्य करने हेतु आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए। हमारा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा है। मुझे आशा है कि आगे भी यह स्थिति बनी रहेगी ।

'यूनियन सृजन' का यह अंक तमाम विषयों पर लिखे प्रेरक और ज्ञानवर्धक लेखों का एक संकलन है, जिसमें बैंक की राजभाषा से संबन्धित गतिविधियों, स्टाफ सदस्य की उपलब्धियों, संसदीय समिति के निरीक्षण आदि को समेटा गया है। यह पत्रिका अपने नए अंक में बैंक में राजभाषा क्षेत्र की सक्रिय ऊर्जा का प्रतिबिंब प्रस्तुत कर रही है ।

मैं 'यूनियन सृजन' की टीम और सभी योगदानकर्ताओं के सामूहिक प्रयासों का अभिनंदन करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

संजय रुद्र

(संजय रुद्र)
कार्यपालक निदेशक

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

हम 'यूनियन सृजन' के इस नवीन अंक के साथ एक बार पुनः आपके समक्ष उपस्थित हैं। वर्तमान में तकनीकी नवाचार, वैश्वीकरण और भाषाओं के संगम से एक नया युग आकार ले रहा है। इस अंक में हमने विविध आयामों को समाहित करते हुए, ज्ञान, संवेदना, साहित्य, तकनीक और बैंकिंग से जुड़ी रचनाओं का समावेश किया है, जो पाठकों को समसामयिक संदर्भों में विचारमंथन करने का अवसर देंगे।

हम अपने पाठकों को सहर्ष सूचित करते हैं कि 'ख' क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया है। साथ ही बैंक के विभिन्न कार्यालयों / शाखाओं को अपने नराकास से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में प्राप्त पुरस्कार राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में अवश्य ही सकारात्मक और उत्साहवर्धक हैं। साथ ही बैंक के विभिन्न कार्यालयों द्वारा हिंदी कार्यशालाओं का संचालन किया गया है और कहीं-कहीं कार्यालयों / शाखाओं का राजभाषाई निरीक्षण भी किया गया है। 'यूनियन सृजन' के इस अंक में राजभाषा पुरस्कारों / गतिविधियों को समुचित स्थान दिया गया है।

राजभाषा सृजन खंड के इस अंक में 'वार्षिक कार्यक्रम', 'राजभाषा हिंदी: भारतवर्ष की जरूरत' तथा 'भूमंडलीय बाजार में भाषा की भूमिका' जैसे लेख इस बात को दर्शाते हैं कि हिंदी न केवल हमारी प्रशासनिक भाषा है, अपितु एक ऐसी शक्ति भी है जो राष्ट्र की पहचान और समरसता को सशक्त करती है। कार्यान्वयन सृजन खंड के अंतर्गत 'सहायक सेवाएं विभाग की शब्दावली' भाषा की व्यावहारिक उपयोगिता को सहज रूप में प्रस्तुत करता है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में 'भारतीय भाषाएँ और वैश्वीकरण: बैंकिंग और वित्तीय जगत के लिए नई दिशा' तथा 'एआई युग में कार्यबल रूपांतरण' जैसे लेख यह दर्शाते हैं कि किस प्रकार प्रौद्योगिकी के साथ भाषा और मानव संसाधन के संबंधों में परिवर्तन आ रहा है। 'बैंकिंग में एजेंटिक एआई की भूमिका' जैसे लेख डिजिटल बैंकिंग की बदलती तस्वीर को प्रस्तुत करते हैं।

पत्रिका के इस अंक में साहित्यिक रचनाओं का विशेष समावेश है। 'आशा', 'प्रेरणा के स्वर: एलबीओ के संग', 'यह भारत की पहचान', 'काश! तुम होती माँ!', 'मेरा गाँव' और 'बिखरे मोती' जैसी कविताएँ भावनाओं को स्पर्श करते हुए, पाठकों को प्रेरणा, आत्मचिंतन और संवेदनशीलता के मार्ग पर अग्रसर करती हैं। वर्तमान समय की सामाजिक चुनौतियों को दर्शाते हुए 'बैंक खाता किराए पर देना' एवं 'मोबाइल की लत' जैसे लेख पाठकों को जागरूकता की दिशा में सोचने हेतु प्रेरित करते हैं। वहीं 'डिजिटल युग का हिंदी साहित्य पर प्रभाव' यह रेखांकित करता है कि किस प्रकार तकनीक और साहित्य एक-दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं। यात्रा-वृत्तांत, 'मेरी न्यूज़ीलैंड यात्रा' न केवल एक पर्यटक अनुभव है, बल्कि संस्कृति, प्रकृति और विचारों की यात्रा भी है। 'मूडु वेलु' में मानवीय भावनाओं का मर्मस्पर्शी उद्गार है। 'मानसून के लिए स्वास्थ्य सलाह', 'खुश रहने के लिए पढ़ें किताबें', 'कार्य-जीवन संतुलन' जैसे लेख पाठकों के समग्र विकास और मानसिक स्वास्थ्य पर केंद्रित हैं। 'कहानी – कृतज्ञ या शिकायतकर्ता' एवं 'वीर सुरेंद्र साई' जैसे रचनात्मक लेख ऐतिहासिक, भावनात्मक और प्रेरणादायी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं।

'यूनियन सृजन' गृह पत्रिका यूनियनाइट्स, के विचार, रचनात्मकता और अभिव्यक्ति का मंच है। हम अपने लेखकों, कवियों, सहयोगियों और पाठकों को आभार प्रकट करते हैं, जिनके योगदान से यह अंक साकार हो सका है। आपका यह निरंतर सहयोग, न केवल 'यूनियन सृजन' को समृद्ध बनाता है, अपितु संगठनात्मक संस्कृति को भी एकजुट करता है।

हम संपादकीय मंडल, सलाहकारों एवं मार्गदर्शकों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिनके सहयोग से यह अंक अपने सम्यक रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत हो पाया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आपको पसंद आएगा ।

आपके विचार, सुझाव और सहभागिता की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीया

गायत्री रवि किरण

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक

Union Bank of India
Good people to bank with

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि- 14.08.2025

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष 10, अंक - 2, मुंबई, अप्रैल-जून, 2025

अनुक्रमणिका

वार्षिक कार्यक्रम	विवेकानंद	1
राजभाषा हिंदी : भारतवर्ष की जरूरत	अरविंद कुमार सुसरला	3
सहायक सेवाएं विभाग की शब्दावली	मनाली वधारिया	5
भारतीय भाषाएँ और वैश्वीकरण: बैंकिंग और वित्तीय जगत के लिए नई दिशा	पवन कुमार	7
भूमंडलीय बाजार में भाषा की भूमिका	रजनी शर्मा	9
कविता - आशा	विवेक एस कुमार	10
बैंकिंग में एजेंटिक एआई की भूमिका	मनु	11
कविता - प्रेरणा के स्वर- एलबीओ के संग	विनोद कुमार	13
बैंक खाता किराए पर	रंजीत कुमार रंजन	14
एआई युग में कार्यबल रूपांतरण	अनीश श्रीमाली	16
स्माइल पे	अमित प्रकाश	19
डिजिटल युग का हिंदी साहित्य पर प्रभाव	रमेश कुमार	21
अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा आयोजना सह समीक्षा बैठक - 2025		23
जेनरेशन ज़ी और बैंक	बिपिन कुमार भगत	25
कविता – काश! तुम होती माँ!	श्वेता चौधरी	26
मूडु वेलु	प्रत्युश राज	27
कविता – बहुत दिन हो गए	धनंजय कुमार	28
कार्य-जीवन संतुलन	तेज पाल सिंह	29
कविता – राही	जगदेश्वर	30
मानसून के लिए स्वास्थ्य सलाह	नरेंद्र कुमार	31
खुश रहने के लिए पढ़ें किताबें	नीरज कुमार सिमैया	32
कृतज्ञ या शिकायतकर्ता	वैभव शर्मा	33
कविता - मेरा गाँव	सौरव कुमार	33
मोबाईल की लत	नारायण सिंह	34
कविता - बिखरे मोती	क्षितिज रिछारिया	34
वीर सुरेंद्र साई	मलय कुमार प्रधान	35
कविता - वो फिर नहीं आते	सुकेश कुमार	36
समुद्र से समृद्धि तक	देवेंद्र गिरी	37
मानव संवेदनाओं का शब्द शिल्पी- आर. के नारायण	निमेष दीवान	38
मेरी न्यूज़ीलैंड यात्रा	चारु शर्मा	41
राजभाषा पुरस्कार/ समाचार		44
तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला		50
आपकी नज़र में		51

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित
ई-मेल: union.srijan@unionbankofindia.bank | gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank
Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496
Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at Printrade Issues (INDIA) Pvt. Ltd., Plot No. EL-179, TTC Industrial Area, Electronic Zone, Mahape, Dist. Thane - 400 710, Maharashtra and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai-400 021.
यूनियन सृजन में प्रकाशित विचार लेखक के अपने हैं। प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वार्षिक कार्यक्रम

"कौन कहता है आसमां में सुराख़ नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।"

हिंदी के प्रगामी प्रयोग को लेकर भारतवर्ष में सन् 1949 से लेकर वर्तमान तक कई सकारात्मक और छोटे-बड़े प्रयास किए गए हैं। इनमें हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना, संविधान में भाषा संबंधी उपबंध और प्रावधान, राजभाषा आयोग का गठन, संसदीय राजभाषा समिति का गठन, राष्ट्रपति द्वारा जारी आदेश, राजभाषा अधिनियम व नियम बनाना, हिंदी दिवस एवं विश्व हिंदी दिवस का आयोजन, नराकास का गठन आदि कई महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। अष्टम अनुसूची में भाषाओं को शामिल किया जाना भी यहाँ उल्लेखनीय है।

इन्हीं में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है दिनांक 18 जनवरी, 1968 को दोनों संसद के सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प, जो इस प्रकार है —

"यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए गए उपायों एवं की गई प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी और सभी राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।"

इस राजभाषा संकल्प ने भारत सरकार के मंत्रालयों, कार्यालयों, विभागों, बैंकों आदि में चरणबद्ध तरीके से हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने की एक मजबूत नींव रखी। इसने केंद्र सरकार के कार्यालयों, विभागों, मंत्रालयों एवं विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन को नई दिशा देने का काम किया। इससे संगठनों में कामकाज के तौर-तरीके और रिपोर्टिंग पद्धति में समय-समय पर कई बदलाव हुए और हिंदी के प्रयोग को गति मिली। कालांतर में संगठनों द्वारा राजभाषा के संबंध में प्रकोष्ठ आदि की स्थापना की जाने लगी। साथ ही हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं के लिए आज के तकनीकी युग में कदमताल मिलाने का आधार भी तैयार किया गया है। भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसरण में यूनियन बैंक द्वारा प्रतिवर्ष बैंक की राजभाषा वार्षिक कार्य योजना जारी की जाती है।

राजभाषा संकल्प और भारत सरकार द्वारा संघ के राजकीय कार्य हिंदी में किए जाने हेतु प्रतिवर्ष जारी किए जाने वाला वार्षिक कार्यक्रम न केवल आधारशिला है बल्कि संगठनों में कार्यान्वयन की प्रत्येक मद के संबंध में एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। आइए देखें कि यह किस प्रकार राजभाषा अधिनियम, नियम, विभिन्न आदेशों और सांविधिक प्रावधानों के साथ-साथ संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों पर जारी आदेशों के अनुपालन में दिशा-निर्देशों को व्यापक रूप में समाहित करता है।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षणों पर की गई सिफारिशों के आधार पर खंडवार जारी राष्ट्रपति के आदेशों से कई महत्वपूर्ण मदों को भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम में प्रमुखता से स्थान दिया जाता है। इनमें प्रमुख हैं —

हिंदी माध्यम में प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षण सामग्री तैयार कराना, संगठनों में अनुवाद व्यवस्था - संहिता, मैनुअल, आवेदन फॉर्म, प्रक्रियागत साहित्य आदि के संबंध में द्विभाषीकरण का पालन, पुस्तकालय हेतु हिंदी पुस्तकों की खरीद, यांत्रिक सुविधाएं – जैसे कि टाइपराइटर और कंप्यूटर तथा लैपटॉप, शाखाओं और कार्यालयों का राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में निरीक्षण, राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन एवं इसकी बैठकों का आयोजन, हिंदी सलाहकार समितियों एवं नराकास तथा राभाकास की बैठकों का समय पर आयोजन आदि।

इनके साथ-साथ भाषाई क्षेत्रवार आधार पर भारतवर्ष के अलग-अलग राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों में हिंदी/द्विभाषिक में कामकाज जैसे कि मूल पत्राचार, नोटिस, डिक्टेशन, टिप्पण लेखन आदि के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने के लिए क्षेत्रवार लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

वार्षिक कार्ययोजना की मदों को हम कार्यालयीन कामकाज या सरोकार की मदों और जनसामान्य के साथ व्यवहार आदि के रूप में विभक्त कर सकते हैं। कार्यालय/संगठन के भीतर राजभाषा नियम एवं अधिनियम का पालन, स्टाफ सदस्यों के हिंदी ज्ञान से संबंधित रोस्टर तैयार करना, पात्र कार्यालयों, शाखाओं में राजभाषा नियम 8(4) के तहत व्यक्तिशः आदेश जारी किया जाना, संगठन के भीतर अनुवाद की व्यवस्था, आंतरिक कामकाज की मदें, यांत्रिक सुविधाएं, पत्राचार, टिप्पण लेखन, नोटिंग, लेखन सामग्री की मदों में हिंदी का प्रयोग, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन, पुस्तकालय हेतु हिंदी पुस्तकों की खरीद, हिंदी से संबंधित विभिन्न रिपोर्टों आदि का प्रेषण, उपयुक्त जाँच बिंदु तैयार करने आदि के संबंध में स्पष्ट उल्लेख है।

स्टाफ सदस्यों के हिंदी भाषा प्रशिक्षण के लक्ष्य और उपलब्ध ऑनलाइन सरकारी सुविधाओं जैसे कि लीला राजभाषा आदि का भी वर्णन भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम में मिलता है।

इसी प्रकार जनसामान्य से संबंधित विषयों जैसे कि संगठन की वेबसाइट में हिंदी भाषा में अद्यतन जानकारी की उपलब्धता, नाम पट्ट, काउंटर बोर्ड, सूचना पट्ट, जनता के प्रयोग में लाए जा रहे आवेदनों आदि में भाषा के प्रयोग के संबंध में भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

भारत सरकार के संगठनों द्वारा आयोजित किए जा रहे भर्ती परीक्षाओं, साक्षात्कार के साथ-साथ विभागीय पदोन्नति परीक्षाओं में भी हिंदी भाषा संबंधी विभिन्न प्रावधानों का स्पष्ट उल्लेख वार्षिक कार्यक्रम में किया गया है।

इसी क्रम में वरिष्ठ अधिकारियों/कार्यपालकों द्वारा अधीनस्थ कार्यालयों, विभागों आदि की समय-समय पर की जाने वाली समीक्षा के दौरान `राजभाषा में कार्यान्वयन की समीक्षा' मद भी शामिल की जाएगी। विभाग/ कार्यालय/शाखा प्रमुख द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यान्वयन का दायित्व निर्वहन करने हेतु निर्देश दिए गए हैं।

कर्मचारियों द्वारा कार्यालयीन सभी मदों में निष्पादन किए जाने हेतु उनका आवधिक प्रशिक्षण आवश्यक है। हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दिशा-निर्देशों के अनुसार हिंदी कार्यशाला न्यूनतम एक कार्यदिवस की होगी और न्यूनतम दो-तिहाई समय कार्यालयों से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्यों के अभ्यास में लगाया जाएगा। कर्मचारियों की संख्या को ध्यान में रखकर हिंदी कार्यशाला का आयोजन प्रत्येक तिमाही में किया जाना चाहिए।

वार्षिक कार्यक्रम की अन्य ध्यान देने योग्य बातें –

- केंद्र सरकार के कार्योलयों द्वारा अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियों का आयोजन हिंदी के माध्यम से करें।
- यह सुनिश्चित किया जाए कि हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतने वाले अधिकारी/कर्मचारी अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी करें।
- यह आवश्यक है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के नौ खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए।
- सरकारी कामकाज में हिंदी को प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना से बढ़ाया जाए। लेकिन इसके साथ ही नियमों और आदेशों के अनुपालन में दृढ़ता बरती जानी चाहिए।
- नगर विशेष में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के प्रशासनिक प्रमुखों द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में व्यक्तिगत तौर पर सहभागिता करना अपेक्षित है।
- भारत सरकार के विभिन्न अनुवाद ई-टूल जैसे कि कंठस्थ आदि एवं हिंदी शब्द सिंधु बृहत् शब्दकोश का प्रयोग कार्यालयों द्वारा बढ़ाया जाए।
- राजभाषा नियम के तहत बैंकों की अधिसूचित शाखाओं में किए जाने वाले विभिन्न कार्यों का भी स्पष्ट उल्लेख भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम में मिलता है।
- इसमें राजभाषा के संबंध में किए जा रहे अन्य कार्यों तथा लेखन कार्यों आदि को प्रोत्साहन एवं सम्मान प्रदान करने हेतु भारत सरकार द्वारा प्रदान किए जा रहे 'राजभाषा कीर्ति' एवं 'राजभाषा गौरव' पुरस्कार योजना की जानकारी दी गई है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु जारी वार्षिक कार्यक्रम में विशेष उल्लेख –

• लक्ष्यों में बढ़ोत्तरी –

मद (बढ़ोत्तरी)	"क"	"ख"	"ग"
हिंदी में मूल पत्राचार (5%)	ग क्षेत्र को 70%	ग क्षेत्र को 60%	सभी क्षेत्रों हेतु 60%
हिंदी में नोटिंग (5%)	80%	55%	35%
हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण (5%)	75%	65%	35%
हिंदी में डिक्टेशन (5%)	70%	60%	35%
विनिर्दिष्ट अनुभाग की संख्या (5%)	45%	35%	25%
जहाँ अनुभाग नहीं है (5%)	45%	30%	20%

विभिन्न संगठनों द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। इसके संबंध में वार्षिक कार्यक्रम में संक्षिप्त निर्देश दिए गए हैं -

"केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय की सामान्य गतिविधियों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई-वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म "ई-पत्रिका पुस्तकालय" पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तरीके से प्राप्त हो सकें।"

• भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना –

इस अनुभाग की स्थापना का प्रयोजन एक ऐसा तंत्र विकसित करना है जिससे केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच पत्राचार राज्य की प्रथम आधिकारिक भाषा में भी हो सके। इसमें संविधान की आठवीं अनुसूची की 15 भारतीय भाषाओं में अनुवाद की सार्वभौमिक व्यवस्था विकसित किए जाने का प्रस्ताव किया गया है।

• केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक में प्रधानमंत्री महोदय द्वारा निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं —

"सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना, देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना, दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना, हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।"

भारत सरकार द्वारा विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम भी प्रतिवर्ष जारी किया जाता है। भारत सरकार द्वारा संघ के राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्देशों और लक्ष्यों का पालन कर हिंदी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित किया जा सकता है।

सम्पूर्ण वार्षिक कार्यक्रम भारत सरकार की वेबसाइट rajbhasha.gov.in से प्राप्त किए जा सकते हैं।

विवेकानंद
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग,
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

राजभाषा हिंदी : भारतवर्ष की जरूरत

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चन्द्र के इस दोहे का अर्थ है अपनी भाषा से ही उन्नति सम्भव है, क्योंकि सारी उन्नतियों का मूल आधार यही है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना दिल की पीड़ाओं का निवारण सम्भव नहीं है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा और अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से भले ही ले लें, मगर उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिए। यह दोहा राजभाषा हिंदी पर भी लागू होता है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए विशेष तौर पर राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी के प्रयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया के विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही हैं। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के प्रौद्योगिकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिंदी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।

आज के समय में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सभी देशवासियों के पास राजभाषा हिंदी में कार्य करने, लिखने, पढ़ने और समझने की क्षमता हो । राजभाषा के विकास से ही देश का विकास और उन्नयन हो सकेगा। आप कल्पना करिए कि अगर एक स्थान पर 5 लोग बैठे हों जो कि विभिन्न प्रदेशों से आते हों और उनकी भाषा भी भिन्न-भिन्न हो तो उनको आपस में संवाद करने में अत्यंत कठिनाई आएगी। न तो कोई अपनी बात समझा पाएगा और न ही कोई किसी की

बात समझ पाएगा ऐसी विकट परिस्थिति में भारत जैसे बहुभाषी देश में एक ऐसी भाषा का होना अत्यंत आवश्यक है जो कि सरल हो, सुगम हो, समझने में आसान हो एवं जनमानस की भाषा हो। इन सभी कसौटियों पर हिंदी खरी उतरती है । ऐसी स्थिति में राजभाषा हिंदी को महत्व देना अत्यंत आवश्यक है। इससे भाषा का विकास होगा एवं देशवासियों में एक होने की क्षमता का विकास होगा। राष्ट्र की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है । आज के वर्तमान मीडिया युग में हिंदी चैनलों की अधिकता इस बात का परिचायक है कि सभी लोग हिंदी भाषा में समाचार देखना- सुनना चाहते हैं आप देखेंगे टीआरपी के मामले में भी हिंदी चैनल हमेशा नंबर 1 की श्रेणी में होते हैं । यह भी जानना आवश्यक है कि चा भारतीय रेल हो या भारतीय वायुसेना हो चाहे वह भारतीय डाक विभाग हो, इन सभी जगहों पर हिंदी से एक जुड़ाव होने से लोग आपस में जुड़ पाते हैं ।

हिंदी के होने से देश को एक सूत्र में पिरोने का जो पुनीत कार्य है वह हो सकेगा । हिंदी को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग प्रत्येक वर्ष विभिन्न प्रतियोगिताएं कराता है लोगों के अंदर जागरूकता उत्पन्न करता है लोगों को मजबूत करता है जिससे कि लोग और इसके विषय में सोच सकें। मेरे विचार से हिंदी को बढ़ावा देने का कार्य समय -समय पर होना चाहिए जिससे कि भारत के सभी नागरिकों के अंदर एक उत्साह का संचार हो। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारतवासियों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिए। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

।। जय हिंद - जय हिंदी ।।

अरविंद कुमार सुसरला
अं. का., भोपाल

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया को डीएफएस से 'प्रथम' पुरस्कार

दिनांक 13.06.2025 को देहरादून में वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित संगोष्ठी / समीक्षा बैठक के दौरान यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया को वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु भाषाई क्षेत्र 'ख' में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यनिष्पादन हेतु 'प्रथम' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की द्विभाषीक गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' के स्वर्ण जयंती अंक का विमोचन किया गया। श्री धीरज भास्कर, उप सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के कर-कमलों से यह पुरस्कार और विमोचन किया गया। साथ है श्री गिरीश चंद्र जोशी, महाप्रबंधक (मासं एवं राभा) ने यह पुरस्कार प्राप्त किया। इस अवसर पर सुश्री अर्चना शुक्ला, अंचल प्रमुख, मेरठ, श्री मनोहर सिंह, क्षेत्र प्रमुख, देहरादून तथा श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (राभा) उपस्थित रहे ।

सहायक सेवाएं विभाग की शब्दावली

कार्यालय के सुचारु संचालन के लिए मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था सहायक सेवाएं विभाग द्वारा की जाती है। संपत्ति की खरीद से लेकर उसके रखरखाव का कार्य चाहे वह बैंक की संपत्ति हो या पट्टे पर ली हुई संपत्ति हो, बैंक के मौजूदा परिसर का रखरखाव हो या नए परिसर का निर्माण, बिल्डिंग को वास्तुकारों द्वारा डिज़ाइन करना हो या कर्मचारियों के बैठने की व्यवस्था, सभी व्यवस्था सहायक सेवाएं विभाग द्वारा की जाती है। विभाग में मुद्रण एवं स्टेशनरी, बीमा, व्यय, अनुरक्षण, वास्तुकार, विद्युत, भुगतान, संपत्ति, क्वार्टर आवंटन, परिसर, वाईफाई, वाहन अनुरक्षण, आदि जैसे 11 प्रभाग हैं। व्यय प्रभाग द्वारा वार्षिक बजट तैयार किया जाता है। विद्युत प्रभाग द्वारा बिल्डिंग में बिजली की व्यवस्था सुनिश्चित की जाती है। कैंटीन सेवाएं एवं सुरक्षा भी सहायक सेवाएं विभाग के अंतर्गत आते हैं। विभाग के दैनिक काम-काज में प्रयुक्त शब्दावली का हिंदी पर्याय यहां प्रस्तुत है:-

दैनिक कार्य में प्रयोग हेतु शब्दावली

Acquisition	अधिग्रहण
Addendum	परिशिष्ट
Additional	अतिरिक्त
Agenda	कार्यसूची
Allotted	आवंटित
Appointment	नियुक्ति
Approximate Built Up Area	अनुमानित निर्मित क्षेत्र
Architecture	वास्तुकला
Assets	आस्तियां
Auction	नीलामी
Unavoidable	अपरिहार्य
Avoidable Expenses	परिहार्य व्यय
Barrier Free	निर्बाध
Carbon Dioxide Emission	कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन
Centralized Vendor Payment Module	केंद्रीकृत विक्रेता भुगतान मॉड्यूल
Certified Copy	प्रमाणित प्रति
Claims	दावे
Collective Action	सामूहिक प्रयास
Commercial Properties	वाणिज्यिक संपत्तियाँ
Compounded Rate	चक्रवृद्धि दर

Confirm	पुष्टि
Consolidated	समेकित
Contractor	ठेकेदार
Corporate Business Center	कॉर्पोरेट कारोबार केंद्र
Corrigendum	शुद्धिपत्र
Cost Control	लागत नियंत्रण
Delegate	प्रत्यायोजित
Depreciation	मूल्यह्रास
Dimension	आयाम
Discontinue	बंद करना
Discrepancy	विसंगति
Disposal	निपटान
Earnest Money Deposit	बयाना जमा राशि
Efficiency	प्रभावशीलता
Electrical	विद्युत
Eligibility Norms	पात्रता मानदंड
Eligible	पात्र / योग्य
Empanelment	सूचीबद्ध
Erratic Power	अनियमित बिजली
Execution	निष्पादन
Facelift	नवीनीकरण / नया रूप देना
Feasibility	संभाव्यता / साध्यता
Fuel Consumption	ईंधन की खपत

Gardening	बागवानी
Green Building	हरित भवन
Green Certified Premises	हरित प्रमाणित परिसर
Indemnity	क्षतिपूर्ति
Innovative	नवोन्मेषी
Inspection	परीक्षण
Installation	स्थापना
Insurer	बीमाकर्ता
Internal Surface Area	आंतरिक सतह क्षेत्र
Landlord	भू-स्वामी
Lease	पट्टा
Lease deed	पट्टा विलेख
Maintenance	अनुरक्षण
Mementos	स्मृतिचिह्न
Miscellaneous	विविध
Modifications	आशोधन
Non IT Capital Budget	गैर आईटी पूंजीगत बजट
Original Equipment Manufacturer	मूल उपकरण निर्माता
Payment	भुगतान
Persons With Disabilities	दिव्यांगजन
Physical Verification	भौतिक सत्यापन
Planned	नियोजित
Plantation Drive	पौधारोपण अभियान
Processed	प्रसंस्कृत / संसाधित
Procurement	प्रापण
Profitability	लाभप्रदता
Project	परियोजना
Public Procurement	सार्वजनिक खरीद
Public Relations	जनसंपर्क
Rate Contract	दर संविदा
Ratification	अनुसमर्थन
Receipt	पावती

Records	अभिलेख
Release Order	जारी आदेश
Renovation	नवीनीकरण
Rent	किराया
Request for Proposal	प्रस्ताव हेतु अनुरोध
Residential Quarter	आवासीय क्वार्टर
Revenue Expenditure	राजस्व व्यय
Reverse Auction	प्रतिवर्ती नीलामी
Sealed	मोहरबंद
Security Equipment	सुरक्षा उपकरण
Security Risk Assessment	सुरक्षा जोखिम मूल्यांकन
Seizure	ज़ब्ती
Site Survey	साइट सर्वेक्षण
Sitting Arrangement	बैठने की व्यवस्था
Solar Panel	सोलर पैनल
Specialist	विशेषज्ञ
Specified Period	निर्दिष्ट अवधि
Standard Operating Procedure	मानक संचालन प्रक्रिया
Standardization	मानकीकरण
Statutory	वैधानिक
Structural Repair	संरचनात्मक सुधार
Tender Notice	निविदा सूचना
Two Bid System	दो बोली प्रणाली
Vendor	विक्रेता
Working Capital	कार्यशील पूंजी
Write Off	बट्टे खाते में डालना
Waiting List	प्रतीक्षा सूची

मनाली वधारिया
सहायक सेवाएँ विभाग
कें.का., मुंबई

भारतीय भाषाएँ और वैश्वीकरण: बैंकिंग और वित्तीय जगत के लिए नई दिशा

वैश्वीकरण के दौर में जहाँ अंग्रेज़ी आम भाषा बनकर उभरी, वहीं भारत जैसी बहुभाषी अर्थव्यवस्था में स्थानीय भाषाओं का महत्व बढ़ रहा है। डिजिटल क्रांति ने करोड़ों नए उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन जोड़ा है, जिनमें से अधिकांश की मातृभाषा अंग्रेज़ी नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में हिंदी भाषी लगभग 52.1 करोड़ हैं और अन्य भारतीय भाषाओं के बोलने वाले लगभग 50 करोड़, जबकि अंग्रेज़ी बोलने वालों की संख्या केवल 12.5 करोड़ है। स्पष्ट है कि यदि बैंकिंग, फिनटेक और ई-कॉमर्स सेवाएँ ग्राहकों की भाषा में उपलब्ध हों, तो उनका दायरा कई गुणा बढ़ सकता है। भारतीय वित्तीय जगत अब अपनी वित्तीय सेवाओं को क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराकर अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुँचने की रणनीति अपना रहा है, जिससे न केवल उपयोगकर्ता आधार बढ़ रहा है बल्कि ग्राहकों का भरोसा भी मज़बूत हो रहा है। भारतीय भाषाएँ देश के बैंकिंग, फिनटेक और ई-कॉमर्स क्षेत्रों को नए आयाम दे रही हैं, और सरकार की नीतियाँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

फिनटेक क्रांति में भारतीय भाषाओं की भूमिका

भारत की फिनटेक क्रांति – विशेषकर डिजिटल पेमेंट और मोबाइल बैंकिंग – ने दुनियाभर में अपनी पहचान बनाई है। अग्रणी डिजिटल भुगतान ऐप पेटीएम ने अपनी ऐप को बहुभाषी बनाकर करोड़ों नए उपभोक्ताओं को जोड़ा है। पेटीएम ने 2019 तक अपने एंड्रॉयड ऐप में 11 भाषाओं का समर्थन जोड़ लिया था, जिसमें हिंदी, गुजराती, तेलुगु, मराठी, बंगाली, तमिल, कन्नड़ जैसी सभी प्रमुख भारतीय भाषाएँ शामिल हैं। कंपनी के अनुसार लगभग 35% उपयोगकर्ता ऐप को अपनी क्षेत्रीय भाषा में प्रयोग करना पसंद करते हैं, और अंदाज़ा है कि भारत में लगभग 20.5 करोड़ नए लोग अपनी पसंदीदा भाषा में सेवाएँ मिलने पर इंटरनेट से जुड़ सकते हैं। पेटीएम के वरिष्ठ उपाध्यक्ष दीपक अब्बोट ने कहा था कि उन्होंने केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि सही प्रसंग के साथ भाषांतर किया, जिससे उपयोगकर्ताओं का अनुभव बेहतर हुआ।

भारतीय फिनटेक उद्योग में भाषाई समावेशन की आवश्यकता को सरकार भी पहचान रही है। ग्लोबल फिनटेक फेस्ट 2023 में घोषित इस सहयोग में आवाज़ आधारित तकनीक को माध्यम बनाकर बहुभाषी वित्तीय सेवाएँ प्रदान करने की बात कही गई। डिजिटल इंडिया भाषिनी के सीईओ अमिताभ नाग के अनुसार, वॉयस इंटरफ़ेस के माध्यम से भाषिनी प्लेटफ़ॉर्म वित्तीय समावेशन, आर्थिक सशक्तिकरण और वित्तीय साक्षरता बढ़ाने में मदद करेगा, क्योंकि भाषा अनुवाद और ध्वनि पहचान जैसी क्षमताएँ वित्तीय सेवाओं को हर भाषा-भाषी तक पहुँचाने में सहायक होंगी। स्वयं आरबीआईएच के सीईओ ने भी जोर देकर कहा कि ग्राहकों को मातृभाषा में सेवा मिलने से डिजिटल समाधानों में उनका विश्वास बढ़ता है। यही नहीं, नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) ने आवाज़ के जरिए भुगतान सुविधा "हैलो यूपीआई" भी शुरू की है, जो फिलहाल हिंदी और अंग्रेज़ी में उपलब्ध है और भविष्य में अन्य भारतीय भाषाओं में भी आने की योजना है। ये सभी प्रयास मिलकर फिनटेक को एक ऐसी नई दिशा दे रहे हैं जिसमें प्रौद्योगिकी के साथ भाषा का तालमेल है, ताकि कोई भी ग्राहक भाषा के कारण वित्तीय सेवाओं से वंचित न रह जाए।

बैंकिंग क्षेत्र में भाषाई समावेशन

परंपरागत बैंकिंग क्षेत्र भी अब इस नई दिशा की ओर अग्रसर हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने बहुभाषी सेवाओं में पहल करते हुए यह सुनिश्चित किया है कि ग्राहकों को उनकी भाषा में सुविधाएँ मिलें। कोर बैंकिंग प्लेटफ़ॉर्म पर आज खाता विवरण, पासबुक प्रिंट और लेनदेन एसएमएस अलर्ट हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं।

बैंक के मोबाईल ऐप और अन्य डिजिटल सेवाएँ भी कई क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। निजी क्षेत्र के बैंक भी इस दिशा में पीछे नहीं हैं। इस प्रकार बैंकिंग क्षेत्र में भाषा-अनुकूलन सिर्फ ग्राहक सुविधा के लिए नहीं, बल्कि व्यावसायिक रणनीति का भी अभिन्न अंग बनता जा रहा है।

ई-कॉमर्स में बहुभाषी रणनीति

भारत में ई-कॉमर्स का विस्तार भी स्थानीय भाषाओं की मजबूती के बिना संभव नहीं था। देश के करोड़ों नए इंटरनेट उपयोगकर्ता, जो मुख्यतः टियर-2 और टियर-3 शहरों से आते हैं, अपनी भाषा में ऑनलाइन खरीददारी करना चाहते हैं। बड़े ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म अब इस सच्चाई को पहचानकर बहुभाषी इंटरफ़ेस उपलब्ध करा रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, घरेलू ई-कॉमर्स अग्रणी फ़्लिपकार्ट ने अपने ऐप और वेबसाइट पर हिंदी इंटरफ़ेस 2019 में आरंभ किया और इसका लक्ष्य अगले 20 करोड़ नए ऑनलाइन ग्राहकों को आकर्षित करना था। इसके तुरंत बाद फ्लिपकार्ट ने 2020 में तमिल, तेलुगु और कन्नड़ भाषाओं का सपोर्ट भी जोड़ दिया। कंपनी ने बड़े पैमाने पर अनुवाद और लिप्यंतरण करके उत्पाद विवरण, बैनर और भुगतान पृष्ठों को इन भाषाओं में उपलब्ध कराया; कुल मिलाकर 54 लाख से अधिक शब्दों को स्थानीय भाषाओं में परिवर्तित किया गया। परिणामस्वरूप, जिन ग्राहकों ने हिंदी इंटरफ़ेस चुना, उनमें से 95% ग्राहक लगातार हिंदी में ही खरीदारी करते रहे, जो इसकी प्रभावशीलता का प्रमाण है। फ्लिपकार्ट के सीईओ कल्याण कृष्णमूर्ति ने कहा भी कि यदि भाषा संबंधी समस्या का सही समाधान किया जाए तो यह करोड़ों नए उपभोक्ताओं तक पहुँचने का अवसर है, न कि बाधा। ये आंकड़े दिखाते हैं कि भाषाई विकल्प देने से ई-कॉमर्स कंपनियाँ भारत के गैर-अंग्रेज़ी भाषी बाजारों में गहरी पैठ बनाने में सफल हो रही हैं।

अमेज़न जैसे वैश्विक प्रतिस्पर्धी भी भारत में स्थानीय भाषाओं के महत्व को नज़रअंदाज़ नहीं कर पाए हैं। अमेज़न इंडिया ने 2018 में हिंदी भाषा समर्थन जोड़कर शुरुआत की, और बाद में अन्य भारतीय भाषाओं पर भी काम किया। सरकारी पहल ओपन नेटवर्क फ़ॉर डिजिटल कॉमर्स (ओएनडीसी) के माध्यम से भी ई-कॉमर्स में छोटे विक्रेताओं को जोड़ने पर ज़ोर दिया जा रहा है, जिसका एक उद्देश्य समावेशिता बढ़ाना है। समावेशी ई-कॉमर्स का अर्थ है कि क्षेत्रीय भाषा, भौगोलिक बाधा या तकनीकी ज्ञान की कमी किसी भी उद्यमी या ग्राहक को डिजिटल बाज़ार से दूर न रख सके। स्थानीय भाषाओं में ग्राहक सेवा, उत्पाद रिव्यू, ऐप नेविगेशन आदि की सुविधा देकर ई-कॉमर्स कंपनियाँ न सिर्फ बिक्री बढ़ा रही हैं बल्कि उपभोक्ताओं को ऑनलाइन खरीददारी का सहज और विश्वासपूर्ण अनुभव भी प्रदान कर रही हैं।

सरकारी नीतियाँ और पहल

भारत सरकार और नियामक संस्थानों ने बहुभाषी डिजिटल पारिस्थितिकी को प्रोत्साहित करने के लिए कई कदम उठाए हैं। डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (भाषिनी) ऐसी ही एक पहल है, जिसका लक्ष्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिये इंटरनेट को भारतीय भाषाओं में सुलभ बनाना है। इसके अलावा, भारतीय रिज़र्व बैंक समय-समय पर बैंकों को निर्देश देता रहा है कि वे अपनी सेवाएँ और संचार देश की राजभाषा हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराएँ, जिससे ग्राहकों को जानकारी उनकी भाषा में मिले। सार्वजनिक बैंक राजभाषा विभागों के माध्यम से यह सुनिश्चित करते हैं कि सरकारी योजनाओं, प्रोडक्ट जानकारी और फॉर्म आदि हिंदी व संबंधित राज्य की भाषा में उपलब्ध हों।

सरकार की एक अहम नीति वित्तीय समावेशन है – जैसे जन धन योजना के तहत करोड़ों नए खाते खोलना – लेकिन समावेशन केवल खाते खोलने तक सीमित नहीं है। वित्तीय साक्षरता और सेवाओं का वास्तविक उपयोग तभी संभव है जब जानकारी और सेवा भाषा की दीवार को पार कर जाए। इसीलिए नियामकों ने बैंकों को लेनदेन संदेश से लेकर शिकायत निवारण तक हर स्तर पर बहुभाषी बनाने को प्रेरित किया है। कुल मिलाकर, सरकारी नीतियाँ प्रौद्योगिकी के भारतीयकरण पर बल दे रही हैं, जहाँ अंतिम उपभोक्ता को डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाषा के कारण कोई परेशानी न हो।

भारतीय भाषाएँ और वैश्वीकरण एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक बनकर उभर रहे हैं। वैश्वीकरण ने जहाँ तकनीकी प्रगति और नए बाज़ार खोले, वहीं भारत ने यह सिद्ध किया है कि स्थानीय संवेदनशीलता बनाए रखना उतना ही महत्वपूर्ण है। बैंकिंग और वित्तीय जगत में भारतीय भाषाओं के बढ़ते प्रयोग ने एक नई दिशा निर्धारित की है, जिसमें प्रौद्योगिकी का लाभ अंतिम छोर तक पहुंचाने के लिए भाषा को सेतु बनाया गया है । चाहे फ़िनटेक स्टार्टअप हों या दशकों पुराने बैंक, सभी यह समझ रहे हैं कि ग्राहक को उसकी भाषा में समझना और संवाद करना ही भविष्य की कुंजी है। इससे न केवल कंपनियों को नए ग्राहक मिल रहे हैं बल्कि देश की बहुसंख्यक आबादी आर्थिक प्रवाह में सक्रिय भागीदारी कर पा रही है। सरकारी नीतियों का सक्रिय समर्थन इस बदलाव को और गति दे रहा है – जिससे एक ऐसा वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र आकार ले रहा है जो बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक भारत की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करता है। कुल मिलाकर, भारतीय भाषाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन के साथ डिजिटल वैश्वीकरण का यह भारतीय मॉडल दुनिया के सामने समावेशी विकास का एक आदर्श प्रस्तुत कर रहा है।

पवन कुमार
एन.आर.आई. शाखा
क्षे. का., एर्णाकुलम

भूमंडलीय बाजार में भाषा की भूमिका

भूमंडलीकरण (ग्लोबलाइज़ेशन) एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें समूचा विश्व व्यापार, संस्कृति, तकनीक, शिक्षा और संचार के क्षेत्र में परस्पर जुड़ता जा रहा है। इस युग में भौगोलिक सीमाएँ धुंधली होती जा रही हैं और विभिन्न देशों के लोग एवं संस्थाएँ आपस में निरंतर संपर्क में हैं। इस सम्पर्क का माध्यम भाषा है। भाषा एक ऐसा सेतु है जो अलग-अलग समाजों और संस्कृतियों के बीच संवाद को संभव बनाता है। भूमंडलीय बाजार में भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यापारिक रणनीति, सांस्कृतिक समावेशन और सामाजिक समरसता की प्रमुख कुंजी भी है। भूमंडलीकरण के युग में जब संपूर्ण विश्व एक वैश्विक गांव में परिवर्तित हो चुका है, तब भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। व्यापार, तकनीक, शिक्षा, पर्यटन और संस्कृति के आदान-प्रदान में भाषा न केवल एक माध्यम है, बल्कि एक सेतु की तरह कार्य करती है जो विभिन्न देशों, संस्कृतियों और बाजारों को जोड़ती है।

भाषा जहाँ एक व्यक्ति के लिए विचार अभिव्यक्ति का माध्यम है, वहीं वह समाज के लिए संस्कृति के विकास का आधार भी है। भाषा जीवन के हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है, आज हम वैश्विक बाजार में भाषा के महत्व को समझने का प्रयास करेंगे :-

संप्रेषण का प्रमुख माध्यम : अंतरराष्ट्रीय व्यापार में संप्रेषण की स्पष्टता और सटीकता अत्यंत आवश्यक होती है। यदि कंपनियों को अपने उत्पादों, सेवाओं या ब्रांड को वैश्विक स्तर पर पहुंचाना है, तो उन्हें उपभोक्ताओं की भाषा में संवाद करना आना चाहिए। यही कारण है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां विज्ञापन, वेबसाइट और ग्राहक सेवा को स्थानीय भाषाओं में प्रस्तुत करती हैं। आज किसी भी उत्पाद या सेवा को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने के लिए कंपनियों को विभिन्न भाषाओं में संवाद करना होता है। उदाहरण के लिए, एक अमेरिकी कंपनी यदि भारत में व्यापार करना चाहती है, तो उसे हिंदी, तमिल, मराठी जैसी स्थानीय भाषाओं में उत्पाद की जानकारी देनी होगी। भाषा के माध्यम से कंपनी ग्राहकों के साथ विश्वास और अपनापन कायम करती है। यही कारण है कि "स्थानीयकरण" और "अनुवाद" सेवाओं की मांग वैश्विक स्तर पर अत्यधिक बढ़ गई है।

सांस्कृतिक समझ और स्वीकार्यता : हर भाषा अपनी संस्कृति को भी साथ लेकर चलती है। यदि कोई कंपनी किसी विशेष क्षेत्र में अपने उत्पाद को सफल बनाना चाहती है, तो उसे उस क्षेत्र की भाषा और सांस्कृतिक बोध की समझ होनी चाहिए। सही भाषा के प्रयोग से स्थानीय उपभोक्ताओं के साथ भावनात्मक संबंध बनाना सरल हो जाता है, जिससे ब्रांड की स्वीकार्यता बढ़ती है। प्रत्येक भाषा अपने आप में एक संस्कृति को दर्शाती है। जब कोई बहुराष्ट्रीय कंपनी किसी देश में अपने उत्पाद को प्रस्तुत करती है, तो यदि वह उस देश की भाषा और सांस्कृतिक भावनाओं का सम्मान नहीं करती, तो उसे अस्वीकृति का सामना करना पड़ सकता है। जैसे, एक कंपनी यदि भारतीय संस्कृति को ध्यान में रखते हुए हिंदी और स्थानीय भाषाओं में विज्ञापन बनाए, तो वह भावनात्मक जुड़ाव उत्पन्न करती है। भाषा के माध्यम से कंपनियाँ यह संदेश देती हैं कि वे न केवल उत्पाद बेचने आई हैं, बल्कि वे उस समाज का हिस्सा बनने के लिए तैयार हैं।

बहुभाषी कार्यबल की आवश्यकता : आज के वैश्विक बाजार में कंपनियों को ऐसे कर्मचारियों की आवश्यकता है जो एक से अधिक भाषाओं में दक्ष हों। इससे उन्हें विभिन्न देशों में कार्य करने, ग्राहकों से संपर्क बनाए रखने और प्रतिस्पर्धा में बने रहने में मदद मिलती है। भूमंडलीकरण के कारण अब कंपनियों को ऐसे कर्मचारियों की आवश्यकता होती है जो बहुभाषी हों। एक कर्मचारी यदि अंग्रेज़ी के साथ-साथ चीनी, स्पेनिश, या हिंदी भी जानता है, तो वह अंतरराष्ट्रीय संवाद में अधिक प्रभावी होता है। यह न केवल कंपनी की छवि को मजबूत करता है, बल्कि व्यापारिक लेन-देन में गलतफहमियों को भी रोकता है।

डिजिटल युग में भाषा की शक्ति : इंटरनेट और सोशल मीडिया ने व्यापार को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया है। वेबसाइटों, एप्लिकेशनों और ऑनलाइन मार्केटिंग में भाषा एक बड़ी भूमिका निभाती है। उपयोगकर्ता अपनी भाषा में जानकारी को अधिक सहजता से ग्रहण करता है। यही कारण है कि कई अंतरराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी सामग्री को बहुभाषी बना रही हैं। इंटरनेट के प्रसार ने व्यापार को डिजिटल बना दिया है। वेबसाइटें, मोबाइल ऐप्स, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आदि आज व्यापार के मुख्य साधन बन गए हैं। लेकिन हर उपयोगकर्ता अंग्रेज़ी नहीं जानता। ऐसे में विभिन्न भाषाओं में डिजिटल सामग्री की उपलब्धता आवश्यक हो गई है। गूगल, अमेज़न, नेटफ्लिक्स जैसी वैश्विक कंपनियाँ अब क्षेत्रीय भाषाओं में सेवाएँ प्रदान कर रही हैं, जिससे उनका ग्राहक आधार और राजस्व दोनों बढ़े हैं।

भाषा के माध्यम से विपणन (मार्केटिंग) की प्रभावशीलता : विज्ञापन और प्रचार का असर तब ही होता है जब वह उपभोक्ता के मन को छुए। यदि भाषा उसकी अपनी हो, तो विज्ञापन कहीं अधिक प्रभावशाली बन जाता है। भारत में "अच्छे लोग, अच्छा बैंक" या "जहाँ विश्वास हो वही रिलायंस हो" जैसे हिंदी विज्ञापन लोगों के दिलों तक पहुँचते हैं। कई कंपनियाँ स्थानीय कहावतों, लोकगीतों और मुहावरों का उपयोग कर अपने ब्रांड को स्थानीय संस्कृति के साथ जोड़ती हैं।

भाषा और ब्रांड प्रतिष्ठा : अगर कोई कंपनी गलत या अपमानजनक अनुवाद का प्रयोग करती है, तो उसकी ब्रांड प्रतिष्ठा को भारी नुकसान पहुँच सकता है। कई बार भाषा के गलत प्रयोग के कारण ब्रांड को उपहास का पात्र भी बनना पड़ता है। इसलिए अब कंपनियाँ भाषा विशेषज्ञों और भाषायी अनुसंधान टीमों को नियुक्त कर रही हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक देश में ब्रांड की छवि सकारात्मक बनी रहे।

भूमंडलीकरण के युग में भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि व्यापार की दिशा तय करने वाली शक्ति है। जो संस्थाएँ भाषा की शक्ति को समझती हैं और उसका आदर करती हैं, वे न केवल वैश्विक बाजार में अपनी जगह बनाती हैं, बल्कि उपभोक्ताओं के दिलों में भी स्थान पाती हैं। इसलिए, भाषा को बाजार की रणनीति का अभिन्न अंग मानते हुए, हमें इसे वैश्विक विकास का आधार बनाना चाहिए। भूमंडलीकरण के वर्तमान दौर में भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि व्यापारिक सफलता की कुंजी बन चुकी है। जो कंपनियाँ भाषायी विविधता को समझती हैं और उसका सम्मान करती हैं, वे वैश्विक बाजार में अधिक प्रभावी और स्थायी स्थान बना पाती हैं। अतः यह स्पष्ट है कि वैश्विक बाजार में भाषा एक रणनीतिक शक्ति है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

रजनी शर्मा
क्षे. का., इन्दौर

आशा

एक दूरदराज़ द्वीप पर, हवाएँ हमेशा की तरह बहती हैं,
एक अकेला रक्षक खड़ा है, अनंत आकाश के नीचे।
लाइटहाउस ऊँचा, तूफ़ान की जकड़ में,
खोए हुए जहाज़ों को, वह अडिग रूप से दिशा दिखाता है।

वर्षों बीत गए, समुद्र की लय धीमी हो गई,
रक्षक इंतजार करता है, जैसे ठंडी हवाएँ बहती हैं।
उसका एकमात्र साथी, लहरों की आवाज़,
जो वो रहस्यमय बातें फुसफुसाती हैं, जो छिपी रहती हैं।

एक पत्र कभी आया, मीठे वादों के साथ,
नए रक्षक के आने की बात थी।
लेकिन समय जैसे साए की तरह चलता है,
और वह अकेला खड़ा है, अपना कर्तव्य निभाता है।

प्रकाश कभी मंद नहीं होता, रात में भी नहीं,
हालाँकि उसका दिल थका हुआ है, वह लड़ाई में है।
वह दिन गिनता है आकाश में तारे देखकर,
और क्षितिज की ओर देखता है, आँखों में आशा के साथ।

वह जानता है, यद्यपि लंबा है, इंतजार ख़त्म होगा,
और समय के साथ, एक हाथ बढ़ेगा।
तब तक, वह खड़ा रहेगा, दृढ़ और ऊँचा,
प्रकाश का रक्षक, सब कुछ सहते हुए।

भविष्य में विश्वास और समुद्र की कोमल ध्वनि के साथ,
वह हवाओं से कहता है, "मुझे पता है तुम आओगे।"
क्योंकि आशा एक लौ है, जो कभी नहीं मरेगी,
यह अनंत आकाश के नीचे भी जलती रहेगी।

विवेक एस कुमार
चन्नापेट्टा शाखा,
क्षे.का., कोल्लम

बैंकिंग में एजेंटिक एआई की भूमिका

बैंकिंग उद्योग लंबे समय से तकनीकी उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है। वर्तमान में बैंकों पर ग्राहकों के बीच मौजूदा प्रवृत्ति और कानूनों, विनियमों और प्रतिस्पर्धियों के कारण निरंतर विकास और बदलाव करने का बहुत दबाव है। वित्तीय प्रौद्योगिकी के तेजी से विकसित हो रहे परिदृश्य में, बैंकिंग संस्थान बुनियादी स्वचालन से लेकर वास्तव में स्वायत्त संचालन तक एक परिवर्तनकारी बदलाव देख रहे हैं। इसमें एजेंटिक एआई की अवधारणा को एक अभिनव उपकरण तथा प्रभावशाली विकास के रूप में देखा जा सकता है। जिसमें हमारे द्वारा प्रौद्योगिकी के सृजन एवं उससे अंतःक्रिया के तरीके में क्रांति लाने की क्षमता निहित है और जो बैंकों के दृष्टिकोण और कारोबार करने के एक नए तरीके को प्रस्तुत कर सकता है।

संचालन को अनुकूलित करने, समग्र बैंकिंग ग्राहक अनुभव में सुधार करने और प्रतिस्पर्धा को बनाए रखने के लिए एआई एजेंटों का उपयोग सबसे महत्वपूर्ण है। तथापि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बुद्धिमान प्रणाली न केवल स्वायत्त संचालन करती है, बल्कि अधिग्रहित डेटा के आधार पर निर्णय लेने में सहायता भी प्रदान करती है। यह तकनीक समय लेने वाले कार्यों को स्वचालित करने के लिए कुशल समाधान पेश करके बैंकिंग में एआई और स्वचालन के परिदृश्य को नया आयाम दे सकती है।

बैंकिंग में एजेंटिक एआई की आवश्यकता

इंटरनेट के उपयोग और प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, विशेष रूप से मोबाइल के उपयोग में, ऑनलाइन बैंकिंग का वर्चस्व बढ़ा है। विभिन्न उपभोक्ता आज दक्षता और न्यूनतम समय में प्रतिक्रिया देने के साथ-साथ अनुकूलित सेवाओं के रूप में बैंकों से बहुत अधिक उम्मीदें रखते हैं, जो मौजूदा दौर में पारंपरिक सिस्टम संचालित करने में विफल हो सकते हैं।

विकसित एल्गोरिदम और मशीन लर्निंग जैसे साधनों की मदद से, एजेंटिक एआई बैंकों की सूचनाओं को अधिक प्रभावी ढंग और तेज़ी से संसाधित करने की क्षमता में योगदान देता है। यह दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वायत्त संचालन के माध्यम से करके समय बचाता है और पूर्वानुमान प्रदान करता है जिसका उपयोग बैंक, ग्राहकों की जरूरतों और बाजार के रुझान को समझने के लिए कर सकते हैं।

एजेंटिक एआई से बैंकिंग में बदलाव

दक्षता: एजेंट के रूप में एजेंटिक एआई सामान्य प्रक्रियाओं को पूरा करने में लगने वाले समय को काफी कम कर देता है, संचालन के खर्च को कम करता है, और त्रुटि की न्यूनतम संभावनाओं के साथ उच्च गुणवत्ता वाला कार्य प्रदान करता है। डेटा इनपुट, ऋण प्रलेखन और लेन-देन जांच जैसे संचालन को सॉफ्टवेयर द्वारा किया जा सकता है ताकि कर्मचारी केवल अधिक महत्वपूर्ण गतिविधियों में लगे रहें।

डेटा अंतर्दृष्टि: एआई एजेंट रणनीतिक और सामरिक समाधान प्रदान करने के लिए बड़े डेटा का उपयोग करते हैं, जो पूर्व परिणामों और वर्तमान रुझानों का आकलन करके बैंक के संदर्भ में उत्पाद पोर्टफोलियो, मूल्य निर्धारण और जोखिम के संबंध में सही निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यह क्षमता बैंक की संरचित जोखिम निगरानी और प्रबंधन क्षमता को बढ़ाती है ।

निजीकरण: एजेंटिक एआई बैंकों को अपने उत्पादों और सेवाओं को अपने ग्राहकों की जरूरतों और प्राथमिकताओं के अनुरूप बनाने में मदद करता है। ग्राहक के खर्च और वित्तीय जरूरतों के व्यवहार अवलोकन के माध्यम से, बैंक उन उत्पादों का सुझाव दे सकते हैं जो हर ग्राहक की जरूरत को पूरा कर सकते हैं।

अभिगम्यता: एजेंटिक एआई चैटबॉट्स के माध्यम से ग्राहकों की समस्याओं का उचित और कम समय में समाधान किया जा सकता है। ऐसी तत्परता से ग्राहक का बैंकिंग चैनल पर विश्वास बढ़ता है।

बैंकिंग में एजेंटिक एआई के अनुप्रयोग

बैंकिंग में एजेंटिक एआई, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) की मदद से धोखाधड़ी का पता लगाने, क्रेडिट जोखिम मूल्यांकन और निवेश सलाह जैसे कार्यों में मदद कर सकता है। आधुनिक बैंकिंग में एजेंटिक एआई को कुछ निम्नवत क्षेत्रों में अनुप्रयोग कर सकते है :

धोखाधड़ी का पता लगाना और रोकना

बैंकिंग में एजेंटिक एआई तकनीक का एक प्रमुख उपयोग धोखाधड़ी को रोकना है। धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए एजेंटिक एआई का उपयोग, लेनदेन को ट्रैक करने के लिए कर सकते हैं, जिसमें यह तकनीक किसी भी विसंगति या व्यवहार को चिह्नित कर सकता है जो अपेक्षित पैटर्न के अनुरूप नहीं है। इससे बैंक कर्मी संदिग्ध व्यवहार की समीक्षा कर सकते हैं और तय कर सकते हैं कि क्या यह आगे की जांच के लिए उचित है या नहीं।

इसके अलावा, एजेंटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस लगातार मूल डेटा की खोज कर सकता है और नवीनतम धोखाधड़ी योजनाओं को चिह्नित करने के लिए अपने

डिटेक्शन एल्गोरिदम को आवश्यकता अनुसार स्वतः अद्यतित कर सकता है। यह सक्रिय दृष्टिकोण बैंकों को धोखाधड़ी के व्यवहार को होने से पहले ही अनुमान लगाने में मदद करता है।

जोखिम प्रबंधन और क्रेडिट स्कोरिंग में सुधार

बैंक क्रेडिट जोखिम मूल्यांकन को प्रबंधित करने के लिए एजेंटिक एआई टूल का भी उपयोग कर सकते हैं। वित्तीय आपदाओं से बचने और कारोबार को सुचारू रूप से चलाने के लिए जोखिम प्रबंधन आवश्यक हैं। ऐतिहासिक डेटा पर प्रशिक्षित होने पर, एजेंटिक एआई संभावित जोखिमों और वित्तीय जोखिमों का पता लगा सकता है और शुरुआती चेतावनी संकेत प्रदान कर सकता है ताकि बैंकों के नुकसान को कम करने और रोकने (या कम से कम करने) के लिए समय मिल सके।

क्रेडिट स्कोरिंग के लिए भी यही बात लागू होती है। बैंक ऋण के लिए आवेदन करने वाले उधारकर्ताओं का मूल्यांकन परंपरागत क्रेडिट स्कोर तत्वों के माध्यम से ऋण योग्यता निर्धारित करने के लिए करता है। ऋण योग्यता निर्धारित करने के लिए पारंपरिक क्रेडिट स्कोर तत्वों पर निर्भर रहने के बजाय, बैंक कई स्रोतों से बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करने और ऋण आवेदकों की अधिक समग्र वित्तीय तस्वीर बनाने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम और एआई का उपयोग कर सकते हैं।

विपणन प्रयासों को निजीकृत करें

एजेंटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आपके मार्केटिंग प्रयासों को गति देने में मदद कर सकता है। यह तकनीक ग्राहकों की प्राथमिकताओं और ऑनलाइन व्यवहार का विश्लेषण करके, ग्राहकों को उनके संबंध और ज़रूरतों के आधार पर वर्गीकृत कर सकता है, जैसे व्यक्तिगत ग्राहक, कारोबार ग्राहक, और विशिष्ट प्रकार के ग्राहक (जैसे एनआरआई, नाबालिग, आदि)., ताकि हमें अलग-अलग ग्राहक व्यक्तित्व बनाने में मदद मिलती है। इस तरह, हम बाज़ार की स्थितियों और रुझानों के आधार पर अपने मार्केटिंग अभियानों को अलग-अलग समूहों के लिए तैयार कर सकते हैं। आप लक्षित मार्केटिंग सामग्री बनाने, रूपांतरण और ग्राहक संतुष्टि दरों को ट्रैक करने में मदद करने के लिए एजेंटिक एआई समाधानों का भी उपयोग कर सकते हैं।

ग्राहक अनुभव और ग्राहक संतुष्टि को बढ़ावा

एक बैंक के रूप में, आप सिर्फ़ नए ग्राहक ही नहीं पाना चाहते, आप मौजूदा ग्राहकों को बनाए रखना भी चाहते हैं, और एजेंटिक एआई तकनीक आपको ऐसा करने में मदद कर सकती है। ऐसा करने के लिए, हमें ग्राहक सेवा में निरंतर सुधार करना चाहिए और एक बेहतर ग्राहक अनुभव बनाने में निवेश करना चाहिए।

एजेंटिक एआई तकनीक के माध्यम से हम प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) से संचालित, एंटरप्राइज़ चैटबॉट (24/7) का निर्माण कर सकते हैं, जिसके माध्यम से मानव जैसी ग्राहक सहायता प्रदान कर सकते हैं जैसे कि, यह ग्राहक पूछताछ का उत्तर दे सकता है, शेष राशि पर अपडेट प्रदान कर सकता है, स्थानांतरण आरंभ कर सकता है और प्रोफ़ाइल जानकारी अपडेट कर सकता है आदि।

एजेंटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ग्राहकों को क्रेडिट स्कोर और ऋण प्रथाओं के बारे में सवालों के जवाब देकर अन्य वित्तीय कार्यों और साक्षरता विषयों पर भी शिक्षित कर सकता है – वह भी एक प्राकृतिक और मानवीय लहजे में।

ग्राहक डेटा का विश्लेषण करके, यह ग्राहक की खर्च करने की आदतों, वित्तीय लक्ष्यों और जीवनशैली के आधार पर वैयक्तिकृत उत्पाद अनुशंसाएँ जैसे कि क्रेडिट कार्ड या व्यक्तिगत ऋण की अनुशंसा कर सकता हैं। एजेंटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमें इस तरह से क्रॉस-सेल और अप-सेल उत्पादों में भी मदद कर सकता है।

पोर्टफोलियो प्रबंधन

एजेंटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बाज़ार में सामान्य कार्यनिष्पादन और रुझानों का आकलन करके पोर्टफोलियो प्रबंधन में एक भूमिका निभाता है। यह क्षमता बैंकों को ग्राहक की जोखिम लेने की क्षमताओं और उनके वित्तीय उद्देश्यों के संदर्भ में ग्राहकों को अधिक रिटर्न देने के लिए सही निवेश निर्णय लेने में मदद करती है।

स्वचालित ऋण स्वीकृतियां

एजेंटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के माध्यम से तेजी से डेटा का मूल्यांकन करता है और परिणामस्वरूप कम समय में नियम आधारित ऋण के लिए वास्तविक समय में अनुमोदन प्राप्त करता है।

स्वचालित वित्तीय रिपोर्टिंग

एआई एजेंटों द्वारा दैनिक मौद्रिक मूल्यों को इकट्ठा और संसाधित किया जाता है जिससे किसी भी रिपोर्ट को आसानी से निर्माण करने में मदद मिलती है। यह दक्षता वित्त टीमों में कार्यभार को सुचारु करती है और समय पर व सटीक रिपोर्टिंग की सुविधा प्रदान करती है।

उन्नत दस्तावेज़ प्रसंस्करण

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ते उपयोग के कारण एजेंटिक एआई विभिन्न प्रकार के वित्तीय दस्तावेजों के विश्लेषण की प्रक्रियाओं में सुधार करता है। यह क्षमता

प्रक्रियाओं को एकीकृत करती है, त्रुटि दर कम करती है, और लेन-देन के लिए आवश्यक समय को कम करती है।

बैंकिंग में जनरेटिव एआई के उपयोग की चुनौतियाँ, सीमाएँ और जोखिम

बैंकिंग क्षेत्र में एजेंटिक एआई के साथ काम करने की अपनी चुनौतियां और सीमाएं हैं। संवेदनशील ग्राहक डेटा उपभोग के दौरान एजेंटिक एआई का उपयोग सावधानी से किया जाना चाहिए जिससे ग्राहको की जरूरी सूचनाएँ संगठन के बाहर लीक ना हो जाएँ। इसमें हमें सख्त डेटा प्रबंधन और भंडारण अभ्यासों को लागू करने के साथ-साथ, प्रशिक्षण डेटा से संवेदनशील सूचना को हटाने के लिए तकनीक विकसित करना शामिल हो सकता है।

एजेंटिक एआई की एक और सीमा यह है कि, अगर इसे खराब या अपूर्ण डेटा दिया जाता है तो यह गलत परिणाम दे सकता है। इसलिए हमेशा यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि हमारा डेटा सटीक और अद्यतित है, अन्यथा यह खराब वित्तीय निर्णय लेने का कारण बन सकता है।

वैश्विक बैंकिंग उद्योग एक गहन परिवर्तन के लिए तैयार है, जो एजेन्टिक एआई को अपनाने से प्रेरित है - स्वायत्त सॉफ्टवेयर एजेंट जो जटिल कार्यप्रवाह को संभालने, डेटा से सीखने और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने में सक्षम है। जैसे-जैसे एजेंटिक एआई विकसित होता जा रहा है, हम उम्मीद कर सकते हैं कि वित्तीय संस्थान अपने व्यावसायिक कार्यों में स्वायत्त संचालन की ओर तेज़ी से बढ़ेंगे। यह परिवर्तन महत्वपूर्ण लाभ का वादा करता है, जिसमें बढ़ी हुई परिचालन दक्षता, बेहतर जोखिम प्रबंधन, अधिक व्यक्तिगत ग्राहक अनुभव और बाजार में बदलावों पर तेज़ी से प्रतिक्रिया करने की क्षमता शामिल है।

एजेंटिक एआई की मदद से बैंकिंग क्षेत्र, आने वाले भविष्य में, निजीकरण, दक्षता और विश्वास पर केंद्रित होगा, जो आने वाले भविष्य में अधिक पारदर्शी और ग्राहक-केंद्रित बैंकिंग को आकार देगा।

मनु
डीआईटी, पवई

प्रेरणा के स्वर – एलबीओ के संग

यह कविता 31 नवनियुक्त क्षेत्रीय बैंक अधिकारियों के नाम शामिल करते हुए एक प्रेरणादायक संदेश के रूप में लिखी गई है।

अभिषेक आज है तेरा, तू दिल में **ज्योति** जला ले,
बन प्यार प्रेम की **प्रतिमा**, सारे जग को **महका** दे।
यश गान तुम्हारा गाएं सब, **चंदन** सा लेप लगा ले,
ज्यूं **श्याम** वर्ण कान्हा का, सब के मन को **हर्षा** दे।

सागर विशाल तो होगा, जल का उफान भी होगा,
लेकर **विशेष** संग **वत्सल**, खुद को **अरुणेश** बना ले।
मन में **उमंग** तू भर ले, खुद को **समृद्ध** तू कर ले,
जयनिश, **जितेंद्र** अब तुम हो, खुद पर यकीन तुम कर लो।

पल्लवी उड़ान तू भर ले, **साहिल** तू हौसला कर ले,
हिम्मत **मनीष** सी लेकर, अँधियारा **पूनम** कर दे।
तुम **शुभम**, **अनुज** हो, तुम राम-लखन हो,
अब कमी रही कोई न आए जब संग **सकीना**।

कम न समझ, **रानी** है तू, शंकर प्यारी, तू **भार्गवी**,
हर बाधा से टकराना है, मुश्किल को सबक सिखाना है।
सर-दूल सी हिम्मत है तुझमें, **राजेश** तुम्हारे संग खड़ा,
प्रफुल्लित करता चल सबको, बनना **राहुल** एक दिन तुमको ।
बढ़ते चलो थमना नहीं, हिम्मत करो परवाह नहीं,
साहस का तू **प्रतीक** है, हर सोच का उद्गीत है।

विनोद कुमार
अं.ज्ञा.कें., गुरुग्राम

बैंक खाता किराए पर

भारत में डिजिटल क्रांति ने जहां आम नागरिकों को तकनीकी रूप से सशक्त किया है, वहीं इससे जुड़े खतरों ने भी अपने पैर फैला लिए हैं। साइबर अपराधी अब ऐसे तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं जो दिखने में मासूम लगते हैं लेकिन वास्तव में अत्यंत जोखिमपूर्ण होते हैं। ऐसा ही एक अपराध है **— बैंक खाता किराए पर देना (बैंक अकाउंट रेंटिंग)।**

घर किराये पर देना, कार किराये पर देना, ये सब तो आम जीवन में सुनने और देखने को मिल जाता है किंतु बैंक खाता किराए पर देना यह शायद ही सोचा जा सकता था किंतु आज बैंक खाता किराए पर देना एक संगठित साइबर अपराध का रूप ले चुका है। यह ऐसा जाल है जिसमें आम लोग – विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग – लालच और अनभिज्ञता में फंस जाते हैं। इसके माध्यम से न केवल काले धन को सफेद किया जाता है बल्कि यह मनी लॉन्ड्रिंग, इनवेस्टमेंट फ्रॉड, ऑनलाइन सट्टेबाज़ी और क्रिप्टो मनी ट्रेल छिपाने जैसे गहन अपराधों को बढ़ावा देता है।

बैंक खाता किराए पर देना केवल ट्रांजेक्शन की बात नहीं है — यह आपकी पूरी डिजिटल पहचान को गिरवी रखने जैसा है। आज के दौर में आधार, पैन, मोबाइल नंबर और बैंक विवरण को डिजिटल पहचान की रीढ़ माना जाता है, ऐसे में इस जानकारी को किसी तीसरे व्यक्ति को सौंपना हानिकारक कदम है।

बैंक खाता किराए पर देना: यह कैसे काम करता है?

इस धोखाधड़ी में व्यक्ति अपने बैंक खाते, केवाईसी दस्तावेज़ और सिम कार्ड को अस्थायी रूप से किसी अजनबी को सौंप देता है। बदले में उसे कुछ हज़ार रुपये का भुगतान किया जाता है - या लेनदेन पर कमीशन का वादा किया जाता है।

- आमतौर पर "किराए" की रकम ₹20,000 से ₹1 लाख तक होती है और लेन-देन की राशि करोड़ों तक जा सकती है।
- खातों का प्रयोग कई बार मात्र 3-5 दिन के लिए होता है, जिससे अपराधी त्वरित लाभ लेकर गायब हो जाते हैं।
- कभी-कभी खाताधारक को यह भी कहा जाता है कि आप खुद ही जमा पैसे निकालो और अपना कमीशन रख कर बची हुई राशि को निर्धारित जगह पर पहुंचा दो तो इस तरह हवाला का भी लेने-देन चल रहा है।

अपराधी किस चीज़ की मांग करते हैं?

- इंटरनेट बैंकिंग यूज़रनेम व पासवर्ड
- ओटीपी के लिए बैंक से जुड़ा सिम कार्ड
- आधार कार्ड, पैन कार्ड, फोटो
- यूपीआई मरचेंट या कोड / सीएमएस-समर्थ चालू खाता

इसके बाद खाताधारक का नियंत्रण समाप्त हो जाता है लेकिन कानूनी जिम्मेदारी उस पर बनी रहती है।

केस स्टडी: जब मजबूरी बन गई सजा

सेबी के अप्रैल 2025 के एक आदेश में "कीर्ति भाई चावड़ा" नामक एक डिलीवरी बॉय का ज़िक्र है। उन्होंने कोविड काल में इलाज और परिवार चलाने के लिए अपना खाता ₹5,000 में किराए पर दे दिया लेकिन बाद में यह सामने आया कि उस खाते का उपयोग ₹50 लाख की अवैध निवेश योजना के लिए किया गया।

सेबी ने चावड़ा को नोटिस भेजा और उन्हें "मुख्य माध्यम" करार दिया और सारी कानूनी कार्यवाही उनके खिलाफ की गयी। इस घटना ने यह साफ कर दिया कि :

"कानून में अनभिज्ञता, अपराध से छूट नहीं दिलाती।"

अत: इसका सहज वर्णन यह है कि जिस तरह कोई अपने घर के किराएदार के क्रियाकलापों के लिए जिम्मेदार होता है, उसी तरह बैंक खाताधारक भी उस खाते से हुई हर अवैध गतिविधि का उत्तरदायी होता है।

इसलिए बैंक खाता किराए पर देना केवल कानून का उल्लंघन नहीं है — यह एक तरह से डिजिटल आत्महत्या है, जिसमें व्यक्ति स्वयं अपने बैंकिंग भविष्य, सामाजिक प्रतिष्ठा और कानूनी सुरक्षा को नष्ट करता है।

ये अपराधी किसे निशाना बनाते हैं?

इस स्कैम के शिकार प्रायः वे लोग होते हैं जो आर्थिक तंगी में होते हैं:

- बेरोज़गार युवा और गिग वर्कर
- प्रवासी मज़दूर और डिलीवरी एजेंट
- कॉलेज छात्र और शिक्षा ऋण से परेशान युवा
- छोटे व्यापारी जो नकदी संकट से जूझ रहे हैं
- आपातकालीन चिकित्सा या पारिवारिक स्थिति में फंसे लोग
- क्रेडिट कार्ड के कर्ज में फसे लोग

ये स्कैम किस प्लेटफ़ॉर्म पर पनपते हैं?

- टेलीग्राम चैनल: जहां 'इन्वेस्टमेंट पार्टनर' बनने का झांसा दिया जाता है
- व्हाट्एप ग्रुप्स: जहां "बिज़नेस अकाउंट पार्टनरशिप" ऑफर किया जाता है
- लिंक्डइन: जहां प्रोफेशनल ऑफर के नाम पर गंभीर फ्रॉड किया जाता है
- इंस्टाग्राम एवं डिस्कोर्ड: जहां ट्रेंडिंग "स्टार्टअप/क्रिप्टो ट्रेंड्स" की आड़ में धोखा दिया जाता है

इन खातों का उपयोग कहां होता है?

बैंक खाता किराए पर लेकर धोखधडी करने वाले लोग निम्नलिखित कार्य करते हैं :

1. **मनी लॉन्ड्रिंग और स्मर्फिंग -** बड़े पैमाने पर काले धन को छोटे-छोटे ट्रांजेक्शन में विभाजित कर बैंकिंग सिस्टम में डाला जाता है।
2. **ऑनलाइन सट्टा और गेमिंग वसूली-** अवैध सट्टा वेबसाइटों से आय को

'गेमिंग विनिंग्स' के नाम पर बैंक खातों में डाला जाता है।

3. **पंप और डंप स्कीम्स (शेयर बाज़ार में हेराफेरी)-**

   स्टॉक में हेराफेरी कर कमाए गए मुनाफे को इन खातों के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है।

4. **फर्जी निवेश सलाह और क्रिप्टो स्कैम -**

   सेबी-पंजीकृत सलाहकारों के बिना निवेशक से शुल्क लेना — और पैसे को इन खातों में जमा करना।

सीएमएस चालू खातों और क्यूआर कोड की मांग क्यों?

सीएमएस (नकद प्रबंधन सेवाएँ)- इस तरह की सेवा देने वाली इकाइयाँ बड़े स्तर पर कैश का लेन-देन करने का काम करती हैं और उनके खाते में छोटी राशि पर कोई ध्यान भी नहीं देता। ये सक्षम खाते और मर्चेंट क्यू आर कोड वाले खाते, धोखधड़ी:

- ये अधिकतम ट्रांजेक्शन लिमिट और बंडल ट्रांजेक्शन सुविधा देते हैं
- मर्चेंट खाते व्यापारिक दृष्टिकोण से सामान्य लगते हैं, जिससे बैंकों को शक नहीं होता
- क्यू आर कोड से फर्जी लेन-देन को "रेस्त्रां", "एजुकेशन", या "डिजिटल मार्केटिंग" जैसे कामों की आड़ में छिपाया जाता है

बैंक खाता किराए पर देने के परिणाम

- **कानूनी जोखिम:**

  पीएमएलए (मनी लॉनडरिंग कानून) के अंतर्गत जांच, आईपीसी की धारा 420, 467, 468 (धोखाधड़ी और जालसाजी) और सेबी अधिनियम के अंतर्गत भारी दंड दिया जा सकता है।

- **वित्तीय नुकसान:**

  खाता फ्रीज़ या स्थायी निलंबन, बैंकिंग प्रतिष्ठा खत्म, क्रेडिट स्कोर बर्बाद और कभी-कभी बैंक रिकवरी के लिए संपर्क कर सकता है।

- **मानसिक और सामाजिक परिणाम:**

  बदनामी और सामाजिक बहिष्कार, कोर्ट केस व कानूनी खर्च, करियर और भविष्य पर दुष्प्रभाव हो सकता है।

अंतरराष्ट्रीय संदर्भ: भ्रम और हकीकत

कुछ अपराधी यह कहकर भरोसा जीतते हैं कि "सिंगापुर, चैनल आइलैंड्स आदि में ऐसा सामान्य है।" लेकिन

वास्तव में, भारत में बिना नियामकीय मंजूरी के किसी भी वित्तीय गतिविधि को अंजाम देना दंडनीय अपराध है। आरबीआई और सेबी के स्पष्ट दिशा-निर्देश इस पर रोक लगाते हैं।

आजकल सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स तक को निशाना बनाया जा रहा है - जिनके जरिए स्कैमर्स यह बताते हैं कि "आपके फॉलोवर्स के नाम पर अकाउंट चाहिए" और वो उसका गलत इस्तेमाल करते हैं.

समाधान और सुझाव

नागरिकों के लिए:

- ❖ कभी भी बैंक लॉगिन, सिम कार्ड या केवाईसी जानकारी किसी के साथ साझा न करें
- ❖ किसी भी लालच के सामने संयम रखें

संदिग्ध गतिविधियों की रिपोर्ट: https://cybercrime.gov.in या 1930 पर करें

- ❖ युवाओं, छात्रों और परिवार को जागरूक करें

नीति-निर्माताओं के लिए:

- ❖ डिजिटल और सामाजिक मीडिया पर अभियान चलाएं
- ❖ बैंकिंग खातों की गतिविधि पर निगरानी के लिए मशीन लर्निंग टूल अपनाएं
- ❖ सीएमएस और क्यूआर खातों की समय-समय पर जांच अनिवार्य करें
- ❖ रेंटेड खातों की सार्वजनिक ब्लैकलिस्ट बनाएं

बैंक और एनबीएफसी के लिए:

- ❖ अजीब ट्रांजेक्शन पैटर्न पर ऑटोमेटेड अलर्ट सिस्टम
- ❖ एसएमएस, व्हाट्सऐप और शाखा स्तर पर जागरूकता अभियान
- ❖ हर संदेहास्पद गतिविधि को एसटीआर में रिपोर्ट करें

बैंक खाता किराए पर देना – आसान कमाई का सबसे बड़ा झांसा

बैंक खाता किराए पर देना एक ऐसा साइबर अपराध है जो व्यक्ति की आर्थिक मजबूरी और डिजिटल अनभिज्ञता का फायदा उठाता है। इसकी शुरुआत "आसान कमाई" से होती है और अंत होता है कानूनी संकट, सामाजिक बदनामी और वित्तीय बर्बादी से। कई बार हमें ऐसा लगता है कि "अगर मेरे खाते से किसी को पैसा मिला, तो मैं कैसे ज़िम्मेदार हूँ?" लेकिन सच यह है कि बैंकिंग व्यवस्था में हर लेन-देन की जिम्मेदारी उस खाते के धारक के नाम पर ही तय होती है। अपराधी बच निकलते हैं लेकिन आपकी डिजिटल पहचान, आपका बैंक खाता और आपका जीवन एक गंभीर संकट में फंस जाता है। जो लोग यह सोचते हैं कि खाता किराए पर देने से उन्हें बैठे-बिठाए पैसे मिल जाएंगे - वे यह नहीं समझते कि यह अपराधी अपने अवैध गतिविधियों के लिए आपकी पहचान का इस्तेमाल कर रहे हैं।

इस स्कैम का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि इसका पता तब चलता है जब बहुत देर हो चुकी होती है। जब जांच एजेंसियां पहुंचती हैं - तो वे खाताधारक से सवाल करती हैं, न कि उस अनजान अपराधी से जिसने खाते का असली इस्तेमाल किया था। अपने बैंकिंग पहचान की रक्षा करें – क्योंकि यह आपकी आर्थिक आत्मा है। कुछ पैसों के लिए अपने भविष्य को गिरवी न रखें। हमारे देश में केवाईसी से सम्बंधित सख्त कानून है फिर भी नियामक इकाई व सरकार को इससे सम्बंधित कानून त्वरित रूप में बनाना और उसे लागू करने के दिशा में समय रहते कदम उठाना चाहिये।

कभी भी अपने बैंक खाते, पहचान या सिम को किराए पर न दें – यह आपकी सबसे बड़ी भूल साबित हो सकती है।

सावधान रहें, जागरूक बनें — और दूसरों को भी जागरूक करें

रंजीत कुमार रंजन
यू.एल.ए., लखनऊ

एआई युग में कार्यबल रूपांतरण

आज के डिजिटल युग में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने तेज़ी से विकास के वैश्विक कार्यस्थल परिदृश्य में बुनियादी परिवर्तन कर दिया है। एआई के इस युग में प्रभावी कार्यबल विकास में मानव संसाधन विभाग की बहुआयामी भूमिका है। वर्तमान समय में, संगठनों के सामने अब यह चुनौती है कि कैसे एक ऐसे कार्यबल का निर्माण किया जाए जो एआई-संचालित भविष्य में न केवल टिके रहे, बल्कि प्रगतिशील भी रहे। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में, मानव संसाधन विभाग एक रणनीतिक साझेदार के रूप में उभरा है, जो कर्मचारियों के पुनःकौशल से लेकर व्यापक कार्यबल योजना तक सभी पहलुओं का प्रबंधन करता है। यह नेतृत्व कौशल अंतराल का आकलन करने, प्रासंगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने, एआई -मानव सहयोग को प्रोत्साहित करने, और ऐसी संगठनात्मक संस्कृति का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जो तकनीकी परिवर्तन को अपनाती है।

स्वचालन और कार्य का भविष्य : एआई और स्वचालन व्यापार, संचालन के हर पहलू को प्रभावित कर रहे हैं। दोहरावदार और नियमित कार्य, जिन्हें पारंपरिक रूप से मानव श्रमिकों द्वारा किया जाता था, अब तेज़ी से स्वचालित हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप, कई भूमिकाओं में मौलिक बदलाव आ रहा है, जिससे नए कौशल की मांग पैदा हो रही है। दोहराव वाले और यांत्रिक कार्यों के स्वचालन से लेकर निर्णय लेने में सहायता तक, एआई कार्यस्थल में तेजी से एकीकृत हो रही है। उदाहरण के लिए, बैंकिंग क्षेत्र में, जहां पहले ऋण और लेनदेन संबंधी प्रोसेसिंग के लिए कई कर्मचारियों की आवश्यकता होती थी, अब एआई आधारित समाधान इन कार्यों को संभालते हैं, जिससे मानव कर्मचारियों की भूमिका ग्राहक सेवा, जटिल समस्या-समाधान और रणनीतिक निर्णय लेने पर केंद्रित हो गई है।

कौशल एवं रोजगार परिदृश्य का पुनर्गठन : आज के डिजिटल युग में कार्यबल एक परिवर्तनकारी रूपांतरण के द्वार पर खड़ा है। विश्व आर्थिक मंच के अनुसार, 2025 तक लगभग 85 मिलियन नौकरियां स्वचालन से प्रभावित हो सकती हैं, जबकि 97 मिलियन नई भूमिकाएं उभर सकती हैं। यह असमान विस्तार एक तरफ पारंपरिक क्षेत्रों को निगल रहा है, तो दूसरी ओर डेटा विज्ञान , मशीन लर्निंग इंजीनियरिंग, एआई नैतिकता, और मानव-मशीन सहयोग जैसे नवोदित क्षेत्रों में अभूतपूर्व संभावनाएं खोल रहा है। इस क्रांतिकारी बदलाव में 2025 तक आधे कार्यबल को अपने कौशल का पुनर्निर्माण करना होगा, जहां तकनीकी निपुणता के साथ-साथ मानवीय गुण जैसे रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संगम ही सफलता का मंत्र बनेगा। यह विशाल कौशल अंतराल संगठनों के सामने एक विकराल चुनौती खड़ी करता है, जिसमें मानव संसाधन विभागों की भूमिका निर्णायक साबित होगी।

हाइब्रिड कार्यबल का उदय

एआई के साथ, हम एक हाइब्रिड कार्यबल की ओर बढ़ रहे हैं जहां मनुष्य और मशीनें सहयोग करेंगे। यह मानव-मशीन सहयोग नए कार्य मॉडल का निर्माण कर रहा है, जहां एआई नियमित कार्यों को संभालती है, जबकि मानव रणनीतिक निर्णय लेने, रचनात्मकता, और जटिल समस्या-समाधान पर ध्यान केंद्रित करते हैं।यह प्रगति एचआर के लिए चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि उन्हें इस हाइब्रिड कार्यबल को प्रबंधित करने के लिए नए तरीके विकसित करने होंगे।

रणनीतिक कार्यबल योजना: एआई युग में एचआर को कार्यबल योजना के प्रति एक रणनीतिक और भविष्य-उन्मुख दृष्टिकोण अपनाना होगा। इसके अंतर्गत वर्तमान और भविष्य की कौशल आवश्यकताओं का विश्लेषण, भविष्य की कौशल आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाना, मौजूदा कौशल अंतराल की पहचान करना और उसकी पूर्ति करने के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित करना शामिल है। एचआर को न केवल सामरिक भर्ती के माध्यम से आवश्यक प्रतिभा को आकर्षित करना चाहिए, बल्कि आंतरिक प्रतिभा विकास पर भी जोर देते हुए मौजूदा कर्मचारियों के लिए रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के अवसर सुनिश्चित करने चाहिए, ताकि संगठन प्रतिस्पर्धी बना रहे और तकनीकी परिवर्तनों के साथ कुशलतापूर्वक तालमेल बिठा सके।

रीस्किलिंग और अपस्किलिंग कार्यक्रमों का नेतृत्व: एआई युग में निरंतर सीखना अनिवार्य हो गया है, और इसी संदर्भ में एचआर विभागों की भूमिका रीस्किलिंग और अपस्किलिंग कार्यक्रमों के नेतृत्व में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। एचआर को ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने होंगे जो कर्मचारियों को न केवल नए कौशल सीखने में मदद करें, बल्कि उनके मौजूदा कौशल को भी सुदृढ़ करें। इसके अंतर्गत कर्मचारियों की जरूरतों के अनुरूप व्यक्तिगत सीखने के मार्ग, कार्य में सहजता से समाहित किए जा सकने वाले माइक्रो-लर्निंग मॉड्यूल, तथा सीखने की संस्कृति को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण विकसित करना आवश्यक

है, जिससे संगठन निरंतर बदलते डिजिटल परिदृश्य में प्रतिस्पर्धात्मक बना रह सके।

एआई एकीकरण और परिवर्तन प्रबंधन: नई प्रौद्योगिकियों को अपनाना हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है, और एआई कोई अपवाद नहीं है। एआई जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाना किसी भी संगठन के लिए एक बड़ा परिवर्तन होता है, और इसके सफल एकीकरण के लिए प्रभावी परिवर्तन प्रबंधन अनिवार्य है। इस प्रक्रिया में एचआर विभाग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वही कर्मचारियों और प्रबंधन के बीच सेतु का कार्य करता है। एचआर को यह सुनिश्चित करना होता है कि परिवर्तन के कारण, संभावित लाभ और इसके प्रभाव कर्मचारियों को स्पष्ट रूप से समझाए जाएं।

साथ ही, एआई को अपनाने की प्रक्रिया में कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना और उनकी आशंकाओं या प्रतिरोध को समझकर दूर करना भी एचआर की जिम्मेदारी है। इसके लिए रणनीतिक संवाद, प्रशिक्षण, और सहयोगी वातावरण की आवश्यकता होती है, जिससे तकनीकी बदलावों को सहजता से अपनाया जा सके और संगठन डिजिटल रूप से सशक्त बन सके।

कार्यस्थल संस्कृति का पुनर्निर्माण: एआई एकीकरण के साथ कार्यस्थल संस्कृति का पुनर्निर्माण अनिवार्य हो जाता है, और इसमें एचआर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एचआर को ऐसी संस्कृति विकसित करनी चाहिए जो नवाचार, सहयोग और अनुकूलनशीलता को बढ़ावा दे। इसके लिए विकसित मानसिकता को प्रोत्साहन देना आवश्यक है ताकि कर्मचारी परिवर्तन को अवसर के रूप में देखें, साथ ही मानव-मशीन सहयोग को सक्षम बनाने वाला सहयोगी वातावरण निर्मित किया जाए। इसके अतिरिक्त, कर्मचारियों को नए विचारों के प्रयोग और नवाचार के लिए प्रेरित कर एक सशक्त, लचीला और भविष्य-उन्मुख कार्यस्थल सुनिश्चित किया जा सकता है।

डेटा-संचालित मानव संसाधन: एआई के माध्यम से मानव संसाधन (एचआर) अब अधिक डेटा-संचालित और रणनीतिक निर्णय लेने में सक्षम हो गया है। उन्नत एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का प्रयोग कर एचआर विभाग कर्मचारियों के प्रदर्शन, प्रतिभा अधिग्रहण, और प्रतिधारण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकता है। उदाहरणस्वरूप, प्रीड़ेक्टिव (भविष्यवाणी) एनालिटिक्स की सहायता से यह पहचाना जा सकता है कि कौन से कर्मचारी संस्थान को छोड़ने की संभावना रखते हैं, जिससे उन्हें कार्यक्षेत्र में बनाए रखने के लिए समय रहते उपयुक्त कदम उठाए जा सकें। इसी प्रकार, प्रदर्शन संबंधी विश्लेषण के माध्यम से कर्मचारियों की कार्यशैली के पैटर्न को समझकर लक्षित प्रशिक्षण और कोचिंग प्रदान की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, एआई संगठन के भीतर छिपी हुई प्रतिभा को खोजकर उनके विकास हेतु उपयुक्त अवसर भी प्रदान करता है, जिससे न केवल कर्मचारियों का व्यक्तिगत विकास होता है, बल्कि संगठन की समग्र उत्पादकता और दक्षता में भी वृद्धि होती है।

एचआर प्रक्रियाओं का स्वचालन: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एचआर प्रक्रियाओं के स्वचालन को सक्षम बनाकर कार्यकुशलता बढ़ाने और एचआर पेशेवरों को अधिक रणनीतिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर देती है। इससे भर्ती प्रक्रिया जैसे बायोडाटा स्क्रीनिंग, उम्मीदवारों से संवाद और साक्षात्कार नियोजन स्वचालित हो सकते हैं। इसी प्रकार, नए कर्मचारियों की ऑनबोर्डिंग प्रक्रिया को भी सरल और तेज़ बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्रदर्शन प्रबंधन के तहत समीक्षा, फीडबैक और लक्ष्यों की निर्धारण प्रक्रिया को स्वचालित कर संगठनात्मक दक्षता को सुदृढ़ किया जा सकता है।

व्यक्तिगत कर्मचारी अनुभव: आधुनिक कार्यस्थल में एआई ने कर्मचारी अनुभव को पूर्णतः रूपांतरित कर दिया है। अब प्रत्येक कर्मचारी के लिए उनकी विशिष्ट सीखने की शैली और कौशल अंतराल को पहचानकर, एआई-संचालित प्लेटफॉर्म एक अद्वितीय प्रशिक्षण मार्ग तैयार करते हैं, जो ज्ञान अर्जन को न केवल प्रभावी बल्कि आनंददायक भी बनाता है। करियर विकास का पारंपरिक "एक आकार सभी के लिए" मॉडल अब इतिहास बन चुका है, क्योंकि एआई हर व्यक्ति की छिपी प्रतिभाओं, गहन आकांक्षाओं और हितों का विश्लेषण कर, उनके लिए वैयक्तिकृत करियर पथ का निर्माण करता है। इसके अलावा एआई कर्मचारियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं जैसे उनके स्वास्थ्य पैटर्न, तनाव स्तर और जीवन-शैली के आधार पर उनके हितों के लिए कार्यक्रम अनुकूलित करने की संभावना भी प्रदान करता है जो उनके समग्र जीवन की गुणवत्ता में अभूतपूर्व सुधार ला सकते हैं।

चुनौतियां और नैतिक विचार

गोपनीयता और डेटा सुरक्षा: एआई के उपयोग के साथ, कर्मचारी डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा महत्वपूर्ण चिंताएं बन जाती हैं। एचआर विभागों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे कर्मचारी के डेटा के संग्रह, उपयोग, और संरक्षण के लिए नैतिक और कानूनी दिशानिर्देशों का पालन करें।

पूर्वाग्रह और भेदभाव की संभावना: एआई सिस्टम पूर्वाग्रहों से मुक्त नहीं हैं और भर्ती, पदोन्नति, और प्रदर्शन मूल्यांकन जैसे

क्षेत्रों में भेदभाव को बढ़ा सकते हैं। एचआर पेशेवरों को इन पूर्वाग्रहों के प्रति सतर्क रहना चाहिए और उन्हें कम करने के लिए कदम उठाने चाहिए।

मानवीय संपर्क बनाए रखना: एआई कई एचआर प्रक्रियाओं को स्वचालित कर सकती है, परंतु मानवीय संपर्क और संबंध अभी भी महत्वपूर्ण हैं। एचआर विभागों को प्रौद्योगिकी और मानवीय स्पर्श के बीच संतुलन बनाना चाहिए।

भविष्य की दिशा

एचआर कौशल विकसित करना: एआई युग में सफल होने के लिए एचआर पेशेवरों को अपने कौशलों को नयी दिशा में विकसित करना आवश्यक है। इसके लिए उन्हें डेटा साक्षरता प्राप्त करनी होगी, जिससे वे डेटा को समझकर विश्लेषण और व्याख्या कर सकें। साथ ही, डिजिटल साक्षरता के माध्यम से उन्हें नवीनतम एचआर तकनीकों और उपकरणों से परिचित होना होगा। इसके अतिरिक्त, परिवर्तन प्रबंधन कौशल के द्वारा वे संगठनात्मक परिवर्तनों का प्रभावी नेतृत्व कर सकेंगे, जिससे वे भविष्य की एचआर चुनौतियों का बेहतर सामना कर पाएंगे।

एआई और एचआर का सह-विकास: एचआर और एआई का भविष्य एक सह-विकासवादी है, जहां दोनों एक दूसरे के विकास को प्रभावित करते हैं। एचआर पेशेवरों को न केवल एआई प्रौद्योगिकियों को अपनाना होगा, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ये प्रौद्योगिकियां मानवीय मूल्यों और आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

डिजिटल तकनीकों और मानवीय मूल्यों का एकीकरण: भविष्य में, सफल एचआर विभाग वे होंगे जो डिजिटल तकनीकों और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बना सकते हैं। एचआर पेशेवरों को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रौद्योगिकी मानवीय अनुभव को बढ़ाती है, न कि इसे कम करती है।

एआई युग में कार्यबल रूपांतरण अपरिहार्य है और इस परिवर्तन के केंद्र में मानव संसाधन विभाग की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। एआई और स्वचालन के प्रभाव से निपटने के लिए संगठनों को कार्यबल योजना और विकास के प्रति एक रणनीतिक, दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। मानव संसाधन अब केवल प्रशासनिक या अनुपालन कार्य नहीं है, बल्कि एक रणनीतिक साझेदार है जो संगठनों को भविष्य के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एआई युग में सफल होने वाले संगठन वे होंगे जो न केवल नवीनतम तकनीक अपनाते हैं, बल्कि अपने सबसे महत्वपूर्ण संसाधन – अपने कर्मचारियों में भी निवेश करते हैं। जब हम अपने कार्यबल के पुनःकौशल और पुनर्विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम केवल एआई-संचालित भविष्य का निर्माण नहीं कर रहे हैं बल्कि हम एक ऐसा भविष्य बना रहे हैं जो अधिक समृद्ध, समावेशी और मानवीय हो।

अनीश श्रीमाली
यू.एल.ए., पवई

दिनांक 26.06.2025 को भारत मंडपम, दिल्ली में आयोजित राजभाषा स्वर्ण जयंती समारोह में सुश्री अंसुली आर्या, सचिव एवं सुश्री मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के करकमलों द्वारा साइबर मायाजाल पुस्तक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर बैंक द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री संजय नारायण, मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, दिल्ली एवं श्री गिरीश चंद्र जोशी , महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.) द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री विवेकानंद, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) तथा अन्य राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे।

स्माइल पे

(आपका चेहरा ही अब आपका पेमेंट करने का तरीका)

आज के डिजिटल युग में तकनीक ने हमारी जिंदगी को बेहद आसान बना दिया है। इसी कड़ी में अब एक नई और उन्नत तकनीक "स्माइल पे" सामने आई है, जो चेहरे की पहचान (फेस रिकग्निशन) के ज़रिए भुगतान करने की सुविधा देती है। इसका मतलब है कि अब न तो आपको कैश रखने की जरूरत है और न ही कार्ड या मोबाइल की — सिर्फ एक मुस्कान से आप भुगतान कर सकते हैं। स्माइल पे तकनीक को चीन, दक्षिण कोरिया और कुछ अन्य देशों में अपनाया जा चुका है। पहला देश जहां स्माइल पेमेंट आया वह चीन है। ई-कॉमर्स दिग्गज अलीबाबा ने 2017 में हांग्जो जिले में "स्माइल टू पे" नामक एक फेशियल रिकॉग्निशन सेवा शुरू की थी। यह अलीपे ऑनलाइन भुगतान और अलीपे वॉलेट के साथ उपयोग के लिए संरेखित है।

भारत में भी कुछ मेट्रो शहरों में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर इसकी शुरुआत की जा रही है। स्माइल पेमेंट सिस्टम एक आधुनिक तकनीक है, जो आपको केवल अपने चेहरे को स्कैन करके भुगतान करने की सुविधा देती है। यह एक सुरक्षित, तेज और सुविधाजनक तरीका है जिससे आपको नकद, कार्ड या मोबाइल फोन की आवश्यकता नहीं होती। स्माइल पे भविष्य की एक क्रांतिकारी तकनीक है, जो हमारे पेमेंट अनुभव को पूरी तरह बदल सकती है। हालाँकि इसके साथ सुरक्षा और निजता से जुड़ी चिंताओं को भी गंभीरता से लेना होगा। लेकिन अगर सही तरीके से लागू किया जाए, तो यह तकनीक एक स्मार्ट और सुरक्षित भुगतान प्रणाली साबित हो सकती है।

भारत में, फेडरल बैंक ने "स्माइलपे" नामक इस तरह की पहली प्रणाली शुरू की है। यह यूआईडीएआई के भीम आधार पे प्लेटफॉर्म पर आधारित है। फेडरल बैंक ने शुरुआत में इसे अपने ग्राहकों के लिए ही उपलब्ध कराया है, जिसके तहत व्यापारी और ग्राहक दोनों के पास बैंक में खाता होना आवश्यक है। भविष्य में, बैंक इसकी पहुंच बढ़ाने के लिए अन्य बैंकों और व्यापारियों के साथ साझेदारी करने की योजना बना रहा है। जेपी मॉर्गन जैसे वैश्विक संस्थानों ने भी इसी तरह की "पे बाय स्माइल" जैसी प्रणालियों का परीक्षण किया है, जो दर्शाता है कि यह तकनीक भविष्य में भुगतान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकती है। यह प्रणाली भारत में डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

"स्माइल पेमेंट सिस्टम" रूस में एक वास्तविकता है, जिसे "स्माइल पे" या "फेस पे" के नाम से जाना जाता है। यह सेवा रूस के सबसे बड़े बैंक, स्बेरबैंक द्वारा 2023 की गर्मियों में शुरू की गई थी। शुरू में यह सेवा स्बेरबैंक के ग्राहकों के लिए ही उपलब्ध थी, लेकिन सितंबर 2024 से इसे सभी रूसी बैंकों के ग्राहकों के लिए विस्तारित कर दिया गया है। स्बेरबैंक के अनुसार, उन्होंने पूरे रूस में खुदरा स्टोर, रेस्तरां और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में लगभग 1 मिलियन बायोमेट्रिक भुगतान टर्मिनल स्थापित किए हैं। यह सेवा विशेष रूप से बड़े और मध्यम आकार के शहरों में लोकप्रिय है और अब यह सभी क्षेत्रों में उपलब्ध है।

क्या है स्माइल पे?

स्माइल पे एक बायोमेट्रिक पेमेंट सिस्टम है जिसमें ग्राहक का चेहरा ही उसकी पहचान बनता है। जब कोई ग्राहक किसी स्टोर या रेस्टोरेंट में भुगतान करता है, तो कैमरा उनके चेहरे को स्कैन करता है और उनके बैंक या वॉलेट खाते से पैसे कट जाते हैं। यह प्रक्रिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और फेस रिकग्निशन टेक्नोलॉजी पर आधारित होती है। दिलचस्प बात यह है कि भुगतान करने के लिए वास्तव में मुस्कुराने की आवश्यकता नहीं है। मुख्य आवश्यकता कैमरे में सीधे देखना है ताकि सिस्टम आपकी पहचान कर सके।

कैसे काम करता है?

1. ग्राहक को पहले अपने चेहरे को सिस्टम में रजिस्टर करना होता है।
2. रजिस्ट्रेशन के दौरान चेहरे की स्कैनिंग और बैंक/वॉलेट अकाउंट से लिंकिंग की जाती है।
3. भुगतान के समय ग्राहक कैमरे के सामने आता है और सिस्टम अपने-आप चेहरे की पहचान करके पेमेंट कर देता है। यह सिस्टम चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग करता है। भुगतान टर्मिनल में लगे कैमरे में देखने पर, सिस्टम ग्राहक के चेहरे की विशेषताओं को स्कैन करता है और एक सुरक्षित, एन्क्रिप्टेड डेटाबेस से मिलान करता है जो उनके बैंक खाते से जुड़ा होता है। मिलान होने पर, भुगतान स्वचालित रूप से संसाधित हो जाता है।

लाभ:-

- **तेज़ और सुविधाजनक-** बिना वॉलेट या फोन के सिर्फ मुस्कान से भुगतान।
- **सुरक्षित-** पासवर्ड चोरी या कार्ड क्लोनिंग की कोई संभावना नहीं।
- **कॉण्टैक्टलेस ट्रांजैक्शन-** कोविड-19 जैसे समय में बिना छुए भुगतान की सुविधा।
- **बढ़ी हुई सुरक्षा-** चेहरे की पहचान एक बहुत ही सुरक्षित बायोमेट्रिक तरीका है, जिससे धोखाधड़ी का खतरा कम हो जाता है।

- **व्यापारियों के लिए दक्षता-** यह प्रणाली भीड़ प्रबंधन में मदद करती है और काउंटर पर लेनदेन को आसान बनाती है।

स्कोप और संभावनाएं:

- यह ग्राहकों को नकदी, कार्ड या मोबाइल उपकरणों की आवश्यकता के बिना केवल अपने चेहरे का उपयोग करके भुगतान करने की अनुमति देता है, जिससे लेनदेन अधिक तेज और आसान हो जाता है।
- चेहरे की पहचान एक सुरक्षित बायोमेट्रिक तरीका है, जो धोखाधड़ी और अनधिकृत लेनदेन के जोखिम को कम करता है। 'लाइवनेस डिटेक्शन' जैसी तकनीकों का उपयोग यह सुनिश्चित करता है कि सिस्टम को तस्वीरों या वीडियो से धोखा नहीं दिया जा सकता है।
- यह भारत सरकार के डिजिटल इंडिया और कैशलेस अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के प्रयासों के अनुरूप है।
- यह उन लोगों के लिए भुगतान का एक नया तरीका प्रदान कर सकता है जिनके पास पारंपरिक बैंकिंग सेवाएं या स्मार्टफोन नहीं हैं, क्योंकि यह आधार से जुड़ा हुआ है।

संभावित चुनौतियाँ:

- प्राइवेसी की चिंता- चेहरे की जानकारी कैसे और कहाँ स्टोर होती है, यह एक अहम सवाल है।
- तकनीकी समस्याएँ- कैमरे की गुणवत्ता या नेटवर्क समस्या से पहचान में बाधा आ सकती है।
- तकनीकी बुनियादी ढांचा- व्यापारियों को इस प्रणाली को अपनाने के लिए आवश्यक हार्डवेयर (जैसे कैमरे) और सॉफ्टवेयर की आवश्यकता होगी।
- उपभोक्ता जागरूकता और स्वीकृति- लोगों को इस नई तकनीक के बारे में जागरूक होने और इसे अपनाने के लिए तैयार होने की आवश्यकता होगी।
- डेटा गोपनीयता और सुरक्षा- बायोमेट्रिक डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा। इसके लिए मजबूत डेटा सुरक्षा प्रोटोकॉल और नियामक ढांचे की आवश्यकता होगी।
- नियामक अनुमोदन- भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को इस प्रकार के भुगतान प्रणालियों के लिए आवश्यक दिशानिर्देश और अनुमोदन प्रदान करने की आवश्यकता होगी।
- अंतरसंचालनीयता- भविष्य में, विभिन्न बैंकों और भुगतान प्रणालियों के बीच अंतरसंचालनीयता महत्वपूर्ण होगी ताकि ग्राहक किसी भी व्यापारी पर इस विधि का उपयोग कर सकें।

कुल मिलाकर, भारत में स्माइल पेमेंट सिस्टम का भविष्य उज्ज्वल है, खासकर यदि सुरक्षा, गोपनीयता और उपयोगकर्ता अनुभव से संबंधित चिंताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित किया जाता है और एक मजबूत बुनियादी ढांचा तैयार किया जाता है। यह डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता बन सकता है।

अमित प्रकाश
अं. का., वाराणसी

दिनांक 19.05.2025 को आयोजित केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान "यूनियन सृजन" के मार्च, 2025 अंक का विमोचन करते हुए सुश्री ए. मणिमेखलै, एमडी एवं सीईओ तथा कार्यपालक निदेशकगण व अन्य कार्यपालकगण।

डिजिटल युग का हिंदी साहित्य पर प्रभाव

डिजिटल युग प्रौद्योगिकी और सूचना के युग को संदर्भित करता है जहां डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग ने हमारे जीने, काम करने और संवाद करने के तरीके को बदल दिया है। यह स्मार्टफोन, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसे डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकियों के व्यापक उपयोग की विशेषता है जिसने जानकारी तक हमारी पहुंच और दूसरों के साथ जुड़ने एवं व्यापार करने के तरीके में क्रांति ला दी है। डिजिटल युग का संस्कृति, कला और साहित्य सहित आधुनिक समाज के वस्तुतः हर पहलू पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

हिंदी साहित्य के संदर्भ में डिजिटल युग का साहित्य सृजन, वितरण और पठन-पाठन के तरीके पर गहरा प्रभाव पड़ा है। लेखकों और प्रकाशकों के लिए दर्शकों तक पहुँचने के नए रास्ते खोल दिए हैं और उन्होंने पाठकों को साहित्य तक पहुँचने और उससे जुड़ने के अधिक विकल्प प्रदान किए हैं।

डिजिटल तकनीक ने सूचना तक पहुँच, बनाने और साझा करने के तरीके में क्रांति ला दी है और साहित्य सहित लगभग हर उद्योग पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के उदय ने लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों के लिए एक दूसरे के साथ बातचीत करने के नए अवसर पैदा किए हैं और साहित्य के सृजन, वितरण और उपभोग के तरीके को बदल दिया है। हिंदी साहित्य पर डिजिटल युग के सबसे महत्वपूर्ण प्रभावों में से एक पारंपरिक प्रिंट प्रकाशन से डिजिटल प्रकाशन में बदलाव है। ई-पुस्तकों और ई-पत्रिकाओं के आगमन के साथ, पाठक अब कभी भी और कहीं भी हिंदी साहित्य का आस्वादन कर सकते हैं। इससे न केवल हिंदी साहित्य अधिक सुलभ हुआ है बल्कि हिंदी भाषी क्षेत्रों की पारंपरिक सीमाओं से परे हिंदी साहित्य की पहुंच भी बढ़ी है।

डिजिटल प्रकाशन के अलावा, डिजिटल युग ने हिंदी लेखकों के लिए अपने काम को बढ़ावा देने और सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से नए पाठकों तक पहुंचने के नए अवसर भी खोले हैं। फेसबुक, एक्स और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हिंदी लेखकों के लिए पाठकों से जुड़ने, उनके काम को बढ़ावा देने और प्रतिक्रिया प्राप्त करने के शक्तिशाली साधन बन गए हैं।

इसके अलावा, डिजिटल युग ने हिंदी साहित्य के नए रूपों, जैसे डिजिटल कविता और इंटरेक्टिव स्टोरीटेलिंग के उद्भव को भी सक्षम किया है, जो पाठकों के लिए आकर्षक साहित्यिक अनुभव बनाने के लिए डिजिटल मीडिया की अनूठी विशेषताओं का उपयोग करते हैं।

सकारात्मक प्रभाव

हिंदी साहित्य पर डिजिटल युग का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव प्रकाशन का लोकतंत्रीकरण रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने लेखकों के लिए स्वयं प्रकाशन करना और छोटे प्रकाशकों के लिए बड़े प्रकाशन गृहों के साथ प्रतिस्पर्धा करना आसान बना दिया है। इसके परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य में विभिन्न स्वरों और दृष्टिकोणों की बहुलता देखने को मिल रही हैं।

डिजिटल तकनीकों ने पाठकों के लिए उनके स्थान या भाषा प्रवीणता की परवाह किए बिना हिंदी साहित्य तक पहुंचना आसान बना दिया है। ईबुक्स, ऑडियो बुक्स और ऑनलाइन पत्रिकाओं ने हिंदी साहित्य को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाना संभव बना दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने पाठकों को लेखकों और प्रकाशकों के साथ जुड़ने, प्रतिक्रिया प्रदान करने और समुदाय की भावना को बढ़ावा देने में सक्षम बनाया है।

नकारात्मक प्रभावः

डिजिटल युग हिंदी साहित्य के लिए चुनौतियाँ भी लाया है। सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक फेक न्यूज और गलत सूचनाओं का प्रसार है. जो हिंदी साहित्य और उसके लेखकों की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचा सकता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल क्षेत्र में अंग्रेजी का बढ़ता वर्चस्व हिंदी साहित्य के लिए व्यापक दर्शकों तक पहुंचना कठिन बना सकता है।

डिजिटल युग ने जहां हिंदी साहित्य में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं। वहीं इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। स्वप्रकाशन और डिजिटल वितरण की आसानी के परिणामस्वरूप कम गुणवत्ता वाली सामग्री

की बाढ़ आ गई है, जिससे पाठकों के लिए ढेर के बीच गुणवत्तापूर्ण साहित्य खोजना कठिन हो गया है।

डिजिटल तकनीकों ने पारंपरिक प्रकाशन उद्योग को भी बाधित कर दिया है। जिससे कई लोगों की नौकरी छूट गई है और बुक स्टोर्स बंद हो गए हैं। इसने कई लेखकों, संपादकों और पुस्तक विक्रेताओं की आजीविका को प्रभावित किया है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल तकनीकों के प्रसार से पढ़ने की आदतों में बदलाव आया है। कई पाठक छोटे, छोटे आकार की सामग्री को पसंद करते हैं। इससे उपन्यास और गैरकाल्पनिक पुस्तकों जैसे लंबे प्रारूप वाले साहित्य की लोकप्रियता में गिरावट आई है।

इनोवेशन के दौर में मातृभाषाः

अच्छा साहित्य पढ़ने के अवसर उपलब्ध कराने के अनेक सार्थक प्रयास हुए हैं ताकि लिखने के शौकीनों की मनपसंद रचना, जिसके लिए साहित्य के मुरीदों को पुस्तकालयों के चक्कर नहीं लगाने पड़े और पाठकों तक आसानी से पहुँच प्राप्त हो सके। ये लोग साहित्य की परंपरागत धारा से नहीं जुड़े, फिर भी इन साहित्य प्रेमियों ने कविता और अन्य विधाओं के साहित्य को एक सहज उपलब्ध छतरी के नीचे लाने का सार्थक प्रयास किया। भूमंडलीकरण के दौर में सिमटी दुनिया में आज साहित्य के अनाम योद्धाओं के प्रयास से विपुल सहित्य आज इंटरनेट व सोशल मीडिया पर उपलब्ध है। आप मनपसंद कवि की कविता सुन व देख सकते हैं। यहाँ तक कि बाल पाठकों को रोचक तरीके से कविता पढ़ाना और सिखाना आसान हो गया है। मोबाइल एप और इंटरनेट के जरिये ये और आसान हुआ है।

बदलाव के दौर में आज हिंदी साहित्य का चेहरा नयी रंगत लिए हुए आशावाद का संचार कर रहा है। इस नयी जमीन पर हिंदी ने अपने पंखों को विस्तार दिया है। साहित्य पर केंद्रित अनेक वेबसाइट्स और ब्लॉग आज बेहद लोकप्रिय हैं। इनमें कविता कोष, हिंदी समयकॉम तथा कुछ संस्थागत प्रयास शामिल हैं. जिन्होंने कविता पढ़ने के अंदाज को बदला है। कविता कोश में हजारों कविताएं, हजारों कवियों के पेज, देशीविदेशी अनुदित कविताओं को एक जगह पढ़ने का सुकून मिलता है। कभी अपने शौक के लिए इंटरनेट पर कविताएं तलाशने का जुनून आज एक बड़े सार्थक लक्ष्य में तबदील हो चुका है। इन्हें एक जगह एकत्र करने की कोशिश कालांतर कविताओं के विस्तृत संकलन में बदल गई। इंटरनेट के जरिये साहित्य को एक छतरी तले एकत्र करने के जहां व्यक्तिगत प्रयास हुए वहीं कतिपय संस्थागत प्रयासों के भी सार्थक परिणाम सामने आये। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की साइट hindisamay.com पर साहित्य की तमाम विधाओं का सुरुचिपूर्ण संग्रह उपलब्ध है, जिसमें कविता, निबंध, उपन्यास, पत्र आलोचना आदि विधाओं का व्यापक संकलन उपलब्ध है। अनेक रचनाकारों का विस्तृत रचना संचयन विद्यमान है। इस तरह इन वेबसाइटों के अलावा तमाम ब्लॉग साहित्य रसिकों की साहित्य की क्षुधा शांत कर रहे हैं। बदलते वक्त में सूचना प्रौद्योगिकी की उन्नति के साथ साहित्य की जुगलबंदी ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध ही किया है, जिसका दरवाजा आपके स्मार्टफोन में खुलता है। इस मुहिम का सुखद पहलू यह है कि आज हिंदी के लेखक व पाठक परंपरागत धारा से नहीं आ रहे हैं। वे तकनीकी सस्थानों, प्रबंध संस्थानों व अन्य पेशों से आ रहे हैं। यहीं से नया पाठक वर्ग भी उभरा है। वह तकनीक का बेहतर ढंग से इस्तेमाल कर रहा है। इतना ही नहीं, रचनाओं की विषयवस्तु व उसके आकार में भी बदलाव महसूस किया जा रहा है। फेसबुक व एक्स में शब्दों की सीमाओं ने रचनाओं को छोटे प्रारूप में ढाला है। जहां पाठक रचना को पढ़कर तुरंत प्रतिक्रिया भी देता है। जगरनॉट जैसे एप मोबाइल पर ईबुक उपलब्ध करा रहे हैं। नये दौर के लेखकों ने हिंदी को स्मार्ट बनाने की कोशिश की है। छोटी पत्रिकाओं के जरिये होने वाला विमर्श अब सोशल मीडिया पर विद्यमान है। किस्सागोई की नयी रोचक शैली विकसित हुई है

विभित्र प्लेटफार्मों पर साहित्यः

इंटरनेट के जरिये विभित्र प्लेटफार्मों पर रचा जा रहा साहित्य सरल-सहज, प्रभावपूर्ण व रोचक अंदाज में नयी पीढ़ी के पाठकों तक पहुंचा है। नये मिजाज के विषयों का चयन, लीक तोड़ती शैली तथा जीवन राग को अपने अंदाज में अभिव्यक्त करने का जुनून देखते ही बनता है। नये प्रयोगों के जरिये हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पाठकों से जोड़ने का अवसर मिला है। हिंदी अखबारों की वेबसाइटों ने नये हिंदी पाठकों को जोड़ा है। रोजाना लाखों हिट इन वेबसाइटों को मिल रहे हैं, जिनके मुकाबले ब्लॉगों व सामान्य वेबसाइटों का दायरा हजारों तक सिमटा रहता है।

कुल मिलाकर, डिजिटल युग हिंदी साहित्य के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों लेकर आया है। यह हिंदी लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों पर निर्भर है कि वे इन परिवर्तनों को समझें और डिजिटल युग की नई वास्तविकताओं को अपनाएं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हिंदी साहित्य फलता-फूलता और विकसित होता रहे।

रमेश कुमार
आर.एल.पी.,
क्षे. का., रायपुर

अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा आयोजना सह समीक्षा बैठक 2025

केंद्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों, अंचल कार्यालयों, यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, बेंगलूरु, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं अंचलीय ज्ञानार्जन केंद्रों में पदस्थ बैंक के राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 9 एवं 10 जून, 2025 को (दो दिवसीय) अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा आयोजना सह समीक्षा बैठक 2025 का आयोजन यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, बेंगलूरु में किया गया। श्री गिरीश चंद्र जोशी, महाप्रबंधक (मां. सं. एवं रा.भा), कें.का., श्री कल्याण वर्मा, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख (अंचल कार्यालय, बेंगलूरु) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर श्री अक्षत तैलंग, प्राचार्य, यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा. भा) एवं श्री सुनील दत्त, मुख्य प्रबंधक (रा.भा), श्रीमती गायत्री रविकिरण, मुख्य प्रबंधक (रा.भा) एवं संपादक-यूनियन धारा एवं सृजन भी उपस्थित रहीं। डॉ. राजेश श्रीवास्तव, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ऑनलाइन जुड़कर कंठस्थ 2.0 के संबंध में विस्तृत सत्र लिया गया। इस सम्मेलन में बैंक के 127 राजभाषा प्रभारियों ने भाग लिया। वित्तीय वर्ष 2023-24 और 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु अंचल कार्यालयों और क्षेत्रीय कार्यालयों को राजभाषा शील्ड पुरस्कार, जिसका नामकरण सेठ सीताराम पोद्दार राजभाषा शील्ड किया गया है, से सम्मानित किया गया। साथ ही क्षेत्रीय गृह पत्रिकाओं का विमोचन किया गया। इस सम्मेलन के हरित स्मृति स्वरूप कार्यपालकों और प्रतिभागियों द्वारा पौधारोपण किया गया।

यूनियन बैंक
ऑफ इंडिया
VYOM
Mobile Banking Super App
अखिल भारतीय
एवं आयोजना
09–10 जून, 2025

यूनियन बैंक
Union Bank
of India

जेन - ज़ी और बैंक

हमारे समय में बैंक का मतलब होता था – पासबुक लेकर शाखा जाना, चेक जमा करना और लंबी कतारों में खड़े रहकर अपने नंबर का इंतजार करना। किसी से अगर पूछा जाए कि बैंकिंग का पहला अनुभव कैसा था, तो अधिकतर लोग यही कहेंगे कि थोड़ा डर, थोड़ा संकोच और बहुत सारी औपचारिकताएं। लेकिन आज जब हम युवाओं को बैंक से जुड़ते हुए देखते हैं, तो लगता है कि समय कितना बदल गया है। अब बैंकिंग सिर्फ जरूरत नहीं रह गई, यह एक अनुभव बन गया है – और उस अनुभव में तकनीक, सुविधा और व्यक्तिगत जुड़ाव की बहुत अहम भूमिका हो गई है।

आज का युवा, जिसे हम जेनरेशन ज़ी कहते हैं, एक बिल्कुल नई सोच और शैली के साथ आगे बढ़ रहा है। ये वे बच्चे हैं जो मोबाइल, इंटरनेट और डिजिटल दुनिया के बीच बड़े हुए हैं। उनके लिए तकनीक नई नहीं है, बल्कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा है। यही कारण है कि जब वे बैंक से जुड़ते हैं, तो उनकी उम्मीदें भी परंपरागत ग्राहकों से अलग होती हैं। वे बैंक को एक डिजिटल साथी की तरह देखते हैं, जिससे वे कभी भी, कहीं भी जुड़ सकते हैं।

मैं जब भी किसी युवा ग्राहक को पहली बार बैंक खाता खोलते हुए देखता हूँ, तो उसमें उत्सुकता और समझ का एक अनोखा मेल दिखाई देता है। वह सब कुछ जानना चाहता है – बैंकिंग सेवाओं के बारे में, फीस के बारे में, लाभों के बारे में। वह सवाल करता है, तुलना करता है और खुद निर्णय लेता है। यह आत्मनिर्भरता आज के युवाओं की सबसे बड़ी ताकत है।

बैंकिंग अब केवल पैसे जमा करने या निकालने का जरिया नहीं रही। आज का युवा सेविंग अकाउंट के साथ ही म्यूचुअल फंड, एसआईपी, डिजिटल गोल्ड और बीमा की बात करता है। कई बार तो हमें भी लगता है कि हमसे बेहतर उसे इन उत्पादों की जानकारी है! ऐसे में हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि हम उन्हें न केवल सही जानकारी दें, बल्कि उनके सवालों को समझें और उनके हिसाब से समाधान दें।

तकनीक ने बैंकिंग को जितना बदला है, उतना शायद ही किसी और क्षेत्र ने देखा हो। अब मोबाइल एप्लिकेशन के ज़रिए खाता खोलना, लोन के लिए आवेदन करना, और यहां तक कि निवेश करना भी आसान हो गया है। कई बैंक तो ऐसे ऐप्स लेकर आ रहे हैं जो देखने में आकर्षक, उपयोग में सरल और पूरी तरह से ग्राहक-अनुकूल होते हैं। युवा ग्राहक इन ऐप्स से खुद ही सब कुछ करना पसंद करते हैं – वे शाखा आने की बजाय मोबाइल से ही समाधान ढूंढ़ना पसंद करते हैं।

यही कारण है कि अब बैंक भी मोबाइल-फर्स्ट रणनीति अपना रहे हैं। वे ऐसी सेवाएं ला रहे हैं जो सिर्फ सुविधा नहीं देतीं, बल्कि ग्राहक को जुड़ाव का अनुभव भी देती हैं। जैसे कि कुछ ऐप्स खर्च का विश्लेषण करके बताते हैं कि आप हर महीने कहाँ और कितना खर्च कर रहे हैं। कुछ ऐप्स आपको छोटे-छोटे लक्ष्यों के लिए सेविंग करने की प्रेरणा देते हैं – जैसे एक हफ्ते तक बाहर खाना न खाएं और 500 रुपए बचाएं। यह सब चीज़ें युवाओं को न सिर्फ वित्तीय रूप से मजबूत बनाती हैं, बल्कि उन्हें सोचने और प्लान करने की आदत भी देती हैं।

एक और बदलाव जो मैंने देखा है, वह यह कि युवा पीढ़ी अब सिर्फ अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए बैंक से नहीं जुड़ती, बल्कि वे उस संस्थान की सोच, दृष्टिकोण और जिम्मेदारी को भी देखती है। वे जानना चाहते हैं कि बैंक पर्यावरण के लिए क्या कर रहा है, समाज के प्रति उसका दृष्टिकोण कैसा है, और क्या वह पारदर्शी है या नहीं। इसीलिए अब बैंक भी "ग्रीन बैंकिंग" जैसे कदम उठा रहे हैं – पेपरलेस बैंकिंग, ग्रीन फंडिंग और ईको-फ्रेंडली नीतियों को अपनाया जा रहा है।

मुझे याद है कि कुछ समय पहले एक कॉलेज छात्र हमारे बैंक में अकाउंट खोलने आया। उसने खाता खोलने से पहले कुछ बहुत खास सवाल पूछे – "क्या आप लोग प्लास्टिक डेबिट कार्ड की जगह वर्चुअल कार्ड देते हैं?", "आपकी सीएसआर नीति क्या है?", "क्या आप सस्टेनेबल फाइनेंसिंग में निवेश करते हैं?" पहले कभी किसी ग्राहक ने इस तरह के सवाल नहीं किए थे। उस दिन मुझे लगा कि अब ग्राहक केवल ग्राहक नहीं रहा, वह एक ज़िम्मेदार नागरिक बन गया है – और बैंक को भी उसी जिम्मेदारी के साथ जवाब देना होगा।

नियोबैंक और फिनटेक कंपनियों का उभरना भी इस बदलाव का हिस्सा है। ये संस्थाएं पूरी तरह से डिजिटल हैं और युवाओं को लक्षित करके बनाई गई हैं। वे तेज़ सेवाएं, यूजर-फ्रेंडली प्लेटफॉर्म और आधुनिक अनुभव देती हैं। पारंपरिक बैंक भी अब इनसे सीखते हुए अपने सिस्टम को बेहतर बना रहे हैं। जैसे हमारी बैंक की व्योम या एसबीआई की योनो जैसी एप्लिकेशन, जो युवा ग्राहकों के लिए एक समर्पित डिजिटल अनुभव देने की कोशिश कर रही हैं।

सोशल मीडिया का उपयोग भी अब बैंकिंग में बढ़ गया है। पहले जहां विज्ञापन अखबारों और ब्रोशर तक सीमित थे, वहीं अब बैंक इंस्टाग्राम, यूट्यूब और एक्स जैसे प्लेटफॉर्म पर सक्रिय हो गए हैं, जिनपर वे न केवल अपनी सेवाओं का प्रचार करते हैं, बल्कि वित्तीय शिक्षा, जानकारी और जागरूकता भी फैलाते हैं। आज के युवा इन्हीं माध्यमों से जानकारी लेते हैं, और यदि हम उनसे जुड़ना चाहते हैं, तो हमें उन्हीं के मंच पर जाना होगा।

ये सब बदलाव केवल सुविधा देने के लिए नहीं हैं, बल्कि विश्वास बनाने के लिए हैं। युवा ग्राहक को यदि कोई चीज़ पसंद नहीं आई, तो वे तुरंत सोशल मीडिया पर अपनी राय रख देते हैं, या फिर किसी और प्लेटफॉर्म की ओर रुख कर लेते हैं। इसलिए बैंक को लगातार गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार बनाए रखना पड़ता है। यही बात हमें हर दिन सीखने और बदलने की प्रेरणा देती है।

बैंक में काम करते हुए मुझे यह भी समझ में आया कि युवा ग्राहक हमेशा कुछ नया और सरल चाहते हैं, लेकिन साथ ही वे यह भी चाहते हैं कि बैंक उनकी बात सुनें, उन्हें समझें और उनके सवालों का सम्मान के साथ जवाब दे। वे अधिकार मांगते हैं, लेकिन जिम्मेदारी भी निभाते हैं। अगर हम उन्हें सही जानकारी दें, सही मार्गदर्शन दें और सही सेवा दें, तो वे हमारे सबसे भरोसेमंद और लंबे समय तक जुड़े रहने वाले ग्राहक बन सकते हैं।

भविष्य में जैसे-जैसे यह पीढ़ी नौकरी में आएगी, व्यापार करेगी, और बड़े निर्णय लेगी – बैंकिंग की ज़रूरतें और बढ़ेंगी। हो सकता है आने वाले समय में बैंकिंग और भी डिजिटल हो जाए, वॉयस कमांड या वर्चुअल रियलिटी से बैंकिंग हो, लेकिन एक बात नहीं बदलेगी – ग्राहक का भरोसा। और यही भरोसा हमारी सबसे बड़ी पूंजी है।

यह केवल एक विषय पर विचार नहीं, बल्कि एक ऐसा बदलाव है जिसका मैं खुद गवाह हूँ। एक बैंक कर्मचारी होने के नाते यह गर्व की बात है कि हम इस बदलाव का हिस्सा हैं और हम वह पीढ़ी हैं जो पुरानी परंपराओं से लेकर आधुनिक तकनीक तक, दोनों को जोड़ने का काम कर रही है।

अगर हम आगे भी ऐसे ही सीखते रहें, बदलते रहें और ग्राहक की ज़रूरतों को समझते रहें, तो हमें कोई रोक नहीं सकता ।

बिपिन कुमार भगत
क्षे. का., पुणे-मेट्रो

काश ! तुम होती माँ !

काश ! तुम होती माँ !
तो कितना अच्छा होता

मेरी नादानियों पर हंसने
मेरी बदमाशियों को माफ़ करने
मेरी तनहाइयों को दूर करने
काश ! तुम होती माँ !

पाठशाला के दरवाज़े पर
नज़रें तुम्हें ढूँढती थी माँ,
विदाई के वक़्त मुझसे लिपट
तुम खूब रोती थी माँ,

आज जब कोई कहता है न
"तेरी माँ ने कुछ सिखाया नहीं है
क्या ?"
मैं तो जवाब नहीं दे पाती
पर उनको जवाब देने
काश ! तुम होती माँ !

दोस्तों की मम्मा में
तुम्हें ढूँढती रहती हूँ
कैसा बनाती तुम खाना
सोचती रहती हूँ,

सब कहते हैं
माँ के हाथ के खाने में जादू होता है !
यह जादू मेरे पास भी होता,
काश ! तुम होती माँ !

जब मैं सजती
तुम मुझे काला टीका लगाती
दुनियां की गंदी नज़रों से
तुम मुझे बचाती !

मेरे सारे दोस्तों-सहेलियों के बीच
मेरी मम्मा यह मेरी मम्मा वोह
कह के मैं भी ख़ूब रौब जमाती
काश ! तुम होती माँ !

मेरी बीमारियों में
तेरे आँचल में मैं छुप जाती !
जब मन उदास होता
तेरे अलावा किसको मैं बताती !
काश ! तुम होती माँ !

तुमको माँ, मम्मा, मम्मी, अम्मा
कह कर पुकारने को
बहुत तरसती हूँ
काश ! तुम होती माँ !

अकेले में तुम्हें याद कर के मैं बहुत रोती हूँ
तुम मिलो मुझे अगले जन्म यही दुआ
करती हूँ !

श्वेता चौधरी
अं.का., मुंबई

मूडु वेलु

3 जुलाई 2023 — जब मैंने इस बैंक में अपने करियर की शुरुआत की थी और आज, उस दिन से करीब दो साल बाद, 21 मई 2025 का यह दिन है, जब मुझे सच में एहसास हुआ है कि मैं कितनी बेहतरीन जगह पर हूँ।

कुछ दिन पहले ही मेरा स्थानांतरण तेलंगाना के एक सुदूर गांव की हाजीपुर शाखा में हुआ। बीते सालों में इस बैंक की नौकरी को देखने का मेरा नजरिया काफी बदल गया था। शुरुआती दिनों में तो बस इस खुशी से ही फूला नहीं समाता था कि मेरा एक अपना काउंटर है। मैं इस काबिल हूँ कि लोगों की मदद कर सकता हूँ, मेरी भी कुछ अहमियत है। मगर अब इन सब बातों का महत्व मुझे थोड़ा कम लगने लगा था।

शुरुआत से ही छोटी-छोटी शाखाओं में पोस्टिंग मिलती रही। कुछ ऐसा अलग नहीं कर पाया, या मुझे ऐसा लगता था कि मैं कुछ खास नहीं कर पाया, जिससे एहसास हो कि कुछ नया, कुछ विशेष किया हो। मेरे मित्र, जो बड़ी-बड़ी स्केल 3 और स्केल 4 शाखाओं में कार्यरत हैं, बताते थे कि आज उन्होंने बी.जी. की रिक्वेस्ट प्रोसेस की, कोई कहता था आज मैंने फॉरेन रेमिटेंस भेजी। और मैं? मैं बस पासबुक एंट्री और बैलेंस इंक्वायरी तक ही सीमित था।

यहां हाजीपुर शाखा में भी ज़्यादातर लोग मुझसे बस बैलेंस इंक्वायरी ही करने आते थे। कई बार मैंने समझाया कि सिर्फ बैलेंस जानने के लिए शाखा तक आने की ज़रूरत नहीं है। आप अपने फोन से नेट बैंकिंग, मोबाइल ऐप या यहां तक कि व्हाट्सएप से भी बैलेंस देख सकते हैं। मगर गांव के ज़्यादातर लोगों को शायद तब तक भरोसा नहीं होता जब तक वो किसी बैंक अधिकारी की ज़ुबानी अपना बैलेंस न सुन लें।

बीते दो सालों में मैंने थोड़ी बहुत तेलुगु भी सीख ली थी क्योंकि अक्सर जो लोग पासबुक प्रिंट भी कर लेते थे, वे मुझसे आकर एक बार ज़रूर बोलते थे — "ओक सारी अमाउंट चूसि चेप्तारा?" मतलब — एक बार अकाउंट का अमाउंट देखकर बता देना। मैंने भी तेलुगु की संख्याएं सीख ली थीं... ओकटी, रेण्डु, मूडु... ताकि मैं उन्हें उनके अकाउंट का बैलेंस बता सकूं।

सच बताऊं तो बीते दिनों ज़िंदगी काफी नीरस हो गई थी। मगर आज कुछ ऐसा हुआ जिसने मेरे इस स्वरचित दुख को पूरी तरह से खत्म कर दिया — और इस काम को देखने का मेरा नज़रिया ही बदल गया।

आज बुधवार था। आमतौर पर इस दिन भी ठीक-ठाक भीड़ होती है, मगर आज थोड़ी कम थी। मैं रोज़ाना के काम के साथ-साथ अपनी टूटी-फूटी तेलुगु में ग्राहकों को बैलेंस भी बता रहा था। दोपहर के करीब 3:00 बज रहे थे कि तभी दरवाज़े से एक परिवार भीतर प्रवेश करता है।

ऐसे तो रोज़ कई परिवार शाखा में आते हैं, मगर इस परिवार में कुछ खास था जिसने मेरा ध्यान खींचा। पति-पत्नी और महिला की गोद में लगभग दो-तीन साल की एक छोटी बच्ची। उस वक्त बैंक में भीड़ थोड़ी बढ़ गई थी, मगर मेरी नज़र उन्हीं पर टिकी रही। उन्हें देखकर लग रहा था जैसे अपने अंदर कितने ही समंदर छुपाए हुए हों। वे थके हुए, परेशान से लग रहे थे। उन्हें देखकर पता नहीं क्यों मन में एक अजीब सी भावना जागी — अब वह सहानुभूति थी या दया, यह नहीं जानता। और अगर थी भी, तो क्यों — यह भी नहीं पता।

अब वे दंपती एकदम मेरे काउंटर के सामने खड़े थे, मगर कुछ पूछने में शायद हिचक रहे थे। इसलिए मैंने अपनी लड़खड़ाती तेलुगु में पूछा — "चेप्पंडी अम्मा, एम कावाली?" (बताइए मैडम, क्या चाहिए?)

मेरे बोलने के बाद थोड़ा घबराते हुए उन्होंने कहा — "सर, ओक्क सारि चूसि चेप्तारा एंत डब्बु उंदि?" (सर, एक बार देख कर बताना कि मेरे खाते में कितने पैसे हैं?) इतना कहकर उन्होंने अपनी पासबुक मेरी ओर बढ़ा दी।

मैं समझ गया था कि इनके सिर पर जरूर कोई आर्थिक समस्या मंडरा रही है। पासबुक की हालत देखकर यह भी समझ गया कि यह शायद किसी अलमारी के कोने में पड़ी हुई थी, जिस पर आज ही उनकी नज़र पड़ी है। और अब उन्हें उम्मीद है कि इसमें रखे पैसे से कुछ राहत मिल जाएगी।

हालांकि बैलेंस इंक्वायरी करने में अब मेरी कोई विशेष रुचि नहीं बची थी, मगर उनके अकाउंट में ज़्यादा से ज़्यादा पैसे हों — इसकी दुआ मैं अंदर ही अंदर कर रहा था। सोच रहा था कि काश इनके खाते में कुछ बड़ी रकम हो और जब मैं बताऊं, तो वे खुश हो जाएं।

मैंने पासबुक ली। उनके चेहरे पर एक अजीब सी घबराहट थी। जैसे-जैसे मैं अकाउंट नंबर सिस्टम में दर्ज कर रहा था, वैसे-वैसे उनकी मुट्ठियां और कसती जा रही थीं। लग रहा था जैसे मेरे बैलेंस बताने से कोई अनहोनी घटने वाली हो।

आख़िरकार, जब मैंने अंतिम अंक दर्ज कर एंटर दबाया, सामने जो बैलेंस आया — वह था महज ₹3000।

मैं अंदर ही अंदर बहुत दुखी हो गया — "भगवान, बस ₹3000? इससे क्या होगा? कुछ तो जादू कर देते... ज़रूरतमंद हैं ये लोग!"

शायद उन्हें पहले से ही अंदाज़ा था कि

उनके खाते में बहुत कम राशि है। तभी तो वे इतने घबराए हुए थे।

ख़ैर, मैंने अपनी उदासी छुपाते हुए, उन्हें उनका बैलेंस बताया —

"अम्मा, अकाउंट लो मूडु वेलु उंदी।"

(मैडम, आपके खाते में तीन हजार रुपये हैं।)

मगर उनकी प्रतिक्रिया मेरी सोच के एकदम विपरीत थी।

मेरा इतना कहना भर था कि उनकी आंखें चमक उठीं।

थोड़ा भावनाओं को काबू करते हुए महिला ने एक बार फिर सुनिश्चित करने के लिए पूछा —

"निजंगना? ना अकाउंट लो मूडु वेलु उन्नाया, अब्बा!"

(सच में? मेरे खाते में पूरे 3 हजार रुपये हैं?)

मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था, मगर एक अलग अनुभूति ज़रूर थी।

उनकी वह मुट्ठी, जो कुछ देर पहले तक कसती जा रही थी, अब धीरे-धीरे खुलने लगी थी।

चिंता से भरी उनकी परेशानी का रंग अब मानो सुनहरा हो गया था — चिंता मुक्त।

वो अब खुश लग रहे थे।

मैंने फिर महिला को देखा — अब उनके चेहरे पर चिंता नहीं, एक सच्ची खुशी थी।

ऐसी खुशी, जो शायद किसी करोड़पति की आंखों में कभी न मिले।

उनकी बेटी, जो अब तक चुप थी, अब खिलखिला रही थी।

शायद उस नन्ही जान ने भी महसूस कर लिया था कि कुछ अच्छा हुआ है।

वह मायूस परिवार अब अत्यंत प्रसन्न होकर अपने खाते से "मूडु वेलु" लेकर जा चुका था — और शायद अपनी चिंताओं को भी अलविदा कह रहा था।

उन्हें गए करीब आधा घंटा हो चुका था, मगर वे जैसे मेरे दिल में हमेशा के लिए बस गए थे। और मुझे सिखा गए थे — "मूडु वेलु" की अहमियत। मेरे ओहदे की अहमियत।

उन्होंने आज मुझे यह अनुभूति कराई थी कि मेरी जॉब डिस्क्रिप्शन में "खुशियों का डाकिया" बनना भी शामिल है।

आज से मेरे लिए यह एक बैलेंस इंक़ायरी — उन लाखों कॉर्पोरेट लेनदेनों से कहीं ज़्यादा कीमती हो गई थी, जिनकी तुलना में मैं अक्सर अपने काम को छोटा मानता था।

और उसी के साथ, सबसे बहुमूल्य हो गई थी वह संख्या — " मूडु वेलु "!!!

प्रत्युश राज
क्षे. का., करीमनगर

बहुत दिन हो गए

बहुत दिन हो गए.....
सोचता हूँ बहुत दिन हो गए ।
चार दोस्त और वो स्कूल का मैदान.....
क्रिकेट खेले बहुत दिन हो गए ।

आज पैसे तो है...
पर गेंद खरीदे बहुत दिन हो गए।
याद है वो गर्मी...छत पर बैठ कर
चाँद-तारों को निहारते हुए बचपन की बातें,

रात तो आज भी है, पर.....
वो कहानियां-किस्से सुने बहुत दिन हो गए।

नई कॉपियों सी सवारनें चले हैं ज़िंदगी को....
नए जिल्द पर जिल्द लगा के,
अब जिल्द की ख़ुशबू कम ही आती है ज़िंदगी में.....
वो ख़ुशबू पाए बहुत दिन हो गए।

नादान था वो बचपन,
बेपरवाह से जिए हैं जिसको,
पढ़ के समझदार तो हो गए..पर बेपरवाह नासमझ में भी
ज़िंदगी के मजे लिए बहुत दिन हो गए।

झगड़ना..लड़ना..चीख़ना,..चिल्लाना तो आज भी आता है,
पर आज मानना और मनाना भूल गए है,
कोई आज लड़ के मना ले और ख़ुद भी मान जाए....
ऐसे लड़े बहुत दिन हो गए ।
उस बचपन को छोड़कर बहुत आगे आ गए,
उस मासूम से बचपन को जिए बहुत दिन हो गए।

धनंजय कुमार
अं. का., भोपाल

कार्य-जीवन संतुलन

व्यावसायिक उत्कृष्टता और व्यक्तिगत कल्याण के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता

आज के तेज़ गति वाले कार्य परिवेश में, कार्य-जीवन संतुलन (वर्क-लाइफ बैलेंस) एक वैयक्तिक विकल्प नहीं, बल्कि एक रणनीतिक आवश्यकता बन गया है। विशेष रूप से बैंक कर्मियों के लिए, जिनकी भूमिका में जिम्मेदारियाँ, समय-सीमाएँ और निर्णयात्मक दबाव शामिल होते हैं, कार्य और जीवन के मध्य संतुलन बनाना एक जटिल किंतु अत्यंत आवश्यक प्रयास है। कार्य-जीवन असंतुलन के परिणाम दूरगामी होते हैं—यह न केवल कार्यक्षमता को प्रभावित करता है, बल्कि मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, पारिवारिक जीवन और सामाजिक संबंधों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

बदलते कार्य परिवेश की वास्तविकता

डिजिटलीकरण, वैश्वीकरण और लचीले कार्य मॉडल ने कार्य संस्कृति को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। एक अधिकारी के लिए अब कार्य का समय सीमित नहीं रहा। ईमेल, मैसेजिंग ऐप और कॉल के माध्यम से चौबीसों घंटे संपर्क में रहने की अपेक्षा एक आम बात बन चुकी है। कार्यस्थल और घर के बीच की रेखा धुंधली हो चुकी है, जिससे मानसिक थकावट और निरंतर तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

असंतुलन की लागत

कार्य और जीवन के मध्य संतुलन की अनुपस्थिति अनेक नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है। व्यक्तिगत स्तर पर, यह तनाव, अनिद्रा, उच्च रक्तचाप, अवसाद और अन्य मानसिक समस्याओं को जन्म देता है। जब कोई अधिकारी लगातार मानसिक दबाव में कार्य करता है, तो उसका निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व कौशल और रचनात्मकता प्रभावित होती है।

संगठनात्मक दृष्टिकोण से देखें तो यह कर्मचारी की कार्य-निष्ठा, उत्पादकता और स्थायित्व को नुकसान पहुँचाता है। थके हुए और मानसिक रूप से असंतुलित अधिकारी से उच्च प्रदर्शन की अपेक्षा करना अव्यावहारिक है।

कार्य-जीवन संतुलन के मुख्य स्तंभ

1. **समय प्रबंधन:**

   संतुलन का आधार कुशल समय प्रबंधन है। प्राथमिकताओं को पहचानना, कार्यों को विभाजित करना, और समय को सुव्यवस्थित करना अधिकारी के लिए आवश्यक है। हर कार्य आवश्यक नहीं होता; कुछ कार्यों को टालना या सौंपना विवेकपूर्ण होता है।

2. **सीमाओं की स्थापना :**

   व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के बीच स्पष्ट सीमाएं बनाना अनिवार्य है। कार्य समय समाप्त होने के बाद काम से संबंधित संपर्क सीमित करें। परिवार के साथ समय बिताने के दौरान डिजिटल उपकरणों से दूरी बनाए रखें।

3. **आराम और पुनर्निर्माण:**

   निरंतर कार्य करने से उत्पादकता नहीं बढ़ती, बल्कि घटती है। पर्याप्त नींद, अवकाश, और विश्राम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर रहता है। ध्यान, व्यायाम और योग जैसे साधन मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं।

4. **गुणवत्तापूर्ण व्यक्तिगत समय (क्वालिटि पर्सनल टाईम):**

   परिवार, मित्रों और आत्मिक गतिविधियों के साथ बिताया समय जीवन में ऊर्जा और संतुलन लाता है। यह भावनात्मक मजबूती प्रदान करता है और कार्यस्थल में अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक होता है।

5. **संस्थागत समर्थन (इनस्टीट्यूशनल समर्थन):**

   कार्यस्थल की नीतियों में संतुलन को प्रोत्साहित करने वाली व्यवस्थाएँ होनी चाहिए—जैसे लचीला समय, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, और सम्मानजनक कार्यसंस्कृति। जब शीर्ष अधिकारी स्वयं संतुलन को प्राथमिकता देते हैं, तब नीचे तक इसकी मिसाल जाती है।

प्रौद्योगिकी: सहायक या बाधा?

प्रौद्योगिकी एक दोधारी तलवार है। एक ओर यह कार्य को सुगम बनाती है, दूसरी ओर यह कार्य को 24x7 उपलब्धता की ओर धकेल देती है। अतः इस बात को पहचानना होगा कि कब जुड़े रहना है और कब खुद को अलग करना है।

सही तकनीकी उपकरण जैसे कैलेंडर ऐप, कार्य प्रबंधन सॉफ्टवेयर, और सहयोगी प्लेटफ़ॉर्म का विवेकपूर्ण उपयोग कार्यप्रवाह को सरल बनाता है, लेकिन इनका अति प्रयोग मानसिक थकावट को जन्म दे सकता है।

मनोवैज्ञानिक पक्ष

कार्य-जीवन संतुलन केवल भौतिक स्थिति नहीं, एक मानसिक स्थिति भी है। इसमें स्वयं से और दूसरों से अपेक्षाओं का संतुलन भी शामिल है। अधिकारी अक्सर पूर्णता की आकांक्षा और जिम्मेदारी के दबाव में अपने ऊपर अतिरिक्त भार डाल लेते हैं। यथार्थवादी लक्ष्य, आत्म-संवेदना और मानसिक लचीलापन आवश्यक हैं।

सकारात्मक सोच, आत्म-निरीक्षण, और नियमित "स्वास्थ्य समीक्षा" की प्रक्रिया अपनाने से संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलती है।

नेतृत्व और उदाहरण प्रस्तुत करना

वरिष्ठ बैंक कर्मियों की भूमिका केवल स्वयं का संतुलन बनाए रखने तक सीमित नहीं होती; उन्हें पूरी टीम के लिए उदाहरण बनना होता है। जब एक अधिकारी अपने अवकाश का सम्मान करता है, समय पर कार्य समाप्त करता है, और दूसरों के व्यक्तिगत जीवन का आदर करता है, तो यह एक प्रेरणात्मक संस्कृति विकसित करता है। परिणाम आधारित कार्य संस्कृति, विश्वास आधारित प्रबंधन, और सहानुभूति से भरा नेतृत्व संतुलन को प्रोत्साहित करता है।

विशेष क्षेत्रों में संतुलन की चुनौती

सैनिक, पुलिस, आपातकालीन सेवा और प्रशासनिक पदों पर कार्यरत कर्मियों को संतुलन बनाए रखना अधिक चुनौतीपूर्ण होता है, क्योंकि उनका कार्य कभी-कभी अनिश्चित और निरंतर होता है। परंतु, यह पूरी तरह असंभव नहीं है। कार्य की प्रकृति के अनुसार संतुलन के लचीले मॉडल अपनाए जा सकते हैं—जैसे रोटेशन नीति, अवकाश के बाद पुनर्संयोजन, और परिवार के साथ बेहतर संवाद।

कार्य-जीवन एकीकरण: एक नया दृष्टिकोण

आज के युग में कार्य-जीवन एकीकरण की अवधारणा सामने आई है, जिसमें कार्य और निजी जीवन को विरोधी नहीं, पूरक माना जाता है। उदाहरणस्वरूप, दोपहर में पारिवारिक दायित्व निभाकर शाम को कार्य पूरा करना, या कार्यस्थल पर स्वास्थ्य गतिविधियों को अपनाना।

यह दृष्टिकोण अधिकारी को अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के अनुरूप संतुलन बनाने की स्वतंत्रता देता है, विशेषतः उन क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक संतुलन कठिन हो।

कार्य-जीवन संतुलन एक व्यक्तिगत लक्ष्य भर नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक उत्तरदायित्व है। एक संतुलित कर्मी ही दीर्घकालिक रूप से प्रभावशाली नेतृत्व कर सकता है, तर्कसंगत निर्णय ले सकता है और स्वस्थ रह सकता है। यह केवल समय प्रबंधन नहीं, एक मानसिक और सांस्कृतिक परिवर्तन है।

जब संतुलन को प्राथमिकता दी जाती है, तो कार्मिक न केवल स्वयं के जीवन को समृद्ध करते हैं, बल्कि अपने संगठन को भी मजबूत आधार प्रदान करते हैं। आज के अनिश्चित और प्रतिस्पर्धात्मक कार्य-विश्व में, कार्य-जीवन संतुलन ही वह स्तंभ है जो व्यक्ति को केंद्र में रखता है, और यही वास्तविक नेतृत्व की पहचान है।

तेज पाल सिंह
क्षे. का., आगरा

राही...

हम कल के मुसाफ़िर हैं
और कहानी कठपुतली सी
बस जुड़े रहे कुछ जिंदगी के पलों से
कल के मुसाफ़िर थे

कारवां भी साथ ले चलना पड़ा
कहीं डगर से भटकाव..
कहीं डगर पर भटकाव..
पर डगर के किनारे ही चलना पड़ा

कहीं मेहनत का परिणाम न मिला
कहीं बिना मेहनत के ही फल मिला
जिंदगी की भूख मानो या पेट की
उलझा दोनों ने ही अपनी जाल में
रखा,

न होना मायूस इस कशमकश में,
मेहनतकश है तेरी पहचान
आगे डगर भी तेरी है
ज़िन्दगी भी तेरी है

यही है राही की पहचान,
रास्ता बना और पहचान बना
फिर देख तेरी बनाई और
तेरी चुनी मंजिल राही,

चल पड़े हैं तो रुकना कैसा,
हर मोड़ पर रोशनी तेरा साथ देगी।
काँटे भी बिछे होंगे राहों में,
मगर तेरी जिद उन्हें भी मात देगी।

जगदेश्वर
पेटलाद-3 शाखा,
क्षे.का., आणंद

मानसून के लिए स्वास्थ्य सलाह

वर्षाकाल में मनुष्य सहित सभी प्राणियों को आनंद का अनुभव होता है। साथ ही दैनिक आधार पर शारीरिक गतिविधि सीमित होती है। वर्षा के मौसम में नमी और इससे वातावरण में होने वाली गंदगी के कारण संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में हमारा सजग न होना कई बीमारियों को न्यौता दे सकता है। मानसून का मौसम सुहाना जरूर होता है, लेकिन इसके साथ कई स्वास्थ्य चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं। व्यस्त पेशेवरों को इस मौसम में अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। मानसून की समस्याओं से निपटने के कुछ सार्थक उपाय निम्नलिखित हैं :

1. बरसात के मौसम में व्यर्थ के कार्यों के लिए बाहर न निकलें

अचानक बारिश में भीग जाते हैं, तो यह सर्दी, खांसी और वायरल बुखार का कारण बन सकता है। इसलिए हमेशा छाता, रेनकोट और यथा समय अतिरिक्त कपड़े अपने पास रखें। यदि आप भीग जाते हैं, तो तुरंत खुद को सुखाएं और कपड़े तथा जूते बदलें। गीले जूते बैक्टीरिया और फंगल इंफेक्शन का घर बन जाते हैं।

2. शारीरिक गतिविधियों में सक्रियता बनाए रखें

लंबे समय तक बैठें रहने से शरीर में जकड़न और मोटापा हो सकता है। बरसात के मौसम में बाहर जाकर व्यायाम करना मुश्किल हो जाता है, ऐसे में घर पर ही बहुत कुछ किया जा सकता है। हर थोड़े समय में चलें-फिरें बॉडी को स्ट्रेच करें। घर पर योग या हल्के स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज़ करें । यदि संभव हो तो सीढ़ियों का उपयोग करें।

3. पर्याप्त पानी पिएं

शरीर को हाइड्रेटेड रखना बेहद जरूरी होता है। शरीर में पानी की कमी से थकान, सिरदर्द और पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। दिन में कम से कम 8 गिलास पानी जरूर पिएं। उबला हुआ या फिल्टर किया हुआ पानी ही पिएं। नारियल पानी और हर्बल चाय जैसे तरल पदार्थों का सेवन जरूर करें।

4. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं

मानसून के मौसम में वायरल संक्रमण, डेंगू, मलेरिया और फ्लू जैसी बीमारियाँ अधिक फैलती हैं. इनसे बचने के लिए शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाना ज़रूरी है। घरेलू काढ़ा अर्थात अदरक, हल्दी, शहद और तुलसी से बना काढ़ा पिएं। भोजन में हल्दी और लहसुन का उपयोग बढ़ाएं । पर्याप्त नींद लें और तनाव से दूर रहें।

5. संतुलित और ताजा भोजन ही लें

बरसातों में अक्सर पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है और बाहर का खाना बीमारियों को न्योता देता है। घर का बना ताजा और हल्का भोजन ही खाएं, जहां तक संभव हो बाहर का खाना न खाएं। नींबू, आंवला, संतरा जैसे विटामिन सी युक्त फल जरूर खाएं ताकि आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बनी रहे।

6. स्वच्छता बनाए रखें

बरसात के मौसम में नमी के कारण बैक्टीरिया, वायरस और फंगस का विकास तेजी से होता है। इस प्रकार संक्रमण का खतरा और भी अधिक हो जाता है। दिन में कई बार हाथ धोएं या सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करें। अपने घर एवं कार्यालय को साफ-सुथरा रखें। अपने कम्प्युटर, कीबोर्ड, माउस, डेस्क और फोन को नियमित रूप से साफ करें। गंदे और गीले कपड़े तुरंत बदलें।

7. त्वचा और बालों का विशेष ध्यान रखें

मानसून में नमी के कारण त्वचा चिपचिपी हो जाती है और बाल झड़ने लगते हैं। रोज़ाना नहाएं और त्वचा को सूखा रखें। हल्के मॉइस्चराइज़र और औषधीयुक्त साबुन का इस्तेमाल करें। बालों को सूखा रखें और हफ्ते में कम से कम दो बार बाल धोएं।

8. मानसिक स्वास्थ्य को अनदेखा न करें

बरसात के मौसम में धूप की कमी के कारण चिड़चिड़ापन और सुस्ती आ सकती है। तनावपूर्ण कार्यशैली में मानसिक स्वास्थ्य को अनदेखा करना खतरनाक हो सकता है। सुबह की शुरुआत ध्यान या प्राणायाम से करें। संगीत सुनें या पढ़ाई जैसे रचनात्मक शौक अपनाएं। ऑफिस के बाहर सहकर्मियों से सामाजिक रूप से जुड़ें, हंसी-मजाक करें।

9. हाथ-पैर का विशेष ध्यान रखें

मानसून में फंगल इंफेक्शन सामान्य बात है, विशेष रूप से पैरों में। लंबे समय तक गीले जूते और मोज़े पहनने से संक्रमण फैल सकता है। जूतों को सूखा रखें और रोज़ बदलें, कार्यालय जाते समय चप्पल या सेंडल का प्रयोग कर सकते हैं । सूती मोज़े पहनें और नियमित रूप से धोएं। रोज़ पैरों को अच्छे से धोकर सुखाएं और एंटीफंगल पाउडर का इस्तेमाल करें।

थोड़ी सी जागरुकता और नियमित स्वास्थ्य देखभाल के जरिए आप न केवल बीमारियों से बच सकते हैं, बल्कि मानसून का आनंद भी ले सकते हैं।

नरेंद्र कुमार
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

खुश रहने के लिए पढ़ें किताबें

किताबें पढ़ना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। यदि आप अपनी दिनचर्या में पुस्तक-पठन को शामिल करते हैं, तो इसका सकारात्मक प्रभाव अवश्य अनुभव करेंगे। डिजिटल युग में अध्ययन और मनोरंजन का अधिकांश भाग स्क्रीन के माध्यम से हो रहा है—किंडल, मोबाइल, लैपटॉप आदि के ज़रिये। इन दिनों ऑडियो बुक्स भी काफ़ी लोकप्रिय हो रही हैं। लेकिन, किताबों की सजी हुई अलमारियों में रखी पुस्तकों की गंध और उनके पन्ने पलटने का आनंद डिजिटल माध्यम में कहाँ मिल सकता है! यदि आप नियमित रूप से कुछ समय पढ़ने में व्यतीत करते हैं, तो इसके कई लाभों से अवश्य परिचित होंगे।

किताबें: सच्चे मित्र

ऐसा कहा जाता है कि किताबों से अच्छा कोई मित्र नहीं। जितनी अधिक किताबें पढ़ेंगे, उतनी ही अधिक जानकारी प्राप्त होगी। अलग-अलग स्थानों की संस्कृति, खान-पान, वेशभूषा, भाषा और सभ्यता से परिचित होने का अवसर मिलेगा। पुस्तकें हमें उन स्थानों तक पहुँचा देती हैं, जहाँ शारीरिक रूप से पहुँचना संभव नहीं होता। यदि बचपन से ही पढ़ने की आदत डाल ली जाए, तो यह भविष्य के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है।

मस्तिष्क के लिए पोषण

जिस प्रकार मांसपेशियों को सशक्त बनाने के लिए व्यायाम किया जाता है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए पौष्टिक आहार लिया जाता है, उसी प्रकार मस्तिष्क के विकास के लिए पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक है। अक्सर बढ़ती उम्र के साथ लोगों की स्मरण शक्ति कम होने लगती है, लेकिन जो लोग नियमित रूप से किताबें पढ़ते हैं, उनकी याद्दाश्त लंबे समय तक तेज बनी रहती है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि अध्ययन मस्तिष्क की सक्रियता बनाए रखने में सहायक होता है।

इसके अलावा, मानसिक तनाव और चिंता से बचाव के लिए भी किताबें पढ़ना फायदेमंद है। यह न केवल शरीर बल्कि मन और मस्तिष्क के लिए भी एक प्रकार का व्यायाम है। शोध बताते हैं कि जो ज्ञान पढ़ने के दौरान अर्जित किया जाता है, वह लंबे समय तक मस्तिष्क में अंकित रहता है। स्क्रीन पर पढ़ने की तुलना में किताबों के पृष्ठों को पलटना और उनमें दर्ज शब्दों को आत्मसात करना अधिक प्रभावी होता है।

संवेदनशीलता और सहानुभूति का विकास

अक्सर जब हम कोई अच्छी पुस्तक पढ़ते हैं, तो उसमें इस कदर खो जाते हैं कि पात्रों के सुख-दुःख को महसूस करने लगते हैं। उनके साथ मनोवैज्ञानिक रूप से जुड़ने लगते हैं। यह अनुभव व्यक्ति के भीतर सहानुभूति, संवेदनशीलता और विनम्रता को विकसित करता है। मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं कि दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता सामाजिक और मानवीय संबंधों के लिए आवश्यक गुणों में से एक है। किताबें पढ़ने वाले लोगों में यह क्षमता तुलनात्मक रूप से अधिक विकसित होती है।

अच्छी नींद के लिए सहायक

आजकल अधिकांश लोग सोने से पहले मोबाइल या अन्य डिजिटल स्क्रीन का उपयोग करते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि मोबाइल स्क्रीन से निकलने वाली ब्लू लाइट मस्तिष्क को सतर्क बनाए रखती है, जिससे नींद प्रभावित होती है। इसके विपरीत, यदि आप सोने से पहले किताब पढ़ते हैं, तो यह आपको मानसिक रूप से शांति प्रदान करती है और आपकी आँखें स्वाभाविक रूप से भारी होने लगती हैं। शोध बताते हैं कि पढ़ाई के कुछ ही मिनटों के भीतर तनाव लगभग 70% तक कम हो जाता है।

नियमित रूप से किताबें पढ़ने की आदत व्यक्ति के मानसिक विकास, भावनात्मक समृद्धि और संज्ञानात्मक क्षमता को बढ़ाती है। यह तनाव दूर करने, स्मरण शक्ति बढ़ाने और संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है। यदि आप खुशहाल जीवन चाहते हैं, तो अपने दैनिक जीवन में कुछ समय पुस्तक-पठन को अवश्य शामिल करें।

किताबें पढ़ना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। यदि आप अपनी दिनचर्या में प्रतिदिन कुछ समय पुस्तक-पठन को शामिल करते हैं, तो इसका सकारात्मक प्रभाव अवश्य अनुभव करेंगे। डिजिटल युग में अध्ययन और मनोरंजन का अधिकांश भाग स्क्रीन के माध्यम से हो रहा है—किंडल, मोबाइल, लैपटॉप आदि के ज़रिये। इन दिनों ऑडियो बुक्स भी काफ़ी लोकप्रिय हो रही हैं। लेकिन, किताबों की सजी हुई अलमारियों में रखी पुस्तकों की गंध और उनके पन्ने पलटने का आनंद डिजिटल माध्यम में कहाँ मिल सकता है! यदि आप नियमित रूप से कुछ समय पढ़ने में व्यतीत करते हैं, तो इसके कई लाभों से अवश्य परिचित होंगे।

नीरज कुमार सिमैया
अं.ज्ञा.कें., भोपाल

कृतज्ञ या शिकायतकर्ता

एक अमीर आदमी था, उसने अपने गांव के सब गरीब लोगों के लिए और भिखारियों के लिए मासिक(प्रतिमाह) दान बांध दिया था। किसी को दस रुपये मिलते महीने में तो किसी को बीस रुपये मिलते तो किसी को पचास रुपये।

सभी लोग हर महीने की एक तारीख को आकर अपने पैसे ले जाते थे, यह क्रम वर्षो से ऐसे ही चल रहा था। एक भिखारी था जो बहुत ही गरीब था और जिसका बड़ा परिवार था, उसे 50 रुपये हर महीने मिलते थे।

वह हर महीने की एक तारीख को आकर अपने पैसे ले जाता था। एक बार महीने की एक तारीख आई, वह बूढ़ा भिखारी रुपये लेने गया, लेकिन उस धनी सेठ के मैनेजर ने कहा कि :- भाई थोड़ा अदल-बदल हुआ है, अब से तुम्हें पचास रुपये की जगह सिर्फ पच्चीस रुपये मिलेंगे।

यह सुनकर भिखारी बहुत नाराज हो गया, उसने कहा :- क्या मतलब, मुझे तो हमेशा से पचास रुपये मिलते रहे हैं और बिना पचास रुपये लिए मैं यहाँ से नहीं हटुंगा, क्या वजह है पचास की जगह पच्चीस देने की?

मैंनेजर ने कहा कि :- जिनकी तरफ से तुम्हें रुपये मिलते हैं उनकी बेटी का विवाह है और उस विवाह में बहुत खर्च होने वाला है और यह विवाह कोई साधारण विवाह नहीं है, उनकी एक ही बेटी है, लाखों का खर्च है। इस वजह से अभी सम्पत्ति में थोड़ी असुविधा है, इसलिए अब आपको पचास की जगह पच्चीस ही मिलेंगे।

उस भिखारी ने गुस्से से टेबल पर हाथ पटके और कहा:- इसका क्या मतलब, तुमने मुझे क्या समझ रखा है, मैं कोई बिड़ला नहीं हूँ? मेरे पैसे काटकर और अपनी लड़की की शादी? अगर अपनी बेटी की शादी में लुटाना है तो अपने पैसे लुटाओं। पिछले कई सालों से उस बुढे भिखारी को पचास रुपये मिलते आ रहे हैं, इसलिए वह आदी हो गया है, अधिकारी हो गया है, वह अपने आपको बड़ा मानने लगा है।

उसमें से पच्चीस काट लेने पर उसका विरोध है, हमें जो मिला है जीवन में, उसे हम अपना मान रहे हैं। उसमें से आधा कटेगा तो हम विरोध तो करेंगे, लेकिन जो हमें अब तक मिला है जो अपना नहीं था वह मिला और क्या हमने इसके लिए कभी धन्यवाद भी दिया है।

इस भिखारी ने कभी उस अमीर आदमी के पास जाकर धन्यवाद तक नहीं दिया कि, तुम पचास रुपये महीने हमें देते हो इसके लिए धन्यवाद, लेकिन जब कटे तो विरोध किया।

जरा विचार करें:- क्या हम कभी सुख के लिए भगवान को धन्यवाद देने मंदिर गये हैं? शायद ही किसी का जवाब हां होगा... हम सभी अधिकतर बस दु:ख की शिकायत लेकर ही मंदिर गये हैं।

जीवन जैसे सुंदर उपहार के लिए हमारे मन में कोई धन्यवाद नहीं है, लेकिन मुत्यु के लिए बडी शिकायत। सुख के लिए कोई धन्यवाद नहीं है, लेकिन दु:ख के लिए बहुत बडी शिकायत।

जब भी हमने भगवान को पुकारा है तो कोई न कोई पीड़ा या दु:ख के लिए।क्या हमने कभी धन्यवाद देने के लिए भगवान को पुकारा है?

दु:ख में सुमिरन सब करे सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे दु:ख काहे को होय।

कबीर दास जी कहते हैं कि दु:ख के समय सभी भगवान को याद करते हैं, पर सुख में कोई भी भगवान को याद नहीं करता।

यदि सुख में भी भगवान को याद किया जाए तो दु:ख हो ही क्यों।

अतः हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि हम सदैव कृतज्ञ बनें, न कि शिकायतकर्ता। हमें जो भी मिला है उसके लिए सदैव ईश्वर को धन्यवाद दें और सदैव प्रसन्न रहें।

वैभव शर्मा
धार शाखा,
क्षे.का. इन्दौर

मेरा गाँव

शोर पायल की झंकार का
हाथों में खनकती चूड़ियों का
सांसों में महकते गजरे का
कहीं आपको ढूंढना है तो
आइए कभी मेरे गाँव में

खिला बचपन जिन कलियों में
लड़कपन बीता जिन गलियों में
खेले लुका-छिपी जिन दालानों में
मिले कंचे जिन खदानों से
देखना है तो आइए मेरे गाँव में

वो खिलखिलाता सूरज
वो चहचहाते पंछी
वो महकते बगान
वो गदराए से पेड़
देखना है तो आइए मेरे गाँव में

मदमस्त सा हर मौसम देखना है
तो आइए मेरे गाँव में
झूमती बहार देखना है
तो आइए मेरे गाँव में

सौरव कुमार
क्षे. का., रायपुर

मोबाइल की लत

एक बड़े शहर में तीन सदस्यों का एक छोटा सा परिवार रहता था जिसमें 6 साल का पवन और उसके माता-पिता 2 साल पहले ही बड़े शहर में रहने आये थे। पवन के पिता एक कंपनी में काम करते थे और पवन की मां एक ग्रहणी थी जो घर के कामों में ही दिन भर व्यस्त रहती थी, पवन बहुत ज्यादा नटखट स्वभाव का था जो एक जगह शांति से नहीं बैठ पाता था। वह दिन-भर में घर की दो चार वस्तुओं को तोड़ ही देता था, पवन के पिता जब काम पर चले जाते तब पवन की मां बहुत परेशान हो जाती थीं कि वह घर का काम करे या पवन को सम्भाले। पवन की इन शरारतों से तंग आकर पवन की मां ने उसे टचस्क्रीन मोबाइल में एक विडियो चला कर दे दिया जिसमें मनोरंजक कार्टून विडियो चल रही थी, पवन वीडियो देख अपनी नटखट हरकतों को कुछ देर रोककर ध्यान से कार्टून वीडियो देखता रहा और लगभग दो घंटे तक वो वीडियो देखता रहा। अब तो पवन की मां जब भी घर के काम में व्यस्त होती तब वह पवन के हाथ में मोबाइल थमा देती।

इससे घर का सारा काम आसानी से हो जाता और घर के काम करते समय पवन न तो शरारत करता और न ही घर का कोई सामान तोड़ता। छोटा परिवार होने के कारण पति के ऑफिस जाने के बाद घर के काम करते समय पवन की देखभाल करने वाला घर में और कोई नहीं था।

ऐसे ही समय बीतता गया, धीरे-धीरे पवन की रुची मोबाइल चलाने में बढ़ती गई, अब पवन न तो शरारत करता और न ही अपनी मां को काम करते समय परेशान करता, पवन अब घंटों मोबाइल चलाने में व्यस्त रहने लगा। खेलना तो अब वह मानो भूल ही चुका था। उसे मोबाइल चलाने को न मिले तो वह पूरा घर सर पर उठा लेता था। पवन की मां बेबस होकर पवन को मोबाइल चलाने को दे देती थी। देखते ही देखते पवन की यह मोबाइल चलाने की आदत कब लत में बदल गई किसी को पता ही नहीं चला।

पवन अब न तो ठीक से खाना खाता, न ही खेलने में किसी प्रकार की रुची दिखाता। मोबाइल चलाने की लत के कारण पवन की आंखे भी कमजोर होने लगीं और उसका मानसिक विकास भी बाधित होने लगा। वह अब चुपचाप रहने लगा और यदि उसे मोबाइल चलाने न दिया जाये तो वह जोर-जोर से चिल्लाने लगता और जमीन पर लेट कर रोने लगता। पवन की मां उसकी इस लत से परेशान होने लगी पर पवन को मोबाइल चलाने के अलावा कुछ नहीं सूझता था।

पवन की मां ने तंग आकर जब अपने पति को बताया कि मोबाइल चलाने की लत पवन को धीरे-धीरे बीमार और मानसिक रूप से कमजोर बना रही है तो पवन के पिता ने इसे गंभीरता से लिया और अगले ही दिन पवन को डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने मोबाइल की लत को छुड़वाने के लिए माता-पिता को बच्चे के साथ अधिक से अधिक समय बिताने की सलाह दी और पवन के खानपान पर विशेष ध्यान देने को कहा। घर वापस आकर पवन के माता-पिता अब पवन पर विशेष ध्यान देने लगे, उसके साथ अधिक से अधिक समय बिताते उसके साथ मिलकर खेलते और कोशिश करते कि पवन कम से कम मोबाइल चलाये। ऐसा करते हुए कुछ महीने बीतने के बाद पवन अब फिर से शारीरिक रूप से खेलने में रुचि लेने लगा। मोबाइल अब वह बहुत कम चलाता है। अब वह पहले की तरह चंचल हो गया। उसकी मां अब घर का काम करते हुए, उसके साथ खेलती है उससे बातें करती है ताकि अब कभी उसे मोबाइल की लत न लगे।

नारायण सिंह
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

बिखरे मोती

माला टूटी बिखरे मोती,
अब कौन पिरोने वाला है ?
घट जाती कीमत मोती की,
बिखरा देती जब माला है ।

इधर-उधर सब बिखरे मोती,
अब कौन सँजोने वाला है ?
मोती जैसा हाल आज है,
बिखर गए परिवारों का ।

अलग-थलग सब पड़े अकेले,
अब मोल न टूटे हारों का ।
रहते थे संयुक्त हमेशा,
मोती जैसी माला बनकर ।

एकल हुए आज हैं हम सब,
गिनती उल्टी सीधी गिनकर ।
प्रेम प्रीति व्यवहार है बदला,
अपनी-अपनी माला जपते ।

सुख-दुख में अब काम न आयें,
अहंकार में जकड़े रहते ।
चिन्तित आज सुमेरु अतिशय,
पिता रूप में खड़ा हुआ ।

मोती रूपी पुत्र उसी का,
आज पिता से बड़ा हुआ ।
ममता रूपी धागे से माँ,
माला पिरोकर जीती थी ।

नेह सिंधु की सीप सलोनी,
सुन्दर मोती चुनती थी ।
राग द्वेष की तपन अनोखी,
प्रेम प्रीति सब बिसर गए ।

"हर्षित" सागर प्रेम का सूखा,
सारे मोती बिखर गए ।

क्षितिज रिछारिया
इन्दौर बंगाली चौराहा शाखा
क्षे. का., इन्दौर

वीर सुरेंद्र साई

ओडिशा के महान स्वतंत्रता सेनानी और अद्वितीय योद्धा

भारत का स्वतंत्रता संग्राम दिल्ली, लखनऊ, मुंबई और कोलकाता जैसे महानगरों की क्रांति की कहानियों से भरा है। इसमें कई ऐसे क्षेत्रीय वीरों की गाथाएँ भी छिपी हैं जिन्होंने अपने सीमित संसाधनों और स्थानीय समर्थन के बल पर ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिलाने का साहस किया। ओडिशा के संबलपुर क्षेत्र के वीर सुरेंद्र साई ऐसे ही अप्रतिम योद्धा थे। वे आज भी ओडिशा के जन-जन के हृदय में बसे हुए हैं। उनका जीवन केवल एक व्यक्ति का प्रतिरोध नहीं था, बल्कि वह ओडिशा की जनता की स्वतंत्रता, अधिकारों और पहचान के लिए लड़ा गया संग्राम था।

वीर सुरेंद्र साई का जन्म 23 जनवरी, 1809 को ओडिशा के संबलपुर जिले के खिंडा गाँव में एक ज़मींदार परिवार में हुआ। वे चौहान राजवंश के वंशज थे, जिनके पूर्वजों ने लंबे समय तक संबलपुर पर शासन किया था। यह वह काल था जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के विभिन्न हिस्सों पर धीरे-धीरे नियंत्रण स्थापित कर रही थी। 1804 में अंग्रेजों ने मराठों को हराकर संबलपुर को अपनी सत्ता के अधीन कर लिया, और 1817 तक संबलपुर पूरी तरह ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया। सुरेंद्र साई ने बचपन से ही ब्रिटिश शासन की अन्यायपूर्ण नीतियाँ देखीं। उन्होंने महसूस किया कि किस तरह अंग्रेज़ स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और प्रशासनिक स्वायत्तता को खत्म कर रहे हैं। जब 1827 में संबलपुर के अंतिम चौहान शासक का निधन हुआ, तब वंशानुक्रम के अनुसार सुरेंद्र साई को गद्दी मिलनी चाहिए थी, लेकिन अंग्रेजों ने उनकी दावेदारी को खारिज कर एक नाबालिग रानी मोहन कुमारी को शासक बना दिया। यह निर्णय न केवल परंपरा के विरुद्ध था, बल्कि यह ब्रिटिश हड़प नीति का भी एक स्पष्ट उदाहरण था। इस अन्याय ने सुरेंद्र साई के मन में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना जगा दी और उनके संघर्ष का बीज बो दिया।

सुरेंद्र साई ने स्थानीय जनता और जमींदारों को संगठित कर अंग्रेजी प्रशासन के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने उस शासन को स्वीकार करने से इंकार कर दिया जो न केवल असंवैधानिक था, बल्कि लोगों के अधिकारों का हनन भी कर रहा था। उनका प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ता गया और वे जनता के असली प्रतिनिधि के रूप में उभरकर सामने आए।1833 में, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कुछ साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया और हजारीबाग जेल भेज दिया, जहाँ वे लगभग 17 वर्षों तक कैद में रहे। इस दौरान संबलपुर में अंग्रेजी अत्याचार और बढ़ता गया। सुरेंद्र साई की अनुपस्थिति में भी लोगों का विश्वास उन पर बना रहा, जो उनकी लोकप्रियता का प्रमाण था।

1857 का वर्ष भारतीय इतिहास में क्रांति की ज्वाला लेकर आया। जब भारत के विभिन्न हिस्सों में विद्रोह भड़क उठा, तब हजारीबाग जेल पर भी विद्रोहियों ने हमला किया और कई कैदियों को रिहा किया, जिनमें सुरेंद्र साई भी शामिल थे। 48 वर्ष की आयु में जेल से बाहर आने के बाद भी उनके भीतर स्वतंत्रता का वही जज़्बा और ऊर्जा थी। जेल से छूटते ही वे संबलपुर लौटे और वहां के हालात को देखकर उनका विद्रोह और भी

तीव्र हो गया। जनता ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और वे पुनः संघर्ष की अगुवाई करने लगे। उन्होंने अपने भाइयों, भतीजों और वफादार सहयोगियों जैसे उद्दंत साई, ध्रुव साई, शत्रुघ्न साई, मेदिनी साई, चाखन गोंटिया और धोबी गोंटिया के साथ मिलकर एक शक्तिशाली विद्रोही सेना का गठन किया।

देब्रीगढ़ का जंगल, जो संबलपुर के समीप स्थित है, उनकी रणनीतिक गतिविधियों का केंद्र बन गया। यह क्षेत्र घने जंगलों और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जो गुरिल्ला युद्ध के लिए अत्यंत उपयुक्त था। सुरेंद्र साई की सेना जंगलों के चप्पे-चप्पे से परिचित थी, जिससे वे ब्रिटिश टुकड़ियों पर अचानक हमले कर गायब हो जाते थे।

बारबखरा जलप्रपात के पास स्थित गुफाएँ उनके लिए एक महत्वपूर्ण आश्रय स्थल थीं। इन गुफाओं की प्राकृतिक संरचना ने उन्हें अंग्रेजों से छिपने, गोपनीय योजनाएँ बनाने और युद्ध की रणनीति तय करने में मदद की। इन गुफाओं की गर्जना और दुर्गमता ने ब्रिटिश सैनिकों के लिए इनका पता लगाना

कठिन बना दिया। आज भी स्थानीय लोग इन स्थानों को सुरेंद्र साई के संघर्ष से जोड़कर याद करते हैं। सुरेंद्र साई ने पारंपरिक युद्ध की जगह गुरिल्ला युद्ध को प्राथमिकता दी। उनकी रणनीति में घात लगाकर हमला करना, ब्रिटिश चौकियों पर छापा मारना, उनके संचार तंत्र को बाधित करना और स्थानीय सहयोग से अपनी स्थिति मजबूत करना शामिल था। उनके विद्रोह में बड़ी संख्या में आदिवासी, किसान और जमींदार शामिल थे जो अपने अधिकारों और जमीनों की रक्षा के लिए लड़ रहे थे। 1857 से 1862 तक, सुरेंद्र साई ने संबलपुर क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ जबरदस्त प्रतिरोध किया। उनका प्रभाव इतना व्यापक हो गया कि अंग्रेज अधिकारी उन्हें "संबलपुर का नेपोलियन" कहने लगे। उन्होंने अंग्रेजों को लगातार सैन्य और रणनीतिक चुनौतियाँ दीं, जिससे ब्रिटिश प्रशासन को भारी नुकसान उठाना पड़ा।

1862 के बाद, ब्रिटिश प्रशासन ने अपने साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाकर सुरेंद्र साई और उनके सहयोगियों को शांति के लिए आमंत्रित किया। सुरेंद्र साई ने अपने साथियों की भलाई और रक्तपात रोकने के उद्देश्य से आत्मसमर्पण कर दिया। लेकिन ब्रिटिश प्रशासन ने अपने वचनों से मुकरते हुए उन्हें पुनः गिरफ्तार कर लिया। सुरेंद्र साई को मध्य भारत के असीरगढ़ किले में कैद कर दिया गया, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतिम 12 वर्ष बिताए। यह किला अपनी कठोर परिस्थितियों और दुर्गमता के लिए प्रसिद्ध था। 28 फरवरी, 1884 को, 75 वर्ष की आयु में उन्होंने ब्रिटिश कैद में अंतिम साँस ली।

वीर सुरेंद्र साई की गाथा केवल एक क्षेत्रीय विद्रोह नहीं, बल्कि वह संपूर्ण भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ़ खड़े होने की प्रेरणा है। उन्होंने दिखाया कि सत्य, साहस और दृढ़ संकल्प के बल पर किसी भी साम्राज्य से टक्कर ली जा सकती है। उनकी गुरिल्ला रणनीति आज भी सैन्य इतिहास का एक अद्‌त अध्याय मानी जाती है। ओडिशा सरकार और भारत सरकार ने उनके योगदान को मान्यता दी है। संबलपुर में स्थित 'वीर सुरेंद्र साई विश्वविद्यालय' और 'वीर सुरेंद्र साई हवाई अड्डा' उनके सम्मान में नामित हैं। उनकी स्मृति में कई स्मारक, संस्थान और सार्वजनिक स्थल स्थापित किए गए हैं। उनकी जयंती और पुण्यतिथि पर आज भी ओडिशा और आसपास के क्षेत्रों में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

वीर सुरेंद्र साई भारत के उन महान सपूतों में से एक हैं, जिन्होंने आज़ादी के लिए अपने जीवन का हर क्षण समर्पित कर दिया। उनका संघर्ष केवल सत्ता के लिए नहीं था, बल्कि अपने लोगों की अस्मिता, संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के लिए था। देब्रीगढ़ के जंगल और बारबखरा की गुफाएँ आज भी उनकी गाथाओं की साक्षी हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए बड़े संसाधनों की नहीं, बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति और मातृभूमि के प्रति प्रेम की आवश्यकता होती है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, और आने वाली पीढ़ियाँ उनसे प्रेरणा लेती रहेंगी।

ओडिशा के इस वीर सपूत को शत्-शत् नमन।

मलय कुमार प्रधान
क्षे.का., रायगड़ा

वो फिर नहीं आते.....

कुछ लोग जब अचानक बिछड़ जाते है,
बस यादों में ही वो ठहर जाते हैं!

चले जाते हैं वो इस दुनिया से मगर
अपने दिल से किधर वे निकल पाते हैं,
आ जाते थे जो बस एक आवाज पर
चीखने पर भी वो अब नहीं आते !!

थाम हाथों को मेरे सिखाया था
जिन्होंने चलना , मुझे सुबह शाम ,
वो फिर नहीं आते , वो फिर नहीं आते!

साथ छूटा सही जिंदगी न रुकी,
अब आपकी याद भी तो दिल से जाती नहीं ,
एक कमी सी है मेरी जिंदगी में मगर,
चेहरा आपका तो मैं हूं भूला नहीं,
जिसे मानता था दिल से ,
जिसके साथ हसाँ दिन रात!
वो फिर नहीं आते , वो फिर नहीं आते!

यूं तो सब कुछ है मेरे जीवन में
और सहारे की मुझको जरूरत नहीं!
आपकी कमी सी है, मेरी जिंदगी में मगर
इसको भर पाना अब नामुमकिन सा है

आई है जिंदगी में भी पतझड़,
आंखों में मेरे इसलिए अब भी ठंडा साहिल सा है!
दिल से जो देते थे ,हर रोज आशीर्वाद
जो थे मेरे मान और अभिमान,
वो फिर नहीं आते , वो फिर नहीं आते।

सुकेश कुमार
क्षे.का., कोट्टयम

समुद्र से समृद्धि तक

भारत का व्यापारिक इतिहास अत्यंत समृद्ध और गौरवशाली रहा है। प्राचीन काल से ही भारत ने विदेशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित कर लिए थे। सिंधु घाटी सभ्यता, जो नगरीय प्रकृति की थी, सुमेर, मेसोपोटामिया, विशेष रूप से एलाम और बहरीन जैसे बंदरगाहों से व्यापार करती थी। पुरातात्विक उत्खननों से यह सिद्ध होता है कि भारत ने अपनी सभ्यता की शुरुआत से ही समुद्री व्यापार में भाग लेना प्रारंभ कर दिया था। ईसाई युग के प्रारंभिक शताब्दियों में यह व्यापार अपने चरम पर पहुँच गया था।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानी स्रोतों से भारत के व्यापार की और अधिक जानकारी मिलती है। सिकंदर के समय में भारत और यूनान के बीच व्यापार कई केंद्रों के माध्यम से संचालित होता था, जिसमें भारत के पश्चिमी भाग से फारस की खाड़ी तक के समुद्री मार्ग विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे। वहीं पश्चिम में रोमन साम्राज्य का उदय हो रहा था। दक्षिण भारतीय राजवंश मिस्र और यूनान के साथ व्यापारिक गतिविधियों में पहले से ही संलग्न थे।

भारत और रोम के व्यापारिक संपर्कों का प्रमाण यूनानी-लैटिन ग्रंथों, अभिलेखों और उत्खननों में मिलता है। सम्राट ऑगस्टस के समय से भारत-रोम के आर्थिक संबंधों में एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ। उस समय भारत पहुँचने के तीन प्रमुख समुद्री मार्ग थे—काला सागर होकर ऑक्सस नदी से भारत, सीरिया से पार्थियन राजधानी होकर, और तीसरा लाल सागर व हिंद महासागर से होकर। मिस्रवासियों ने नील नदी से लाल सागर को जोड़ने हेतु एक नहर बनाई, जिससे आर्सिनो और बेरेनाइस जैसे बंदरगाह व्यापार के प्रमुख केंद्र बन गए।

यूनानी भूगोलवेत्ता स्ट्रैबो के अनुसार मयोस हॉरमोस से हर वर्ष लगभग 120 जहाज़ भारत के लिए रवाना होते थे, जिससे यह बंदरगाह एलेक्ज़ेंड्रिया के बाद दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक केंद्र बन गया। भारत के लिए आर्सिनो, मयोस हॉरमोस और बेरेनाइस से समुद्री यात्राएँ होती थीं, लेकिन मयोस हॉरमोस ही नौवहन के लिए सबसे उपयुक्त था।

ऐला और ल्यूस कॉमे जैसे छोटे बंदरगाह भी व्यापार के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण थे। ल्यूस कॉमे पर तो कर वसूली के लिए एक रोमन सेनापति और सेना तैनात थी, जिससे इसकी व्यापारिक समृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है। मिस्र उस समय भारत व चीन के साथ भूमध्यसागरीय विश्व को जोड़ने वाला एक सेतु था।

एक रोमन व्यापारी हिप्पालस द्वारा मानसून की खोज ने समुद्री व्यापार की दिशा ही बदल दी। उसने यह पाया कि पश्चिम से पूर्व की ओर चलने वाली मौसमी हवाओं का उपयोग करके भारत की ओर यात्रा संभव है और वापसी भी उसी मौसम में की जा सकती है। इस खोज ने लाल सागर, फारस की खाड़ी और सिंधु नदी तक के मार्गों को सुगम बना दिया।

वार्मिंगटन के अनुसार, मानसून की खोज से दक्षिण भारतीयों को अपने नौवहन को सुधारने और रोमन बस्तियाँ बसाने में मदद मिली। इससे विलासिता की वस्तुओं का आयात आसान हुआ और रोम में उनकी खपत बढ़ी। प्लिनी के अनुसार, मिस्र से जहाज़ मध्य ग्रीष्मकाल में रवाना होते थे और चालीस दिनों में मलाबार तट पर पहुँच जाते थे। फिर दिसंबर में वापसी यात्रा दक्षिण-पूर्वी हवाओं की मदद से शुरू होती थी।

स्ट्रैबो ने बताया कि अरब और इथियोपियाई वस्तुएँ भी भारत के साथ मिलकर कॉप्टोस में एकत्र होती थीं। कॉप्टोस-बेरेनिस और मयोस हॉरमोस मार्ग टॉलेमी के समय में खुले थे, पर धीरे-धीरे इनकी महत्ता घटने लगी। जब जहाज़ भारतीय तटों पर पहुँचते, तो वे भरूच (भृगुकच्छ) की ओर जाते थे। सिन्धु नदी से व्यापारी कच्छ का रण पार कर खम्भात की खाड़ी के भरूच पहुँचते और वहाँ से चेर, पांड्य तथा चोल राजाओं के बंदरगाहों की ओर जाते थे। म्यूजिरिस (केरल) और भरूच पश्चिमी भारत के दो प्रमुख बंदरगाह थे। म्यूजिरिस से प्राप्त रोमन सिक्के और वस्तुएँ इस बात का प्रमाण हैं कि यहाँ यूनानी-रोमन व्यापारी बसे हुए थे।

भरूच से व्यापारी कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) तक यात्रा करते थे और वहाँ से कोरकाई जैसे बंदरगाह पहुँचते, जो प्राचीन मोती व्यापार का केंद्र था। नवंबर में जब वापसी यात्रा होती, तब ये जहाज़ वैक्करई (आधुनिक कर्नाटक) से काली मिर्च लेकर म्यूजिरिस और फिर भरूच पहुँचते। उत्तर-पूर्वी हवाओं के सहारे ये जहाज़ मिस्र और अरब होते हुए रोम लौट जाते।

भारतीय साहित्य और खुदाइयाँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कई स्थान प्राचीन काल से ही व्यापार के महत्वपूर्ण केंद्र रहे हैं। इन स्थलों ने यूनानी-रोमन जगत के साथ व्यापार को बढ़ावा दिया। पश्चिमी और दक्षिणी भारत की नदियाँ व्यापार का मुख्य माध्यम थीं। व्यापारी इन नदियों के सहारे अपना माल अंतरराष्ट्रीय बंदरगाहों तक पहुँचाते थे।

महिष्मत, नवदाटोली, नासिक, ब्रह्मपुर और कोंडापुर जैसे स्थानों से खुदाई में रोमन वस्तुएँ मिली हैं, जो प्राचीन स्रोतों की पुष्टि करते हैं। तटीय क्षेत्रों में भड़ौच, म्यूजिरिस, उज्जैन, कल्याण, सोपारा, पैठन और टैगारा जैसे व्यापारिक केंद्र उभरे, जिन्होंने भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन सभी नगरों ने समुद्री मार्गों के माध्यम से भारत और रोम साम्राज्य के बीच व्यापार को नई ऊँचाइयाँ दीं।

देवेंद्र गिरी
अं. का., भोपाल

मानव संवेदनाओं का शब्द शिल्पी
- आर. के नारायण

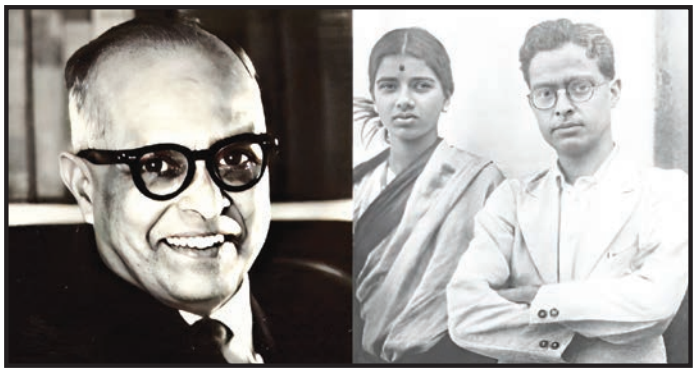

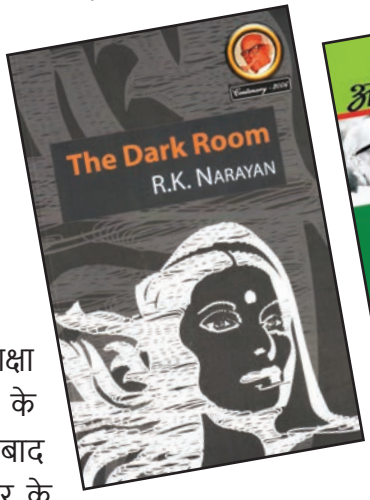

भारतीय जीवन और संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय पटल पर अद्भुत साहित्यिक संवेदना के साथ प्रस्तुत करने वाले महान साहित्यकार आर. के नारायण की लेखनी में सरलता, व्यंग्य, मानवीय संबंधों की गहराई, और भारत के पारंपरिक जीवन की आत्मा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

आर.के. नारायण का जन्म 10 अक्तूबर 1906 को मद्रास (अब चेन्नई) में हुआ था। उनका पूरा नाम रासीपुरम कृष्णस्वामी अय्यर नारायणस्वामी था। वे एक तमिल ब्राह्मण परिवार में जन्मे और उनका प्रारंभिक जीवन सादगीपूर्ण लेकिन साहित्यिक वातावरण में व्यतीत हुआ। उनके पिता एक स्कूल के प्रधानाचार्य थे और घर में पुस्तकें प्रचुर मात्रा में थीं। उनके पिता एक शिक्षक थे जिस कारण उनका स्थानांतरण अलग-अलग स्थान पर होता रहता था । आर. के. नारायण की आरंभिक शिक्षा घर से ही हुई और पिता के मैसूर स्थानांतरण होने के बाद उन्होनें वर्ष 1926 में मैसूर के महाराजा कालेज में दाखिला लिया और वहीं से स्नातक की डिग्री प्राप्त की । इसी साहित्यिक माहौल ने आर.के. नारायण को एक संवेदनशील लेखक बनने की प्रेरणा दी।

उन्होंने अपनी शिक्षा मद्रास में ही प्राप्त की और बाद में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। शिक्षण के क्षेत्र में उनका विशेष झुकाव नहीं था, लेकिन लेखन में उनकी अत्यधिक रुचि थी। अंग्रेजी भाषा पर उनकी गहरी पकड़ थी और उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश साहित्य अंग्रेजी में ही लिखा।

वे अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन जीने वाले व्यक्ति थे। 1934 में उनकी पत्नी राजम से उनका विवाह हुआ, लेकिन 1939 में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। नारायण इस घटना से गहराई से आहत हुए और इसी अनुभव को उन्होंने 'द इंग्लिश टीचर' में अभिव्यक्त किया।

उनकी बेटी हेमलता नारायण भी एक लेखिका हैं। नारायण का पारिवारिक जीवन सीमित लेकिन आत्मीय था और उन्होंने सदैव साहित्य को ही अपनी प्राथमिकता बनाई। आपको पता होगा कि आर. के. नारायण के छोटे भाई आर. के. लक्ष्मण थे जो कि मशहूर कार्टूनिस्ट, चित्रकार और हास्यकार थे। उन्होंने ही मालगुडी ड़ेज़ धारावाहिक में दिखाए गए चित्रों को बनाया था।

साहित्यिक यात्रा

उनकी भाषा सरल, प्रवाहमयी और सहज थी। वे समाज की जटिलताओं को अत्यंत सहजता से व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण में प्रस्तुत करते थे। उनकी रचनाएँ भारतीय मध्यवर्गीय जीवन की ईमानदार और सजीव झांकी प्रस्तुत करती हैं। वे पात्रों के मनोविज्ञान को गहराई से उकेरते थे और उनका हास्य विवेक समाज की सच्चाइयों को उजागर करता था।

आर.के. नारायण को उनकी लेखन शैली के लिए जाना जाता है, जो न तो अत्यंत अलंकृत है और न ही कठिन। वे शब्दों का चयन बहुत सादगी से करते हैं, जिससे पाठक बिना किसी प्रयास के कहानी से जुड़ जाता है। उनका हास्य-विवेक और व्यंग्यात्मक शैली उन्हें अन्य लेखकों से अलग बनाती है।

उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से मुंशी प्रेमचंद की तरह यथार्थवाद दिखता है, परंतु अंग्रेज़ी में लिखे गए उनके साहित्य में पश्चिमी लेखकों जैसे मार्क ट्वेन और एंटन चेखव की प्रेरणा भी झलकती है। उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा में भारतीयता को प्रस्तुत करने की एक नई दिशा प्रदान की। आर.के. नारायण, मुल्कराज आनंद और राजा राव के साथ भारतीय अंग्रेजी साहित्य के 'त्रय' के रूप में माने जाते हैं। इन तीनों ने भारतीय जीवन को अंग्रेज़ी भाषा में इस प्रकार व्यक्त किया कि विदेशी पाठकों के लिए भी भारत की आत्मा को समझना संभव हुआ। नारायण का विशेष योगदान यह था कि उन्होंने किसी प्रकार की अतिशयोक्ति या विदेशी शैली का अनुकरण नहीं किया, बल्कि भारतीय परिवेश को ही केन्द्र में रखा।

आर.के. नारायण की पहली कृति "स्वामी एंड फ्रेंड्स" (1935) थी, जिसमें मालगुडी नामक एक काल्पनिक नगर की पृष्ठभूमि पर आधारित बालकों की दुनिया को अभूतपूर्व रूप से चित्रित किया गया। कमाल की बात यह है कि इनकी पहली चार किताबों के लिए प्रकाशक अँग्रेजी के प्रख्यात लेखक ग्राहम ग्रीन ने ढूँढे थे । उन्होनें स्वामी एंड फ्रेंड्स लिखने के बाद उसे अपने दोस्त के जरिये प्रकाशकों के पास भेजा, मगर किसी को भी वह पसंद नहीं आई । आखिरकार तंग आकार नारायण ने अपने दोस्त से कहा कि वह स्वामी एंड फ्रेंड्स की पाण्डुलिपि को टेम्स नदी में डुबो दे पर उस दोस्त ने एक और चांस लिया और ऐसा करने कि बजाय पाण्डुलिपि ग्राहम ग्रीन तक पहुंचा दी । जब

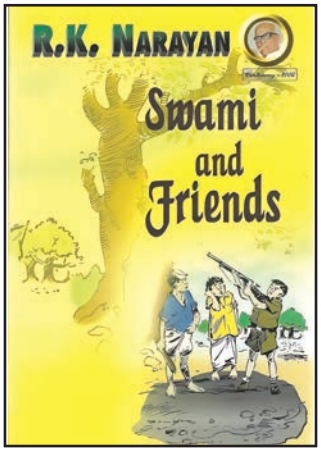

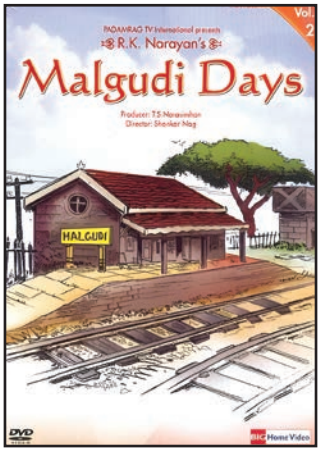

ग्राहम ग्रीन ने इस उपन्यास को पढ़ा तो इसकी शैली पर मुग्ध हो गए । यह उपन्यास बाद में बच्चों के लिए बेहद लोकप्रिय हुआ और दूरदर्शन पर 'मालगुडी डेज़' नाम से प्रसारित धारावाहिक ने इस कथा को घर-घर पहुँचाया। 'मालगुडी डेज़' में 'स्वामी', 'राजम', 'मणि', 'मार्गया', 'गुरु नायक' जैसे पात्र केवल नाम नहीं, बल्कि जीवंत चरित्र हैं जिनके माध्यम से नारायण ने भारतीय संस्कृति की विविधता को समेटा है। उन्होंने भारत के एक काल्पनिक नगर मालगुड़ी के माध्यम से सामान्य जनजीवन की गूढ़ताओं को अत्यंत सहज भाषा में साहित्य का विषय बनाया।

इसके बाद तो नारायण ने मानवीय संबंधो पर एक से एक बढ़ाकर रचनाएँ दी। इनका चर्चित उपन्यास गाइड के आधार पर इसी नाम से फिल्म बनी। देवानन्द और वहीदा रहमान अभिनीत इस फिल्म ने उस दौर में खलबली मचा दी थी । तमिल में उनकी कृति 'मि. सम्पत लाल' पर भी फिल्म बनी थी और 'फाइनेंशियल एक्सपर्ट' पर कन्नड़ में फिल्म बनी ।

'माय डेज़' उनकी आत्मकथा है जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को बहुत ही भावनात्मक और सजीव शैली में प्रस्तुत करती है। इसमें उन्होंने अपने बचपन, पारिवारिक जीवन, पत्नी की मृत्यु, लेखन यात्रा और सामाजिक विचारों को सरल लेकिन मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

उनकी लेखन शैली सरल, व्यावहारिक तथा मानवीय दृष्टिकोण से परिपूर्ण थी। आर.के. नारायण ने अपने उपन्यासों, कहानियों तथा संस्मरणों के माध्यम से भारतीय समाज की जटिलताओं, पारिवारिक मूल्यों और बदलते समय के साथ आम आदमी की मानसिक स्थिति को अत्यंत सजीवता से चित्रित किया। नारायण न केवल उपन्यासकार थे, बल्कि उन्होंने कई प्रेरणादायक लघुकथाएँ और संस्मरण भी लिखे।

उनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ:

1. द बैचलर ऑफ आर्ट्स (1937): एक युवा की आत्म-खोज और भावनात्मक संघर्षों पर आधारित।
2. द डार्क रूम (1938): स्त्री अस्मिता और पारिवारिक बंधनों की गहराई को उजागर करता है।
3. द इंग्लिश टीचर (1945): यह कृति उनके निजी जीवन से प्रेरित थी और उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद की संवेदनाओं को दर्शाती है।

4. द मैन-ईटर ऑफ मालगुडी (1961): एक गहन व्यंग्यात्मक कृति जो भारतीय सामाजिक संरचना पर तीखा प्रहार करती है।
5. द वेंडर ऑफ स्वीट्स (1967): पीढ़ियों के टकराव और पारिवारिक मूल्यों की व्याख्या।
6. द पेंटर ऑफ साइन्स, ए टाइगर फॉर मालगुड़ी, टॉकटिव मैन, ग्रैंडमदर'स टेल और अनेक लघुकथाएँ।

आर.के. नारायण के साहित्य का सामाजिक परिप्रेक्ष्य:

नारायण के साहित्य में भारतीय समाज का वास्तविक प्रतिबिंब दिखाई देता है। उनके पात्र सामान्य नागरिक होते हैं—एक शिक्षक, एक दुकानदार, एक साधारण गृहिणी या एक बच्चा। वे राजनैतिक आंदोलन या इतिहास की बड़ी घटनाओं को केंद्र में न रखते हुए आम आदमी की मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक स्थिति को केंद्र में रखते हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं।

समाज में व्याप्त रूढ़ियों, वर्ग विभाजन, धार्मिक अंधविश्वास, पारिवारिक संरचना, शिक्षा की स्थिति आदि पर उनकी कृतियाँ सूक्ष्म और प्रभावशाली टिप्पणी करती हैं। उन्होंने समाज को तोड़ा नहीं, बल्कि उसकी परतों को खोला है। नारायण का साहित्यिक दृष्टिकोण बहुत मानवीय था। वे मानते थे कि मनुष्य का जीवन छोटे-छोटे क्षणों, भावनाओं और संबंधों का संगम है। उन्होंने अपने पात्रों को महान कार्यों के लिए नहीं, बल्कि मानवीय कमजोरियों, हर्ष-विषाद और संबंधों के ताने-बाने के लिए प्रस्तुत किया। उनके पात्र त्रुटिपूर्ण होते हैं, लेकिन इसी में उनकी सुंदरता छिपी होती है।

आर.के. नारायण की उपलब्धियां

आर.के. नारायण ने भारत में अंग्रेजी साहित्य के विकास में अपना अहम योगदान दिया है। आर. के. नारायण को उनके साहित्यिक योगदानों के लिए कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें 'पद्म भूषण' और 'पद्म विभूषण' प्रमुख हैं। वे न केवल एक लेखक थे, बल्कि एक संवेदनशील द्रष्टा भी थे जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत की आत्मा को विश्व के समक्ष सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। उनको प्राप्त कुछ मुख्य पुरस्कार इस प्रकार हैं:-

वर्ष 1960 में आर.के. नारायण की कृति 'द गाइड' के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

वर्ष 1964 में उन्हें 'पद्म भूषण' सम्मान से नवाजा गया था।

इसके बाद वर्ष 2000 में उन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया।

यूनाइटेड किंगडम की 'रॉयल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर' ने उन्हें 'बेन्सन मेडल' से सम्मानित किया था।

इसके साथ ही वह 'रॉयल सोसायटी ऑफ लिटरेचर' के फेलो और 'अमेरिकन एकेडमी ऑफ आर्ट्स एंड लेटर्स' के मानद सदस्य भी रहे हैं।

साहित्य में 'नोबेल पुरस्कार' के लिए भी उनका नाम नॉमिनेट हो चुका है, पर कभी पुरस्कृत नहीं हो पाए ।

भारतीय अंग्रेजी साहित्य में आर.के. नारायण के विशेष योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1989 में राज्यसभा का मानद सदस्य चुना गया था।

इसके अतिरिक्त आर.के. नारायण को 'मैसूर विश्वविद्यालय' और 'यूनिवर्सिटी आफ लीड्स' ने डॉक्टरेट की मानद उपाधियाँ प्रदान की ।

वर्ष 2009 में भारतीय डाक द्वारा इनकी स्मृति में स्टैम्प जारी किया गया।

आर.के. नारायण भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य के एक प्रकाशस्तंभ थे। उन्होंने भारतीयता को अंग्रेज़ी साहित्य में जिस प्रकार से प्रस्तुत किया, वह अद्वितीय है। उनकी रचनाएँ न केवल पढ़ने का आनंद देती हैं, बल्कि जीवन को समझने का नया दृष्टिकोण भी प्रदान करती हैं। वे भारत के उन विरल रचनाकारों में से हैं जिनकी कलम में सादगी और जीवन के गूढ़ अर्थ समाहित है।

उनकी साहित्यिक विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी और 'मालगुडी' जैसे नगरों की कहानियाँ समय के साथ और भी प्रासंगिक होती जाएँगी। आर के नारायण ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय ग्रामीण और शहरी जीवन की विसंगतियों व विडंबनाओं का सटीक चित्रण किया है, जिसमें आधुनिक शहरी जीवन और पुरानी परम्पराओं के बीच टकराव देखने को मिलता है। इस महान साहित्यकार ने 13 मई 2001 को 94 वर्ष की आयु में इस नश्वर संसार को अलविदा कह दिया । उनका निधन भारतीय साहित्य के लिए एक अपूरणीय क्षति है, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी जीवंत हैं और पाठकों के मन को स्पर्श करती हैं। नारायण के देहांत के बाद भी उनकी साहित्यिक विरासत जीवंत बनी हुई है। कई विश्वविद्यालयों में उनके कार्यों पर शोध हो रहे हैं। मालगुड़ी डेज़ जैसे कार्यक्रम आज भी पुनः प्रसारित किए जाते हैं और नई पीढ़ी के लिए भी उतने ही रोचक हैं। उनके जीवन और रचनात्मक योगदान को देखकर यह कहा जा सकता है कि आर.के. नारायण का नाम भारतीय साहित्य पटल पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। उनकी कहानियाँ, उनके पात्र और उनका 'मालगुड़ी' सदा जीवित रहेंगे।

निमेष दीवान
क्षे. का., बड़ौदा

मेरी न्यूज़ीलैंड यात्रा

न्यूज़ीलैंड दुनिया के सबसे खूबसूरत और पर्यटकों में सबसे लोकप्रिय स्थलों में से एक है। दो मुख्य द्वीपों उत्तर और दक्षिण द्वीप से मिलकर बना यह देश विरोधाभासों और विविधता का देश है। सक्रिय ज्वालामुखी, शानदार गुफाएँ, गहरी ग्लेशियर झीलें, हरी-भरी घाटियाँ, चकाचौंध करने वाले मैदान, लंबे रेतीले समुद्र तट और दक्षिणी आल्प्स की शानदार बर्फ से ढकी चोटियाँ, ये सभी न्यूजीलैंड की प्राकृतिक सुंदरता में योगदान देते हैं।

हमने पिछले साल अक्टूबर के आसपास न्यूजीलैंड जाने का फैसला किया और नवंबर की शुरुआत में विजिटर वीजा के लिए आवेदन किया। हमारा आवेदन दिसंबर की शुरुआत में स्वीकृत हो गया और हमने फरवरी के लिए सभी बुकिंग कर लीं। हम बहुत उत्सुकता और उत्साह से उन 3 महीनों के बीतने और हमारी यात्रा शुरू होने का इंतजार कर रहे थे। चूँकि यह हम दोनों के लिए पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा थी, इसलिए हम थोड़ा चिंतित भी थे, लेकिन कुल मिलाकर यात्रा का उत्साह हमारी चिंता पर भारी पड़ा।

आख़िरकार डी-डे आ गया और हम बेंगलुरु से सिंगापुर के लिए अपनी 4 घंटे लंबी उड़ान में सवार हो गए। हमें सिंगापुर चांगी हवाई अड्डे पर 10 घंटे रुकना पड़ा, जहां हमने ज्वेल में रेन वोर्टेक्स का दौरा किया और चांगी हवाई अड्डे के प्रसिद्ध स्काईट्रेन में यात्रा की। शाम को हम ऑकलैंड के लिए अपनी बहुप्रतीक्षित उड़ान में सवार हुए। करीब 10 घंटे की उड़ान के बाद हम ऑकलैंड पहुंचे। यह सबसे अवास्तविक क्षण था जब हम हवाई अड्डे से बाहर निकले और ऑकलैंड के सुंदर शहर के दृश्यों को देखा। चूँकि न्यूज़ीलैंड के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद

ऑकलैंड

लेने हेतु हमने अपनी पूरी यात्रा किराए की कार में तय करने की योजना बनाई थी।

हम ऑकलैंड हवाई अड्डे से रोटोरुआ के लिए निकल पड़े। रोटोरुआ अविश्वसनीय थर्मल गतिविधि का स्थल है। स्थानीय लोग मज़ाक करते हैं कि आप रोटोरुआ को देखने से पहले ही उसकी गंध महसूस कर सकते हैं और यह सच है। यह शहर अपने गंधक कुंड और बुदबुदाते भूतापीय क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध है और आप हर जगह सल्फर की गंध महसूस कर सकते हैं। हम शाम को अपने होटल पहुंचे और कुछ खाया और

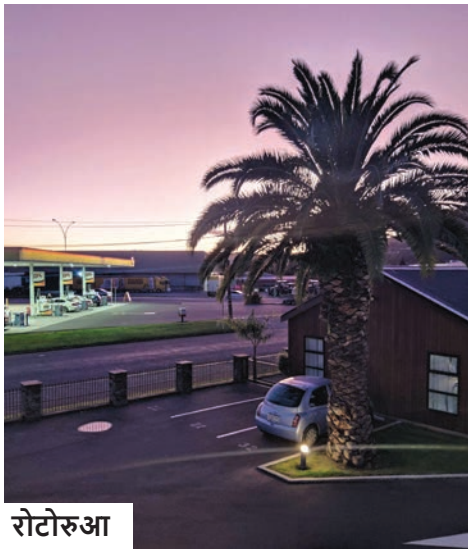

रोटोरुआ

अपनी लंबी उड़ान और लगभग 3 घंटे की ड्राइव के बाद थोड़ा आराम करने के लिए जल्दी सो गए।

अगले दिन सुबह-सुबह हम न्यूजीलैंड में वेटोमो ग्लोवॉर्म गुफाओं को देखने के लिए निकले। हमने ग्लोवर्म ग्रोटो के माध्यम से एक नाव की सवारी की, जिसमें 30 मिलियन वर्ष पुरानी एक प्राचीन दुनिया की खोज की गई और प्रकृति के प्रकाश प्रदर्शन को देखकर आश्चर्यचकित हुए, क्योंकि हजारों चमक वाले कीड़े एक भूमिगत दुनिया में अपनी अचूक चमकदार रोशनी बिखेर रहे थे।

दोपहर में हम हॉबिटन मूवी सेट के मनमोहक गांव में पहुंचे, जहां हमने सेट के चारों ओर 2 घंटे का निर्देशित दौरा किया,

हॉबिटन

ऑकलैंड स्काईटॉवर

हॉबिट होल्स, मिल और ग्रीन ड्रैगन इन का दौरा किया और देखा कि 'द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' और 'द हॉबिट' फिल्में कैसे बनाई गईं।

शाम ढलने के बाद हमने रेडवुड्स ट्रीवॉक का दौरा किया, जो एनजेड के शीर्ष डिजाइन एलईडी पर्यटन अनुभवों में से एक है, जिसमें 34 उत्कृष्ट लालटेन हैं, जो जंगल के फर्श से 9-20 मीटर ऊपर तैर रहे हैं। यह इको-टूरिज्म वॉक 700 मीटर लंबा था, जो 28 झूलते पुलों और 27 प्लेटफार्मों पर फैला था और इसे पूरा करने में लगभग 40 मिनट लगे।

अगले दिन हम ते पुइया जियोथर्मल पार्क के लिए रवाना हुए, जहां हमारा सामना दक्षिणी गोलार्ध के सबसे बड़े, प्राकृतिक रूप से सक्रिय गीजर, पीएमहुतु गीजर से हुआ और हमने न्यूजीलैंड कीवी, उनके राष्ट्रीय पक्षी के साथ करीब से अनुभव का आनंद लिया।

दोपहर में हमने वैराकेई टैरेस, एक अन्य भूतापीय अभ्यारण्य और फिर हुका फॉल्स का दौरा किया जो न्यूजीलैंड की सबसे लंबी नदी वाइकाटो नदी पर है।

रोटोरुआ में 3 यादगार दिन बिताने के बाद, हम अपनी यात्रा के चौथे दिन कोरोमंडल प्रायद्वीप के लिए रवाना हुए। पूरा रास्ता हरे-भरे चरागाहों, घास के मैदानों, घास और पेड़ों से ढके पहाड़ों से भरा हुआ बहुत सुंदर था। आसपास की प्राकृतिक सुंदरता को न देखना और स्टीयरिंग व्हील पर ध्यान केंद्रित करना मेरे लिए बहुत कठिन था।

अंत में हम कैथेड्रल कोव पहुंचे, जो कोरोमंडल प्रायद्वीप पर ज्वालामुखीय चट्टानों से बना एक नाटकीय सेरुलियन समुद्र तट है। कोरोमोमडल प्रायद्वीप पर व्हिटियांगा शहर में अपने एयरबीएनबी के

कैथेड्रल कोव

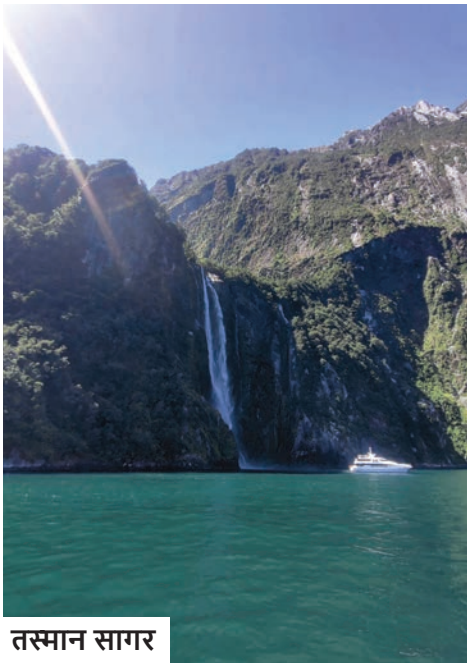
तस्मान सागर

लिए रवाना होने से पहले हमने पास के हॉट वॉटर बीच का भी दौरा किया।

कोरोमोमंडल में एक दिन के छोटे और मधुर प्रवास के बाद, हम न्यूजीलैंड के सबसे बड़े शहर ऑकलैंड के लिए रवाना हुए। हमने दोपहर में वहां अपने होटल में चेक इन किया और प्रसिद्ध ऑकलैंड स्काईटॉवर का दौरा किया। होटल वापस लौटने से पहले हमने स्काईटावर के दो अवलोकन डेक पर लगभग आधा घंटा बिताया।

ऑकलैंड के उत्तरी द्वीप व अन्य निकटवर्ती हिस्सों का चक्रवात से प्रभावित होने के कारण हमारी यात्रा में 2 दिन का व्यवधान आया। हमने हवाई अड्डे पर ही यात्रा की अपनी दूसरी कार ली, अपने होटल में चेक-इन किया और अपनी बुकिंग को पुनर्निर्धारित करने में सक्षम हुए क्योंकि वे छोटी अवधि की थीं।

अपनी यात्रा के 9वें दिन, साउथ आइलैंड और क्वीन्सटाउन में दूसरे दिन, हम तस्मान सागर पर मिलफोर्ड साउंड क्रूज़ टूर के लिए रवाना हुए। संपूर्ण मार्ग दर्शनीय एवं मनमोहक था। हम विशाल डेक और आरामदायक लाउंज से झरने, वर्षावन और

वन्य जीवन के दृश्यों का आसानी से आनंद लेते हुए अपने क्रूज पर चढ़े। जैसे ही हमारा जहाज़ चट्टानों के करीब पहुंचा, हमें झरने की फुहार का अनुभव हुआ। हमने तस्मान सागर के एक तट के पास डॉल्फ़िन, सील और 2 छोटे पेंगुइन को तैरते हुए भी देखा।

हमारी यात्रा का 10वां दिन सबसे डरावना होने के साथ-साथ सबसे यादगार और साहसी दिनों में से एक था क्योंकि हमने नेविस स्विंग पर सवारी की थी। यह 300 मीटर का झूला है, हमें 525 फुट ऊंचे (160 मीटर) प्लेटफॉर्म से छोड़ा गया और 120 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से घाटी के दूसरी ओर छोड़ा गया। पता नहीं हमने ऐसा करने की हिम्मत कैसे जुटाई.

दोपहर में हम स्काईलाइन क्वीन्सटाउन पहुंचे, जहां हमने शहर के शीर्ष तक गोंडोला केबल कार की सवारी की, वहां हमने ल्यूज राइड के 3 चक्कर लगाए, जो एक तीन-पहिया गाड़ी पर नीचे की ओर एक मजेदार, गुरुत्वाकर्षण भरी सवारी है। इन गाड़ियों में एक अद्वितीय ब्रेकिंग और स्टीयरिंग प्रणाली होती है जो सवार को इच्छानुसार दिशा और गति बदलने में सक्षम बनाती है।

इसके बाद हम न्यूजीलैंड के सबसे ऊंचे पर्वत माउंट कुक के लिए रवाना हुए। माउंट कुक की सड़क पुकाकी झील के किनारे से एक सुंदर ड्राइव है, जो एक आश्चर्यजनक

क्राइस्टचर्च

हिमनदी झील है। माउंट कुक, बादलों को भेदने वाला, राष्ट्रीय उद्यान से गुजरते समय अग्रभूमि में घूमता है। माउंट कुक नेशनल पार्क के आसपास का पूरा क्षेत्र बस एक बस्ती के साथ एकांत में है, जहां मुट्ठी भर होटल बने हैं। रात में हमने अपना होटल छोड़ दिया और उस क्षेत्र की रोशनी से दूर जाने के लिए लगभग 5 किमी दूर चले गए, हमने अपनी कार को किनारे पर रोक दिया, वहां पूरी तरह से अंधेरा था और आसपास कोई नहीं था और हमारी कार के हेडलैम्प ही रोशनी के एकमात्र स्रोत थे। हमने उन्हें भी बंद कर दिया। हम हजारों तारों से सजी आकाशगंगा की चमक में खो गए और रात के आकाश में छिप गए। हम पूरी तरह से अविश्वास में थे क्योंकि यह हमारी यात्रा का सबसे मंत्रमुग्ध कर देने वाला क्षण था। माउंट कुक नेशनल पार्क एक गोल्ड टियर दर्जा प्राप्त डार्क स्काई रिजर्व है जिसे दुनिया में सबसे अधिक डार्क स्काई प्रमाणन प्राप्त है।

माउंट कुक में एक जादुई रात बिताने के बाद हम अपनी यात्रा के अंतिम चरण - क्राइस्टचर्च के लिए रवाना हुए। रास्ते में हमने लैवेंडर फार्म, लेक टेकापो और विभिन्न दृश्य बिंदुओं का दौरा किया। हमने शाम को क्राइस्टचर्च के होटल में चेक-इन किया और पैदल ही आसपास के पर्यटक स्थलों का दौरा किया।

अगले दिन हम विशाल स्पर्म व्हेल को देखने का लक्ष्य बनाकर कैकौरा के लिए रवाना हुए। हम एक कटमरैन पर सवार हुए और समुद्र में लगभग 20 से 25 किलोमीटर तक चले। हम बहुत भाग्यशाली थे कि हमने एक नहीं बल्कि दो स्पर्म व्हेल को करीब से देखा। शाम को हम क्राइस्टशर्च वापस लौटे और आस-पास के कुछ और स्थानों का भ्रमण किया।

अंततः 13वें दिन हम ढेर सारी यादों, तस्वीरों और जीवन भर के रोमांचक अनुभव के साथ बेंगलूरु वापस जाने के लिए क्राइस्टचर्च हवाई अड्डे से सिंगापुर के लिए रवाना हुए।

माउंट कुक

चारु शर्मा
क्षे. का., बेंगलूरु-उत्तर

नराकास, काकिनाडा द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., काकिनाडा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 14.05.2025 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (दक्षिण), बेंगलूरु से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बी जी आर नायडू, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री राहुल राम, प्रबंधक(राभा)।

नराकास, सिलीगुड़ी द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., सिलीगुड़ी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 23.06.2025 को श्री प्रशांत कुमार सिंह, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राघवेंद्र दूवे, मुख्य प्रबंधक तथा श्री कृष्णा साव, प्रबंधक (राभा)।

नराकास, बेलगावी द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., बेलगावी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 02.06.2025 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का.(दक्षिण), बेंगलूरु से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री ज्ञानेश कुमार,उप क्षेत्र प्रमुख तथा श्री वेद प्रकाश, सहायक प्रबंधक (राभा)।

नराकास, उडुपि द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., उडुपि को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 18.06.2025 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (दक्षिण), बेंगलूरु से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अशोक ए. भांडगे, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री शुभम राय, सहायक प्रबंधक(राभा)।

नराकास, रूपनगर द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., लुधियाना की रूपनगर मुख्य शाखा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 22.05.2025 को श्री प्रदीप कुमार,सचिव, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राहुल बर्मन,शाखा प्रमुख तथा श्री अमित कुमार झा, सहायक प्रबंधक(राभा)।

नराकास, मुक्तसर द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., बठिंडा की मुक्तसर मुख्य शाखा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 07.04.2025 को श्री कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक (का.),क्षे. का.का.(उत्तर), नई दिल्ली-2 से पुरस्कार पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जीतेंद्र कुमार, शाखा प्रमुख तथा श्री रिछपाल, सहायक प्रबंधक (राभा)।

नराकास, हैदराबाद द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु अं. का., हैदराबाद को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 28.05.2025 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (दक्षिण), बेंगलूरु से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री कारे भास्कर राव, अंचल प्रमुख तथा श्री सर्वेश रंजन, उप अंचल प्रमुख। साथ हैं श्री देवकांत पवार, वरिष्ठ प्रबंधक(राभा)।

नराकास, लुधियाना द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., लुधियाना को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 23.06.2025 को श्री परमेश कुमार, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री रमनरेवती विकास सिन्हा, क्षेत्र प्रमुख तथा अमित कुमार झा, सहायक प्रबंधक(राभा) ।

नराकास, करनाल द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., करनाल को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 30.06.2025 को श्री कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक (का.), क्षे. का.का.(उत्तर), नई दिल्ली-2 से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जितेन्द्र शर्मा, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री दीपक कुमार, सहायक प्रबंधक(राभा)।

नराकास, मानसा द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., बठिंडा की मानसा मुख्य शाखा को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 07.04.2025 को श्री कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक (का.),क्षे. का.का.(उत्तर), नई दिल्ली-2 से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रणव पाण्डेय, शाखा प्रमुख ।

नराकास, श्रीरामपुर द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे. का., हावड़ा की श्रीरामपुर शाखा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 13.06.2025 को श्री दीनबंधु पाढ़ी, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुश्री सुजाता कुमारी, शाखा प्रमुख, श्रीरामपुर शाखा तथा श्री अमित महतो, वरिष्ठ प्रबंधक(राभा.)।

नराकास, फाजिल्का द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु क्षे.का., बठिंडा की फाजिल्का मुख्य शाखा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 13.06.2025 को श्री नवीन गुप्ता,अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री रिछपाल, सहायक प्रबंधक (राभा.) ।

नराकास, मडिकेरी द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के अग्रणी बैंक कार्यालय, मडिकेरी को वितीय वर्ष 2024-25 हेतु विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 25.04.2025 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (दक्षिण), बेंगलूरु से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री गंगाधर नाईक पी, मुख्य प्रबंधक, अग्रणी बैंक कार्यालय, मडिकेरी तथा श्री श्यामपदा तुरी, प्रबंधक(राभा)।

नराकास, फिरोज़ाबाद द्वारा दिनांक 01.07.2024 से 31.12.2024 हेतु क्षे. का., आगरा की फ़िरोज़ाबाद शाखा को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 20.05.2025 को श्री निमिष कुमार मिश्रा, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री धर्मेन्द्र दीक्षित, शाखा प्रमुख।

नराकास, आगरा द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-2024 हेतु क्षे. का., आगरा को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। दिनांक 25.04.2025 को श्री अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक (का), क्षे.का.का. तथा श्री पी वी हरी, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती रेणु बाला, प्रबंधक(रा.भा.)

दिनांक 21.05.2025 को अंचल कार्यालय, विजयवाडा में आयोजित नराकास (बैंक व बीमा) की अर्ध वार्षिक बैठक में श्री सी वीं एन भास्कर राव, अध्यक्ष एवं महा प्रबन्धक, नराकास (बैंक व बीमा), विजयवाडा और श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक, क्षेकाका, बेंगलूरु, श्री एम.वी.एन.रवि शंकर, उप अंचल प्रमुख और विभिन्न बैंकों के कार्यपालक प्रमुख उपस्थित रहें।

दिनांक 22.05.2025 को क्षे. का., एलूरु द्वारा नराकास, एलूरु की प्रथम बैठक का आयोजन श्री नामपल्ली श्रीनिवास, क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक(का.), क्षे. का. का.(दक्षिण) उपस्थित रहें।

दिनांक 21.05.2025 को नराकास, बरेली के तत्वावधान में, क्षे. का., बरेली द्वारा राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम एवं आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बृजेश कुमार तिवारी, क्षेत्र प्रमुख द्वारा की गई।

दिनांक 27.06.2025 को नराकास, विशाखपट्टणम के तत्वावधान में अं.का. विशाखपट्टणम द्वारा सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्य अतिथि श्री धर्मबीर, उप निदेशक(राजभाषा), वित्तीय सेवाएँ विभाग और अध्यक्षता श्री आर नरसिम्हा कुमार, अध्यक्ष, नराकास उपस्थित रहे ।

दिनांक 13.06.2025 को अग्रणी जिला शाखा, रामनगर (मैसूरु) द्वारा नराकास, रामनगर की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन श्री मोहन कुमार वाई. एन., अग्रणी जिला प्रबंधक [मुख्य प्रबंधक] की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का.(दक्षिण) उपस्थित रहें।

दिनांक 05.04.2025 को क्षे. का., तिरुवनंतपुरम द्वारा आयोजित यूनियन भाषा सौहार्द इंद्रधनुष प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित स्टाफ सदस्यों को केरल हिंदी प्रचार सभा द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुजित एस तारीवाळ, क्षेत्र प्रमुख ने किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ पी जे शिवकुमार, प्रिंसिपल केरल हिंदी प्रचार सभा एवं डॉ रंजित आर एस, संपादक केरल ज्योति उपस्थित रहें।

दिनांक 19.06.2025 को क्षे. का., कोल्लम में मलयालम भाषा प्रशिक्षण संपन्न हुआ। श्री वेल्लिमन नेल्सन, विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक (सेवानिवृत्त) फातिमा माता कॉलेज, कोल्लम ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किया। श्री दीप्ति आनंदन, क्षेत्र प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्लम उपस्थित रहे।

दिनांक 03.05.2025 को क्षे. का., बड़ौदा द्वारा आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री जुगल किशोर रस्तोगी, उप क्षेत्र प्रमुख ।

दिनांक 19.05.2025 को श्री निर्मल कुमार दुबे, उप निदेशक (का.), क्षे.का.का. (दक्षिण-पश्चिम) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, तृश्शूर का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 15.05.2025 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक(का.), क्षे.का.का.(दक्षिण) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, राजमंड्री का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 30.04.2024 को श्री निर्मल कुमार दुबे, निदेशक(का.), क्षे.का.का. (दक्षिण-पश्चिम) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 06.05.2025 को श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा अंचल कार्यालय, मुंबई का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 02.04.2025 को श्री कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक(का.), क्षे. का. का., नई दिल्ली द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली-उत्तर का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

दिनांक 15.05.2025 को क्षे. का., कोल्लम द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री वाई सत्यनारायण रेड्डी, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया ।

दिनांक 21.06.2025 को क्षे. का., उदयपुर द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री पारस नाथ मिश्रा, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 30.06.2025 को क्षे. का., एर्णाकुलम द्वारा आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ श्री महालिंग देवाडिग, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 03.06.2025 को क्षे. का., एलूरु में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री डी. सत्यनारायण रेड्डी, मुख्य प्रबंधक एवं श्री बी. रवि कुमार, मुख्य प्रबंधक द्वारा किया गया।

दिनांक 16.06.2025 को क्षे. का., समस्तीपुर द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 06.06.2025 को अंचल कार्यालय, मुंबई के अंतर्गत सभी क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा आयोजित संयुक्त एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ श्री धनशेखरण पी., प्रमुख-यूएलए, पवई, सहायक महाप्रबंधक तथा श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)।

दिनांक 18.06.2025 को अंचल ज्ञानार्जन केंद्र, गुरुग्राम में दिल्ली अंचल के चार क्षेत्रीय कार्यालय – गुरुग्राम, गाजियाबाद, नई दिल्ली एवं दिल्ली (दक्षिण) द्वारा आयोजित संयुक्त एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागी ।

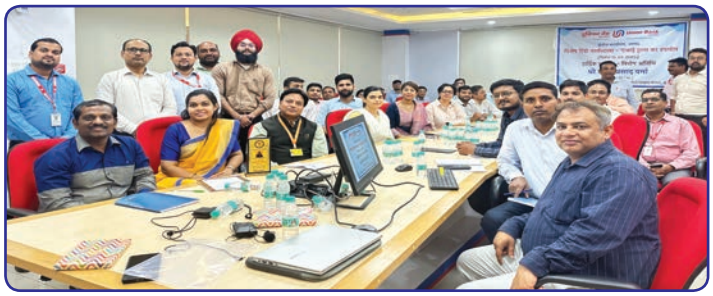

दिनांक 15.05.2025 को क्षे. का., आणंद में हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ श्रीमती ऋचा जाजोरिया, क्षेत्र प्रमुख ।

दिनांक 17.06.2025 को क्षे. का., विजयवाडा में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री एम.वी. तिलक, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 04.06.2025 को क्षे. का., खम्मम में हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ श्री ए हन्मंत रेड्डी, क्षेत्र प्रमुख।

दिनांक 17.05.2025 को क्षे. का., बेंगलूरु-उत्तर द्वारा हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ श्री जी रामप्रसाद, क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री एम. सरिता, उप क्षेत्र प्रमुख ।

दिनांक 21.06.2025 को क्षे. का., ग्रेटर-पुणे द्वारा एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री उपेंद्र कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 21.06.2025 को क्षे. का., जालंधर द्वारा एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री राजेंद्र कुमार भगत, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 25.06.2025 को क्षे. का., बरेली द्वारा एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री बृजेश कुमार तिवारी, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 19.06.2025 को क्षे. का., बेंगलूरु - दक्षिण में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 05.06.2025 को क्षे. का., मैसूरु द्वारा आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ श्री एस. जी. राज कुमार, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री शिव कुमार आर, उप क्षेत्र ।

दिनांक 03.06.2025 को क्षे. का., त्रिवेंद्रम द्वारा उप शाखा प्रमुखों के लिए आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ श्री नरेश कुमार वाई, क्षेत्र प्रमुख, श्री दीपक चार्ली, उप क्षेत्रीय प्रमुख, मुख्य अतिथि श्री षोजो लोबो, सदस्य सचिव नराकास त्रिवेंद्रम (बैंक) तथा श्री राजेश के, वरिष्ठ प्रबंधक(राभा)।

दिनांक 06.06.2025 को क्षे. का., बठिंडा में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री लीला राम गुर्जर, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

दिनांक 22.05.2025, को क्षे. का., पटना में एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री मुकेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया।

केंद्रीय कार्यालय के तत्वावधान में
विभिन्न केंद्रों में आयोजित तीन दिवसीय
कम्प्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला

दिनांक 15.04.2025 से 17.04.2025 स्थान – यूबीकेसी

दिनांक 28.04.2025 से 30.04.2025 स्थान – भुवनेश्वर

दिनांक 15.04.2025 से 17.04.2025 स्थान – गुरुग्राम

दिनांक 15.04.2025 से 17.04.2025 स्थान – हैदराबाद

दिनांक 15.04.2025 से 17.04.2025 स्थान – भोपाल

दिनांक 19.06.2025 से 21.06.2025 स्थान – मंगलूरु

दिनांक 15.04.2025 से 17.04.2025 स्थान – लखनऊ

दिनांक 15.04.2025 से 17.04.2025 स्थान – विशाखपट्टणम

दिनांक 15.04.2025 से 17.04.2025 स्थान- मुंबई

आपकी नज़र में

यूनियन सृजन" यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका की नवीनतम कड़ी (वर्ष 10, अंक 1) का अवलोकन करते हुए यह हर्ष की बात है कि पत्रिका में समाहित रचनाएँ – कविताएँ, लेख, संस्मरण, और बैंक कर्मचारियों की साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ – न केवल भाषा के प्रति प्रेम को दर्शाती हैं, बल्कि संगठनात्मक संस्कृति में हिंदी की सशक्त उपस्थिति को भी रेखांकित करती हैं।

इस पत्रिका के विशेष सराहनीय योग्य बिंदु : विषयों की विविधता और प्रस्तुति में ताजगी,बैंक कर्मचारियों की रचनात्मकता को मंच देने की प्रतिबद्धता एवं राजभाषा नीति के प्रभावी अनुपालन की झलक है।

कुल मिलाकर "यूनियन सृजन" न केवल एक साहित्यिक पत्रिका है, बल्कि यह बैंक के कर्मचारियों की रचनात्मक ऊर्जा और हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम भी है। इसके आगामी अंकों की प्रतीक्षा रहेगी।

योगेन्द्र कुमार पासवान
महाप्रबंधक (मानव संसाधन), सेल, सी सी एस ओ, धनबाद

आपके कार्यालय की पत्रिका "यूनियन सृजन" (जनवरी-मार्च 2025 अंक) अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद !

अंक सुंदर और पठनीय सामग्री समेटे हुए है। यूनियन सृजन की सुसज्जित साज-सज्जा जहां सहज ही ध्यान आकर्षित करती है वहीं इसमें चयनित लेख आलेख इसे एक स्तरीय पत्रिका की श्रेणी में ले जाते हैं। प्रबंध निदेशक एवं कार्यपालक निदेशकों के प्रेरक संदेशों से संगठनात्मक सोच, भविष्य की रणनीतियों और विकास का स्पष्ट दिशा-निर्देशन प्राप्त होता है।

पत्रिका की कविता "चतुर मशीन और भोला इंसान" गुनगुनाने लायक और नए भावों से सजी सुंदर कविता है और कविता "दहलीज़" मन मोह लेती है कुल मिलाकर सभी कविताएं स्तरीय व सामयिक विषयों को छूती है । "हिंदी का महत्व", "भारतीय अर्थव्यवस्था पर टैरिफ का प्रभाव", "साइबर सुरक्षा जागरुकता" जैसे लेख सामयिक और शोधपरक हैं। राजभाषा गतिविधियों की तस्वीरें व विवरण यह दशति हैं कि बैंक न केवल व्यवसायिक उत्कृष्टता बल्कि भाषायी संवेदनशीलता में भी अग्रणी है। "मैराथन" श्रमसाध्य लेख की प्रशंसा शब्दों में नहीं की जा सकती, इसकी भावनाओं को केवल भीतर तक महसूस किया जा सकता है। पत्रिका में उल्लेखित सभी रचनाएं उम्दा है और पठनीय है। पत्रिका की प्रस्तुति, भाषा की शुद्धता, विषयों का चयन और विविधता प्रशंसनीय है। यह पत्रिका न केवल सूचना का माध्यम है, बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मकता को भी मंच प्रदान करती है

आप जिस मेहनत और समर्पण के साथ पत्रिका को प्रकाशित करते हैं, वह वास्तव में सराहनीय है।

नितेश कुमार सिन्हा
महाप्रबंधक, इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

आपकी तिमाही पत्रिका 'यूनियन सृजन की प्रति हमें प्राप्त हुई।
एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

'यूनियन सृजन' पत्रिका के इस अंक में विभिन्न विषयों पर सामयिक लेखों को समाहित किया गया है।

'यूनियन सृजन' पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सृजनात्मक लेखों हेतु रचनाकारों को अनंत शुभकामनाएँ एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।
आगामी अंकों हेतु अशेष शुभकामनाएँ,

डॉ. हेमलता
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.), यूको बैंक

"यूनियन सृजन" पत्रिका का जनवरी-मार्च 2025 का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक की विषयवस्तु, प्रस्तुति तथा विविध लेखनी से संबंधित समस्त सामग्री अत्यंत सराहनीय एवं पठनीय है। पत्रिका की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह न केवल जानकारी देती है, बल्कि पाठकों में सोच और अभिव्यक्ति की प्रेरणा भी उत्पन्न करती है।

विशेष रूप से डार्क पैटर्न, सायबर सुरक्षा जागरूकता एवं कृषि क्षेत्र में ड्रोन तकनीक का उपयोग जैसे लेख वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक हैं।

काव्य रचनाएं तथा यात्रा वृत्तांत जैसे रचनात्मक अंशों ने पत्रिका को साहित्यिक संवेदना से समृद्ध किया है।

निस्संदेह "यूनियन सृजन" न केवल हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार का प्रभावी मंच है, अपितु यह कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने वाला एक प्रेरणादायी प्रयास भी है। इस पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

जय नारायण
अध्यक्ष, नराकास (बैंक, वि सं) नागपुर

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह पत्रिका "यूनियन सृजन" का 10वाँ अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम उक्त पत्रिका के सफल प्रकाशन पर राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई के समस्त अधिकारी गण एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका में कार्यालय की विविध गतिविधियों, हिंदी पखवाड़ा एवं राजभाषा कार्यशाला के आयोजन संबंधी चित्रों से पता चलता है कि आपके क्षेत्र में राजभाषा के प्रति व्यापक जागरूकता है। साथ ही गत वर्ष में आपके कार्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को बड़े ही सुंदर एवं आकर्षक ढंग से चित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका में प्रकाशित विविध विषयों से संबद्ध काव्य एवं लेख आदि को पढ़कर नई उर्जा और उत्साह का संचार हुआ। समग्र रूप में आपकी पत्रिका उत्तम श्रेणी की है। पत्रिका प्रकाशन पर पुनः बधाई एवं आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएँ।

शंकर कनोजिया
सहायक निदेशक (राजभाषा) राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी, नागपुर

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी का निरीक्षण - दि. 23.04.2025

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के उपाक्ष्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब के कर-कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री अभिनव भट्ट, क्षेत्र प्रमुख, गुवाहाटी। साथ हैं श्री गिरीश चंद्र जोशी, महाप्रबंधक (मा. सं. एवं रा.भा.), श्री लोकनाथ साहू, अंचल प्रमुख, कोलकाता, श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.), श्री एंथनी बारा, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.), श्री नन्दन शर्मा, प्रबंधक (रा.भा.) तथा श्री धर्मबीर, उप निदेशक (रा.भा.), वित्तीय सेवाएं विभाग ।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून का निरीक्षण - दि. 16.06.2025

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के संयोजक श्री श्रीरंग आप्पा बारणे के कर-कमलों से निरीक्षण संबंधी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री मनोहर सिंह, क्षेत्र प्रमुख, देहरादून। साथ हैं श्री गिरीश चंद्र जोशी, महाप्रबंधक (मा. सं. एवं रा.भा.), सुश्री अर्चना शुक्ला, अंचल प्रमुख, मेरठ, श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक(रा.भा.), श्री विक्रम सिंह चौहान, प्रबंधक(रा.भा.) तथा श्री धर्मबीर, उप निदेशक (रा.भा.), वित्तीय सेवाएं विभाग।

RNI No. MAH HIN/2016/68433

निःशुल्क वितरण हेतु

स्वातंत्र्य ज्योत, पोर्टब्लेयर
ए. शारदा मूर्ती
अं.का., विशाखपट्टणम